सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

धन्वंतरि त्रयोदशी एवं धनतेरस की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 03, अंक 221, नई दिल्ली, शनिवार 18 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 दिल्ली में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के हालिया संशोधन...

06 बीमार भविष्य की नींव

08 छह महीने बाद कोल्हान कमिश्नरी को मिला आयुक्त

दिवाली पूजन निर्णय

ज्योतिषाचार्य हेत राम शास्त्री
684 सेक्टर 10
ब्लू बेल्ल स्कूल के समीप
गुडगाँव – 122001 हरियाणा

गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक अमावस्या दो दिन होने से महालक्ष्मी पूजन सम्बन्धी संशय बना हुआ है। प्रदोषव्यापिनी (सूर्यास्त के बाद त्रिमुहूर्त) कार्तिक अमावस्या के दिन ही दीपावली मनाने की शास्त्राज्ञा है। इस वर्ष 20 अक्टूबर के दिन कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी/नरक चतुर्दशी तिथि का समाप्ति काल 03:45 PM है। अतः चतुर्दशी समाप्ति के साथ ही कार्तिक अमावस्या शुरू होकर अगले दिन 21 अक्टूबर को 05:55 PM तक व्याप्त है अतः स्पष्ट है की 21 अक्टूबर को प्रदोषकाल में अमावस्या तिथि की व्याप्ति कम समय के लिए है। धर्मसिन्धु, तिथीनिर्णय, पुरुषार्थ-चिंतामणि, तिथितत्व, निर्णयसिन्धु आदि ग्रंथो में दिए गे शास्त्रवचनों के अनुसार दोनों दिन प्रदोषकाल में अमावस्या के व्याप्ति कम या अधिक होने पर दूसरे दिन ही अर्थात सूर्योदय से सूर्यास्त (प्रदोषव्यापिनी) वाली अमावस्या के दिन लक्ष्मीपूजन करना शास्त्रसम्मत होगा।

हम बचपन से किताबों में पढ़ते आए हैं की दिवाली कार्तिक मॉस की अमावस्या की रात को मनाई जाती है , अतः कार्तिक मॉस की अमावस्या तो केवल 20 की रात को ही है , 21 की रात को नहीं। मेरा मानना है की त्यौहार केवल सर्वसम्मति तथा क्षेत्र में प्रचलित दिवस पर ही मनाना आनंदित करता है। बेशक शास्त्र लक्ष्मीपूजन 21 अक्तूबर को ही करने की आज्ञा देता है परन्तु सर्वत्र यही माना जा रहा है की दिवाली 20 अक्तूबर को ही मनाई जायेगी अतः धर्मनिष्ठ लोग उचित

निर्णय लेते हुवे अपने विवेकानुसार दिवाली पूजन करें।

फिर भी जो धर्मनिष्ट लोग शास्त्रानुसार 21 अक्तूबर को दिवाली मानना चाहें वो सूर्यास्त से आधा घंटा पहले से सूर्यास्त के बाद लगभग 2 घंटे 24 मिनट तक की कालावधि में निस्संदेह होकर लक्ष्मीपूजन कर सकते हैं।

लक्ष्मी पूजन समय :

20 अक्तूबर 2025 को सायं 07 बजकर 08 मिनट से 08 बजकर 18 मिनट तक (स्थिर लग्न में)

व्यवसायी लोगों के लिए लक्ष्मी पूजन शुभ मुहूर्त:

03:44 PM से 05:46 PM तक

पश्चिम विहार रेडिसन होटल के सामने धंसी सड़क पर प्रशासन मौन

नवदीप सिंह

नई दिल्ली । दिल्ली के पश्चिम विहार इलाके में रेडिशन ब्लू होटल के सामने मेन रोड पर बीते तीन दिनों से सड़क धंसी हुई है, लेकिन प्रशासन की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई।

सूत्रों के मुताबिक, डीजेबी की क्षतिग्रस्त सीवर लाइन के कारण सड़क पर एक बड़ा और गहरा गड्ढा बन गया है। इस वजह से भेरा एन्क्लेव चौक से लेकर मेन रोड तक यातायात पूरी तरह प्रभावित है।

लोग घंटों जाम में फंसे हैं, और ट्रैफिक पुलिस की अनुपस्थिति से हालात और बिगड़ गए हैं।

तीन दिन बाद भी किसी अधिकारी ने इस गड्ढे की मरम्मत के लिए कदम नहीं उठाया।"

खुश खबरी..... खुश खबरी : राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से ...

प्रिय साथियों,

हमें यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस(AIMTC) के नेतृत्व और दिल्ली-एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच एवं ncr के समस्त संगठनों के सहयोग से,हमें दिल्ली में CAQM द्वारा प्रस्तावित BS VI मानक से नीचे के वाहनों पर 1 नवंबर से दिल्ली में एंट्री पर बैन से फिलहाल राहत मिलनी अब तकरीबन तय है।

दिनांक 14अक्टूबर को हमारी पर्यावरण मंत्री S.manjinder Singh Sirsa जी से इस विषय में हुई बैठक में हमें मंत्री जी ने caqm के इस ऑर्डर को फिलहाल स्थगित करने का भरोसा व वायदा दे दिया था, उसके पश्चात आज उन्होंने caqm के चेयरमैन व उच्चाधिकारियों के साथ बैठक कर अपने किए हुए वायदे पर मोहर लगा दी है। इसके official orders कल तक आने की संभावना है।

हम श्री मनजिंदर सिंह सिरसा जी, जो हमारे दिल्ली के माननीय पर्यावरण मंत्री हैं, का सहृदय धन्यवाद करते हैं जिनके सहयोग से हमें आज यह कामयाबी प्राप्त हुई । उन्होंने ट्रांसपोर्ट

व्यवसाय हित में सार्थक प्रयास किया जिसके लिए हम उनका अत्यंत आभार व्यक्त करते हैं।

इसके अतिरिक्त हम अपनी ट्रांसपोर्ट बिरादरी की तरफ से *S. Gurinder pal Singh (Raju ji) Former president AIMTC तथा Shyam sunder जी को इस मुहिम में उनके द्वारा अथक प्रयासों एवं सहयोग के लिए सहृदय धन्यवाद करते हैं।

साथियों, यह सब आपके अटूट सहयोग और ऑल इंडिया मोटर ट्रांसपोर्ट कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व में आपके भरोसे का परिणाम है कि आज हमें यह कामयाबी हासिल हुई है। आप सभी इस बधाई के पात्र हैं और यह एक तरह से दिवाली का तोहफा है कि हमारे निरंतर प्रयत्नों द्वारा इस प्रस्तावित बैन को 1 साल के लिए सरकार को आगे बढ़ाना पड़ा।

सबसे बड़ी बात अब हमें अगले साल तक अपनी रणनीति व कोर्ट में इस विषय पर अपनी आवाज उठाने का पर्याप्त समय मिल गया है।

आप सभी को बहुत बहुत बधाई।

डॉ हरीश सभरवाल
राष्ट्रीय अध्यक्ष – एवं Team – AIMTC
& CC to...
श्याम सुंदर
संयोजक
(दिल्ली NCR tpt एकता मंच)

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

SCAN ME

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

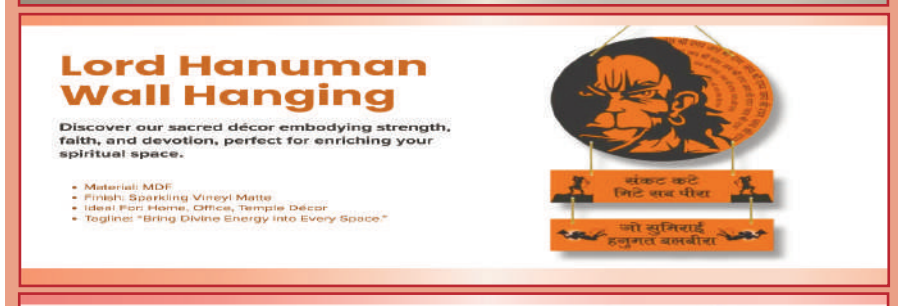

धनतेरस आज

दीपावली पर्व की शुरुआत धनतेरस से होती है। इस दिन सोना, चांदी, बर्तन और नई वस्तुएं खरीदना बहुत शुभ होता है, क्योंकि माना जाता है कि ऐसा करने से साल भर घर में बरकत बनी रहती है। यह पर्व आयुर्वेद के देवता भगवान धन्वंतरि, मां लक्ष्मी और भगवान कुबेर को समर्पित है।

सोने-चांदी की खरीददारी का शुभ मुहूर्त

==========

धनतेरस के दिन सोना-चांदी खरीदना के लिए सबसे अच्छा समय अमृत काल माना जा रहा है, जो सुबह 08 बजकर 50 मिनट से 10 बजकर 33 मिनट तक रहेगा। इस दौरान सोना-चांदी खरीदने से धन में अपार वृद्धि होती है।

पूजन मुहूर्त

==========

धनतेरस के दिन पूजन के लिए शुभ मुहूर्त प्रदोष काल यानी 07 बजकर 16 मिनट से लेकर 08 बजकर 20 मिनट तक है। इस दौरान आप भगवान धन्वंतरि की पूजा-अर्चना कर सकते हैं।

शुभ मुहूर्त

==========

अभिजित मुहूर्त दोपहर 12 बजकर 01 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 48 मिनट तक रहेगा। लाभ-उन्नति चौघड़िया मुहूर्त दोपहर 01 बजकर 51 मिनट से लेकर दोपहर 03 बजकर 18 मिनट तक रहेगा। वहीं, प्रदोष काल शाम 06 बजकर 11 मिनट से लेकर रात 08 बजकर 41 मिनट तक रहेगा। इस दौरान आप खरीदारी से लेकर पूजा-पाठ तक कोई भी शुभ काम कर सकते हैं।

धनतेरस की पूजा विधि

==========

घर और पूजा स्थल को अच्छी तरह साफ करें।

रंगोली बनाएं और दीपक जलाएं।

पूजा स्थान पर भगवान धन्वंतरि, देवी लक्ष्मी, भगवान कुबेर और गणेश जी की प्रतिमा स्थापित करें।

हाथ में जल लेकर पूजा का संकल्प लें।

सबसे पहले गणेश जी का पूजन करें।

फिर देवी लक्ष्मी, कुबेर जी और धन्वंतरि जी को फल, फूल, मिठाई, हल्दी, कुमकुम और अक्षत अर्पित करें।

इस दिन खरीदी गई नई वस्तु को भी पूजा में रखें और उनकी पूजा करें।

अंत में आरती करके शंखनाद करें।

शाम के समय घर के मुख्य द्वार पर, दक्षिण दिशा की ओर मुख करके, सरसों के तेल का चार मुख वाला यम दीपक जलाएं।

अपने घर के कोने-कोने को रोशन करें।

धनतेरस का महत्व

==========

पौराणिक कथा के अनुसार, इसी दिन समुद्र मंथन के दौरान भगवान धन्वंतरि प्रकट हुए थे। इसलिए इस दिन उनकी पूजा से अच्छे स्वास्थ्य का आशीर्वाद मिलता है। कहा जाता है कि इस दिन देवी लक्ष्मी और भगवान कुबेर की पूजा करने से धन-संपत्ति में तेरह गुना वृद्धि होती है। इसलिए इस दिन सोना-चांदी, पीतल या तांबे के बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इससे घर में सौभाग्य और सकारात्मक ऊर्जा आती है।

हमारे संस्कारों में तेजस्विता नहीं है हम अपनी गति को कैसे पहचान सकतें हैं ?

जब एक परम विद्वान, वेदपाठी, नियमी, संयमी ब्राह्मण अजामिल मात्र एक दृश्य देखकर, जिसमें एक वेश्या किसी पुरुष के साथ थी, पतन के शीर्ष पर आ गया। ऐसे धर्मात्मा अजामिल की इस एक घटना के परिणामस्वरूप, पापात्मा की मिसाल दी जाती है। केवल देखने मात्र से दुर्गुण प्रवेश हो गया और धीरे धीरे वह उसमें संलिप्त होने लगा और अपनी समस्त साधना नष्ट करके घोर पतित हो गया। तो विचारिए आज इस तरह के अनेक दृश्य-दर्शन बिल्कुल आम/सामान्य हैं तो हम लोगों के इन्द्रिय, मन, विचार और चित्त के तेज का कितना पतन हो चुका होगा? आजकल के नवयुवक जाने कितने तेजहीन, साध्यविहीन हो चुके होंगें? लेकिन यह सब हमें पता ही नहीं चलता क्योंकि हमारे पास अपनी-अपनी तेजस्विता को मापने वाला तराजू/तुला/मापक ही नहीं है। अभी तो सब शारीरिक सुंदरता और स्वास्थ्य को ही तेजस्विता समझते हैं। उसके लिए दिन-रात श्रम हो रहा है। न तो किसी की आंखों में वह तेज है, न वाणी में, न विचारों में, न ही संकल्प में वह शक्ति है। आज इन सभी का अभाव है। पूर्व में सुना था कि यदि कोई ब्राह्मण गुस्से में जल को हाथ में लेकर संकल्प के साथ किसी पर छिड़क देता था तो उसका संकल्प पूरा होता था क्योंकि वह साधना से इतनी शक्ति अर्जित कर लेता था कि साधना की शक्ति से ही वह अपने संकल्प को फलीभूत कर लेता था। संकल्पित व्यक्ति के आशीष भी तुरन्त/अवश्य फलित होते थे। लेकिन आज किसी का संकल्प फलीभूत नहीं हो पाता। यह संकल्प फलीभूत होना कोई कल्पना नहीं है यह ऐसे ही है जैसे हम रेडियो सिग्नल/तरंगों को नहीं देख पाते लेकिन वह काम करतीं हैं। जबसे जीवन में नियमविहीनता/ व्याभिचारिता/ स्वछंदता/ संयमित जीवन का अभाव हो गया तब से हमारी ओज पूर्ण शक्तियां/ऊर्जायें व्यर्थ होने लगीं। ध्यान रहे कि यदि हम अपनी तेजस्विता को अपनायेंगे, अपने संकल्पशक्ति/ साधनाशक्ति/ मनस्विता का विकास करेंगे तो दरिद्रता में भी तेजस्विता समृद्ध हो सकती है। पहले ब्राह्मण, दरिद्रता के बावजूद, इसी तेजस्विता समृद्धि के कारण पूजनीय हुआ करते थे। आज भी चाहें तो हम अपने ओज/तेजस्विता को समृद्ध/उन्नत कर सकतें हैं।

भगवान धन्वंतरि की दिव्य परंपरा

आज भी प्रत्येक वैद्य और चिकित्सक को प्रेरित करती है,

डॉ मुश्ताक अहमद शाह.

भारतीय संस्कृति में जब भी स्वास्थ्य, औषधि और जीवन-संरक्षण की चर्चा होती है, वहाँ भगवान धन्वंतरी का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। समुद्र मंथन के समय जब देवता और दानव अमृत की खोज में संलग्न थे, तब सागर की उदरगर्भा से एक दिव्य पुरुष प्रकट हुए जिनके करकमलों में अमृत कलश था ,यही भगवान धन्वंतरी थे। उन्हें आयुर्वेद का जनक, देव वैद्य और सम्पूर्ण चिकित्साशास्त्र का अधिष्ठाता माना गया है।वे दिव्य रूप में भगवान विष्णु के अवतार हैं और आयुर्वेद शास्त्र का मूल सूत्र उनके द्वारा ही प्रदान किया गया। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अन्य आयुर्वेदिक ग्रंथों का आद्य ज्ञान उन्हीं के मानस से प्रवाहित हुआ। सुश्रुत जैसे महर्षि ने चिकित्सा और शल्यकर्म का जो विज्ञान विकसित किया, उसका मूल स्रोत भी धन्वंतरी परंपरा ही है। इसीलिए उन्हें चिकित्सकों का गुरु, स्वास्थ्य का संरक्षक और जीवन-संतुलन का देवता कहा जाता है।धन्वंतरी जयंती का पर्व कार्तिक मास की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाता है, जिसे धनतेरस भी कहा जाता है। इस दिन आयुर्वेदाचार्य, वैद्य, चिकित्सक और स्वास्थ्यकर्मी भगवान धन्वंतरी की प्रतिमा की पूजा करते हैं और आरोग्य, दीर्घायु तथा रोग-मुक्त समाज की कामना करते हैं। यह दिन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और आयुर्वेद के पुनरुत्थान का प्रतीक भी है।भगवान धन्वंतरी की उपासना का वास्तविक अर्थ केवल मंत्रोच्चारण या दीपाराधना नहीं, बल्कि स्वास्थ्य को धर्म का उपांग समझने की चेतना है। आयुर्वेद कहता है — "सुदीर्घं जीवितं एव मनुष्यस्य परमं लक्ष्यं" अर्थात दीर्घ और स्वस्थ जीवन ही परम लक्ष्य है। जब समाज अपने शरीर, मन और पर्यावरण के संतुलन को समझता है, तभी धन्वंतरी का आशीर्वाद साकार होता है।आज जब आधुनिक चिकित्सा और वैकल्पिक उपचार प्रणालियाँ साथ-साथ चल रही हैं, तब भगवान धन्वंतरी के सिद्धांत पहले से अधिक प्रासंगिक हैं,प्राकृतिक आहार, समय-संतुलित जीवन, औषधियों में विश्वास और करुणामय उपचार। इसी मार्ग से चिकित्सा केवल उपचार नहीं, बल्कि साधना बन जाती है।भगवान धन्वंतरी की जयंती हमें यह स्मरण कराती है कि एक चिकित्सक केवल शरीर का वैद्य नहीं होता, वह प्राणों का संरक्षक और समाज का हितकारी भी होता है। धन्वंतरी की दिव्य परंपरा आज भी प्रत्येक वैद्य और चिकित्सक को प्रेरित करती है कि वे सेवा, सहानुभूति और ज्ञान के संगम से जनकल्याण का पथ प्रशस्त करें।

हमारे वेदों के अनुसार प्राकृतिक उपायों से निरोगी एवं स्वस्थ रहने के 15 नियम...

1- खाना खाने के 1.30 घंटे बाद पानी पीना है।

2- पानी घूँट घूँट करके पीना है जिस से अपनी मुँह की लार पानी के साथ मिलकर पेट में जा सके, पेट में एसिड बनता है और मुँह में क्षार, दोनो पेट में बराबर मिल जाए तो कोई रोग पास नहीं आएगा।

3- पानी कभी भी ठंडा (फ्रीज़ का) नहीं पीना है।

4- सुबह उठते ही बिना कुल्ला किए तीन ग्लास पानी पीना है, रात भर जो अपने मुँह में लार है वो अमूल्य है उसको पेट में ही जाना ही चाहिए।

5- खाना, जितने आपके मुँह में दाँत है उतनी बार ही चबाना है।

6- खाना ज़मीन में पलोथी मुद्रा या उखड़ूँ बैठकर ही भोजन करना चाहिये।

7- खाने के मेन्यू में एक दूसरे के विरोधी भोजन एक साथ ना करे जैसे दूध के साथ दही, प्याज़ के साथ दूध, दही के साथ उड़द दल।

8- समुद्री नमक की जगह सेंधा नमक या काला नमक खाना चाहिए।

9- रिफाइंड तेल और डालडा ज़हर है इसकी जगह अपने इलाक़े के अनुसार सरसों, तिल, मूँगफली, नारियल का तेल उपयोग में लाए। सोयाबीन के कोई भी प्रोडक्ट खाने में ना ले इसके प्रोडक्ट को केवल सुअर पचा सकते है, आदमी में इसके पचाने के एंज़िम नहीं बनते है।

10- दोपहर के भोजन के बाद कम से कम 30 मिनट आराम करना चाहिए और शाम के भोजन बाद 500 क़दम पैदल चलना चाहिए।

11- घर में चीनी (शुगर) का उपयोग नहीं होना चाहिए क्योंकि चीनी को सफ़ेद करने में 17 तरह के ज़हर (केमिकल) मिलाने पड़ते है इसकी जगह गुड़ का उपयोग करना चाहिए और आजकल गुड बनाने में कॉस्टिक सोडा (ज़हर) मिलाकर गुड़ को सफ़ेद किया जाता है इसलिए सफ़ेद गुड़ ना खाए। प्राकृतिक गुड़ ही खाये। और प्राकृतिक गुड़ चोकलेट कलर का होता है।

12- सोते समय आपका सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ़ होना चाहिए।

13- घर में कोई भी अलूमिनियम के बर्तन, कुकर नहीं होना चाहिए। हमारे बर्तन मिट्टी, पीतल लोहा, काँसा के होने चाहिए।

14- दोपहर का भोजन 11 बजे तक अवम शाम का भोजन सूर्यास्त तक हो जाना चाहिए।

15- सुबह भोर के समय तक आपको देशी गाय के दूध से बनी छाछ (सेंधा नमक और ज़ीरा बिना भुना हुआ मिलाकर) पीना चाहिए।

यदि आपने ये नियम अपने जीवन में लागू कर लिए तो आपको डॉक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और देश की करोड़ो की बचत होगी।

यदि आप बीमार है तो इन नियमों का पालन करने से आपके शरीर के सभी रोग (बीपी, शुगर) अगले 3 माह से लेकर 12 माह में ख़त्म हो सकती है और जो रोग बच जाएँगे उनको हम आयुर्वेद एवं प्राकृतिक के माध्यम से समाप्त कर देंगे।

समस्या रहित जीवन नहीं समाधान

अपने जीवन पर नियंत्रण बनाये रखना हमारे अपने व्यवहार पर टिका हुआ रहता है। हम सभी अपनी किसी ना किसी सांसारिक समस्या से घिरे हुए रहते हैं और स्वयं ही अपने जीवन मे संघर्ष करते रहते है।

किन्तु अपने जीवन मे हम कितने सफल हो पाएंगे, यह हमारी समस्याओं पर नही, अपितु उन समस्याओं के प्रति हमारी प्रतिबद्धता पर निर्भर करता है। हम अपनी जीवन शैली को कैसा बनाते हैं, अपनी सोच,विचार-धारा को कैसा रखते है? अपने परिवार व समाज के प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा है, हम घटने वाली हर घटना के प्रति कितने संवेदनशील हैं...यही सब मिलकर हमारे जीवन की गुणवत्ता तय करते हैं।

सारांश में, हम किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं, यह स्वयं हम पर, हमारी मानसिकता पर व हमारे वैचारिक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है।इसलिए सदैव आत्मविश्वास, दृढ़ता के साथ सकारात्मक चिंतन करते हुए हर उलझन को हल करने के प्रयत्न मे लगे रहना चाहिए।

अपने भविष्य की अनिश्चितता के असमंजस मे रहने के पर्याय, हम अपने जीवन को प्रगतिशील विचारो और पुरुषार्थ द्वारा सही दिशा दे सकते है।

अपने विचार,व्यवहार को संतुलित साक्षेप बनाये रखने में ही हमारी कार्य सिद्धि निहित है।

!!!...जीवन पथ पर अपने व्यवहार में सही 'मनसा वाचा कर्मणा' मार्गदर्शन देते रहे...!!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

आज से शुरू होने वाला दिवाली का शुभ पर्व आपके जीवन में

एकादशी से जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में प्राथमिकता लाए,

वाघबारस से प्रगति के द्वार खुलें,

धनतेरस से शुद्ध धन प्राप्त हो,

काली चौदस से जीवन में कलह दूर हो,

दिवाली से दिल में मानवता का दीप प्रज्वलित हो,

नया साल से जीवन नवपल्लवित हो,

भाई दूज से भाई-बहन का प्रेम बढ़े,

तीज से शक्ति बढ़े,

चौथ से चतुराई बढ़े,

लाभ पंचमी से पांच परमेश्वरों की परम कृपा बरसे जिससे पूरा वर्ष सुख, शांति, समृद्धि, सहयोग और सुयोग से भरा हो, इसके लिए प्रार्थना सहित हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं।

दीपावली पर समाजसेवियों की देशवासियों से भावुक अपील: जियो और जीने दो - शांति, सद्भाव और भाईचारे से सभी पर्व मनाएं

ऐसे में, समाज के बुद्धिजीवियों से अपील है कि वे अपने आसपास अराजकता फैलाने वाले तत्वों को पहचानें, उन्हें समझाएं, और सभी पर्व शांति, सद्भाव और भाईचारे से मनाने का संदेश दें

उत्तर प्रदेश, संजय साग़र सिंह। रोशनी के पर्व दीपावली के अवसर पर देश भर में जहां एक ओर ख़ुशियों का वातावरण है, वहीं कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा शांति भंग करने की आशंका को देखते हुए समाजसेवियों ने देश-प्रदेशवासियों से एक भावनात्मक और अत्यंत ज़रूरी अपील जारी की है।

त्योहार जोड़ते हैं, तोड़ते नहीं – सभी पर्व शांति, सद्भाव और आपसी एकता का संदेश देते हैं : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

सभी त्यौहारों पर अराजक तत्वों से सावधान रहने की अपील करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना का कहना है कि दीपावली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और परस्पर सहयोग का प्रतीक है। त्योहार जोड़ते हैं, तोड़ते नहीं - सभी पर्व शांति, सद्भाव और आपसी एकता से मनाने का संदेश देते हैं। मिट्टी का दीपक किसी कुम्हार की मेहनत है, तो उसमें भरा तेल किसी किसान का पसीना हैं। मिठाइयाँ किसी हलवाई की रचना हैं, तो सजावट किसी स्थानीय दुकानदार की आजीविका हैं। यह पर्व उन अनगिनत हाथों की मेहनत का उत्सव है जो मिलकर हमारी दीवाली को रौशन करते हैं। लेक़नि कुछ स्वार्थी और संकीर्ण मानसिकता वाले लोग, देश की शांति और एकता को नुकसान पहुँचाने के लिए त्योहारों के अवसर पर उकसाने वाली गतिविधियाँ करते हैं। देश के पैसे का ग़लत उपयोग करते हैं, इन्हें शांति पसंद नहीं हैं। इसीलिए ऐसे तत्व त्योहारों में सर्व समाज में वैमनस्य फैलाने के लिए युवाओं को गुमराह करने की कोशिश करते हैं। इन दंगाई और अराजक मानसिकता वालों की असली पहचान यही है कि वे ख़ुद कभी भीतर से ख़ुश नहीं रहते और दूसरों की खुशियों से भी बैर रखते हैं। उनका मकसद सिर्फ़ शांतिप्रिय भारत देश में नकारात्मकता और अराजकता फैलाना होता है।देशहित में हमारी सभी विनम्र अपील हैं कि ऐसे तत्वों से सतर्क और साबधान रहें और हसीं ख़ुशी से सभी त्यौहार मनाएं।

अपने बच्चों को पढ़ाएं लिखाएं डॉ बाबा साहब और डॉ क़लाम जैसा क़ाबिल एवं योग्य बनाएं - जियो और जीने दो का मूल मंत्र अपनाएं : वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान

इस अपील में वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ खान ने

कहा कि देशहित में, सबसे विनम्र आग्रह है कि अच्छा सोचें, सकारात्मक रहें, स्वयं भी ख़ुश रहें और दूसरों को भी ख़ुश रहने दें। अपने बच्चों को पढ़ाएं लिखाएं डॉ बाबा साहब और डॉ कलाम जैसा क़ाबिल एवं योग्य बनाएं - जियो और जीने दो का मूल मंत्र अपनाएं, किसी के बहकाबे या भड़काने में ना आएं और कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपका और आपके परिवार का नाम खराब या देश एवं सर्व समाज में अशांति फैले अथवा देश की छवि धूमिल हो। ऐसे में, समाज के बुद्धिजीवियों से अपील है कि वे अपने आसपास अराजकता फैलाने वाले तत्वों को पहचानें, उन्हें समझाएं और सभी पर्व शांति, सद्भाव और भाईचारे से मनाने का संदेश दें। इसलिए सभी त्योहारों को शांति, सद्भाव, भाईचारे और खुशहाली के साथ मनाएं।

त्योहारों को प्रेम, शांति, सद्भाव, और खुशहाली के साथ मनाएं यही सच्ची देशभक्ति और इंसानियत है : सावन चौहान

समाजसेवी एवं फ़िल्म निर्माता सावन चौहान ने इस अवसर पर कहा कि त्योहार आत्मचिंतन और आत्मशुद्धि का अवसर होते हैं। आइए, इस दीपावली अपने मन के अंधकार को दूर करें। किसी भी प्रकार की अराजकता, हिंसा या भड़कावे से दूर रहें और देश की एकता और अखंडता में अपना योगदान दें। हमारी सभी से अपील हैं निवेदन हैं कि देश, सर्व समाज और अपने परिवार के भले के लिए सदैव सकारात्मक सोचें। प्रेम, शांति, एकता और सद्भाव से रहें। किसी दूसरों के बहकावे में आकर कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपके जीवन में दुख और कठिनाइयाँ आएं। ख़ुश रहिए, और दूसरों को भी खुश रहने दीजिए। त्योहारों को शांति, सद्भाव और खुशहाली के साथ मनाएं यही सच्ची देशभक्ति और इंसानियत है।

सोचिए, कहीं आप किसी के राजनीतिक स्वार्थ का शिकार तो नहीं? - समाजसेवी पंकज जैन

समाजसेवी पंकज जैन ने स्पष्ट किया कि ये लोग राष्ट्रवादी डॉ अम्बेडकर जी के संविधान, क़ानून और सामाजिक मूल्यों का सम्मान नहीं करते। भावनाओं में बहकर यदि कोई व्यक्ति अराजक तत्वों की बातों में, बहकाने में, भड़काने में, आकर कानून तोड़ता है, तो इसका खामियाज़ा न सिर्फ़ उसे बल्कि उसके पूरे परिवार को भुगतना पड़ता है। देशहित और सर्व समाज हित में हमारा सभी भारतीय नागरिकों से यही अनुरोध है कि वे आत्ममंथन करें। क्या कोई उनके भोलेपन का फ़ायदा उठा रहा है? क्या वे अनजाने में किसी राजनीतिक या निजी स्वार्थ की पूर्ति का साधन बन रहे हैं? क्या यही देशभक्ति और इंसानियत है?

देशहित में जारी – ख़ुशियों भरी हो सबकी दीवाली!

दिल्ली में वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) के हालिया संशोधन और आदेश शीतकालीन प्रदूषण की तैयारी, वाहनों और औद्योगिक उत्सर्जन को नियंत्रित करने और ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) को लागू करने पर केंद्रित हैं

प्रमुख संशोधनों और आदेशों में शामिल हैं:

वाहन प्रदूषण जीवन-अंत (ईओएल) वाहनः जुलाई 2025 में, सीएक्यूएम ने दिल्ली और पाँच उच्च-घनत्व वाले एनसीआर जिलों (गुरुग्राम, फरीदाबाद, गाजियाबाद, गौतमबुद्ध नगर और सोनीपत) के ईंधन स्टेशनों पर ईओएल वाहनों (15 वर्ष से अधिक पुराने पेट्रोल वाहन और 10 वर्ष से अधिक पुराने डीजल वाहन) को ईंधन न देने के आदेश में संशोधन किया। यह 1 नवंबर, 2025 से प्रभावी हुआ।

वाणिज्यिक माल वाहनः सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बाद, सीएक्यूएम ने अपने निर्देश संख्या 88 में संशोधन किया है, जिसके तहत बीएस-VI, सीएनजी, एलएनजी और ईवी मानकों से नीचे के वाणिज्यिक माल वाहनों के दिल्ली में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया है, जो 1 नवंबर, 2025 से प्रभावी होगा। बीएस-IV वाणिज्यिक वाहनों के लिए एक अपवाद बनाया गया है, जिन्हें एक संक्रमणकालीन उपाय के रूप में 31 अक्टूबर, 2026 तक दिल्ली में प्रवेश करने की अनुमति है।

ईओएल वाहनों का परिसमापनः ईओएल वाहनों के परिसमापन से संबंधित आदेश (निर्देश संख्या 89) को अक्टूबर 2025 में स्थगित कर दिया गया था। यह सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले के मद्देनजर था जिसमें कहा गया था कि अगले आदेश तक 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों के मालिकों के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जानी चाहिए।

स्वच्छ गतिशीलताः वाहन एग्रीगेटर्स, डिलीवरी सेवाओं और ई-कॉमर्स कंपनियों के लिए स्वच्छ गतिशीलता को तेज़ करने के लिए जून 2025 में निर्देश संख्या 94 जारी किया गया था। [1, 3, 4, 5, 6]

पराली जलाना

उन्नत प्रवर्तनः अक्टूबर 2025 में, CAQM ने निर्देश संख्या 95 की पुष्टि की, जिसके तहत दिल्ली और पड़ोसी एनसीआर राज्यों के जिला मजिस्ट्रेटों को उन अधिकारियों के खिलाफ शिकायत दर्ज करने के लिए अधिकृत किया गया, जो धान की पराली जलाने को रोकने के लिए प्रभावी कार्रवाई करने में विफल रहे।

बायोमास छर्रेः जून 2025 में जारी निर्देश संख्या 92, पंजाब और हरियाणा के गैर-एनसीआर जिलों में ईंट भट्टों में धान के भूसे पर आधारित बायोमास छर्रों के उपयोग को अनिवार्य बनाता है ताकि पराली जलाने से रोका जा सके। [1, 5]

GRAP और सामान्य प्रदूषण नियंत्रण

सर्दियों की तैयारी: CAQM ने एक बैठक आयोजित की

शीतकालीन वायु प्रदूषण से निपटने के लिए GRAP और अन्य उपायों के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए 17 अक्टूबर, 2025 को एक बैठक बुलाई गई है।

निर्माण और विध्वंसः संशोधन

दिसंबर 2024 में जारी निर्देश संख्या 85, एनसीआर में निर्माण और विध्वंस गतिविधियों से होने वाले वायु प्रदूषण की रोकथाम और शमन से संबंधित था।

संशोधित GRAP: एक व्यापक रूप से संशोधित कार्यक्रम

ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (जीआरएपी) के लिए दिसंबर 2024 में आदेश जारी किया गया था। जीआरएपी आदेश समय-समय पर वर्तमान वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) के आधार पर जारी और रद्द किए जाते हैं।

आतिशबाजीः सीएक्यूएम ने अक्टूबर 2025 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश का उल्लेख किया जिसमें दिवाली के दौरान विशिष्ट परिस्थितियों और घंटों के तहत हरित पटाखों की बिक्री की अनुमति दी गई थी। [1, 2, 5, 7, 8]

प्रवीण कुमार सेठी

सामान्य पटाखे बनाम ग्रीन पटाखे

बारिश ख़त्म होते ही, ठंड की हल्की दस्तक के साथ प्रदूषण का अनचाहा आगमन भी हो चुका है। साल दर साल बीतते जा रहे हैं और प्रदूषण की समस्या से निजात ही नहीं मिल रही है, क्योंकि इसकी जड़ों तक जाने की कोशिश ही नहीं हो रही है। केवल ऊपरी तौर पर नियम बनाकर प्रदूषण जैसी गंभीर और जटिल समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता, ये बात नीति नियंता भी अच्छे से जानते हैं। मगर शायद प्रदूषण दूर करना उनके लिए जीने-मरने का सवाल कभी रहा ही नहीं। उन्हें वातानुकूलित दफ्तरों में बैठकर काम करना है, तमाम सुविधा-संपन्न घरों में रहना है, छुट्टियों पर प्रदूषण रहित पर्यटक स्थलों पर वे जाते हैं और अगर बीमार पड़ें तो सात सितारा अस्पतालों में महंगा इलाज उनके लिए उपलब्ध है। लेकिन आम आदमी प्रदूषण की मार बारह महीने झेलता है, फिर भी समझ नहीं पाता कि उसे खुश करके आखिर में उसे ही धीरे-धीरे मारने का इंतजाम किया जा रहा है।

दीपावली से पहले सुप्रीम कोर्ट ने हरित पटाखों की बिक्री और उपयोग की जो इजाज़त दी है, वो इसी धीमी मौत का एक और उदाहरण है। सुप्रीम कोर्ट को कम नुकसानदायक पटाखों को जलाने की मंजूरी इसलिए देनी पड़ी क्योंकि दीपावली अब रोशनी, रंगों और मिठास से ज्यादा उस हिन्दुत्व का त्योहार बन चुका है, जिसे अपने प्रचार के लिए कानफोड़ू शोर की जरूरत पड़ती है। न जाने किस तरह बहुतेरे हिंदुओं के दिमाग में यह बात भर दी गई कि दीपावली पर पटाखे जलाने से रोकना धर्म का अपमान है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाजपा का इस मुहिम में बड़ा योगदान रहा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दुनिया को पर्यावरण संरक्षण का ज्ञान बांटते हैं, लेकिन अपनी पार्टी के लोगों और समर्थकों को यह नहीं समझा सकते कि धर्म की राजनीति चलती रहेगी, कम से कम त्योहार को इसमें बख़्श दें। अगर आज मोदीजी लोगों से अपील करें कि वे पटाखे न जलायें, दीये, कंदील जलाकर, रंगोली सजाकर दीवाली मना लें, तो उनके अनुयायी खुशी-खुशी इस बात को मानेंगे। जब बालकनी में आकर थाली पीट सकते हैं, तो ये काम भी कर ही सकते हैं। मगर मोदी को भी ये डर है कि हिन्दुत्व के नाम पर जिन लोगों को पूरी तरह गुमराह किया जा चुका है, वे इस बात को गलत तरीके से ले कर अपनी नाराज़गी मोदी पर ही उतार सकते हैं। इसलिए भाजपा में अब पटाखों की नहीं, ग्रीन यानी हरित पटाखों की बात होती है। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सुप्रीम कोर्ट का आभार माना है कि उसने इन पटाखों के लिए मंजूरी दी।

शीर्ष अदालत ने सिर्फ नीरी (नेशनल एनवायरनमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) द्वारा प्रमाणित ग्रीन पटाखों की बिक्री और इस्तेमाल की अनुमति दी है। जो केवल 18 से 21 अक्टूबर तक के लिए दी गई है। अदालत ने साफ किया कि इस अवधि के बाद किसी भी प्रकार के पटाखों की बिक्री या इस्तेमाल पर प्रतिबंध जारी रहेगा। अगर कोई विक्रेता या निर्माता इस आदेश का उल्लंघन करता पाया गया, तो उसके खिलाफ सख़्त कानूनी कार्रवाई की जायेगी। यह आदेश भी दिया गया है कि पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मिलकर विशेष निगरानी दल गठित करें। इन टीमों का काम यह सुनिश्चित करना होगा कि सिर्फ़ प्रमाणित ग्रीन पटाखों का ही निर्माण, बिक्री और उपयोग हो रहा है। अदालत ने पर्यावरणीय प्रदूषण को नियंत्रण में रखने के लिए पटाखे फोड़ने की समय सीमा सुबह 6 बजे से 8 बजे तक और शाम 8 बजे से 10 बजे तक तय की है। इन समय सीमाओं के बाहर किसी भी प्रकार के पटाखे फोड़ना प्रतिबंधित रहेगा। यह पूरा आदेश सुनने में प्रभावशाली लगता है, लेकिन जमीन पर इसका असर शून्य बराबर होने की संभावना है। क्योंकि अभी से दिल्ली-एनसीआर में जमकर पटाखे फोड़े जा रहे हैं। अवैध तरीकों से बिक्री होने की खबरें हैं और प्रदूषण भी खतरनाक स्तर तक बढ़ चुका है।

शीर्ष अदालत ने सिर्फ नीरी (नेशनल एनवायरनमेंटल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट) द्वारा प्रमाणित ग्रीन पटाखों की बिक्री और इस्तेमाल की अनुमति दी है। जो केवल 18 से 21 अक्टूबर तक के लिए दी गई है। अदालत ने साफ किया कि इस अवधि के बाद किसी भी प्रकार के पटाखों की बिक्री या इस्तेमाल पर प्रतिबंध जारी रहेगा।

पिछले साल भी ऐसा ही आलम था और लगातार कई सालों से यही होता आया है। इसलिए ग्रीन पटाखे दिल को खुश रखने के ख़्याल से ज़्यादा और कुछ मायने नहीं रखते। अघोषित तौर पर सब इस बात को जानते हैं कि ग्रीन पटाखों का लेबल लगाकर पारंपरिक पटाखे ही बेचे जाते हैं। क्योंकि लागत में ये सस्ते पड़ते हैं। विशेष निगरानी दल बनाने से भी कुछ नहीं होगा, क्योंकि दीपावली के सामान से अटे पड़े बाजार में अब इस बात की जांच बेहद मुश्किल होगी कि वास्तव में कौन से पटाखे ग्रीन हैं और कौन से नहीं। बल्कि इस जांच के नाम पर अवैध कमाई का एक और रास्ता खुल जाए तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। साल 2018 में भी सुप्रीम कोर्ट ने पारंपरिक पटाखों पर रोक लगाकर केवल ग्रीन पटाखों को अनुमति दी थी। तभी से बाज़ार में इस किस्म के पटाखे बिक रहे हैं। लेकिन बताया जाता है कि ग्रीन पटाखों के नाम पर सामान्य पटाखों की बिक्री ही धड़ल्ले से होती है।

जानकारी के लिए बता दें कि सामान्य पटाखों में बैरियम नाइट्रेट, सल्फर, एल्युमिनियम और पोटेशियम नाइट्रेट जैसे रसायन होते हैं जो जलने पर जहरीली गैसें छोड़ते हैं। ग्रीन पटाखों में इन्हीं रसायनों की मात्रा कम रखी जाती है या कुछ जगह उनके स्थान पर कम हानिकारक यौगिकों का इस्तेमाल किया जाता है। इन्हें भारत सरकार की वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान सीएसआईआर (वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद) और नीरी (राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान) ने विकसित किया है, ताकि पारंपरिक पटाखों से 30 प्रतिशत तक कम प्रदूषण हो। यानी प्रदूषण हर सूरत में होना ही है, भले उसका प्रतिशत कुछ कम हो जाए। अगर पचास-सत्तर प्रतिशत तक प्रदूषण घटता तो फिर थोड़ी उम्मीद भी बंधती, लेकिन 30 प्रतिशत से कुछ असर नहीं पड़ेगा। यहां यह बताना भी ज़रूरी है कि जहरीली गैसें भले ग्रीन पटाखों से कम निकलें, लेकिन शोर तो उतना ही रहेगा। ग्रीन पटाखों का शोर 110 से 125 डेसिबल तक दर्ज किया गया है जबकि कानूनी सीमा 90 डेसिबल है। बच्चों और बुजुर्गों के लिए इसका शोर भी उतना ही हानिकारक है जितना पुराने पटाखों का था।

सुरजन पलाश (देशबंधु में संपादकीय)

120 बहादुर: रज़नीश 'रेज़ी' घई ने बताया किस सीन ने किया है उनपर भावनात्मक असर

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। एक्सेल एंटरटेनमेंट और ट्रिगर हैप्पी स्टूडियोज की आने वाली वॉर ड्रामा फिल्म 120 बहादुर इस साल की सबसे ज्यादा इंतेज़ार की जाने वाली फिल्मों में से एक है। यह टीज़र, जो लेजेंडरी लता मंगेशकर जी की जयंती पर रिलीज किया गया था, को पूरे देश में दर्शकों से शानदार रिस्पॉन्स मिला है। फिल्म बहादुर भारतीय सैनिकों की वीरता को पेश करने वाली है, लेकिन डायरेक्टर के लिए इस विषय के साथ न्याय करना इमोशनल तौर से चुनौतीपूर्ण सफर रहा। ऐसे में डायरेक्टर रजनीश 'रेज़ी' घई ने उस खास पल के बारे में खुलकर बात की है जिसने उन पर गहरा असर डाला है।

जब उनसे पूछा गया कि क्या शूटिंग के दौरान कोई ऐसे सीन थे जिन्होंने आप या क्रू पर गहरा भावनात्मक प्रभाव डाला, डायरेक्टर रजनीश 'रेज़ी' घई ने कहा, * ₹अगर आप इस लड़ाई के बारे में जानते हैं, तो 120 में से ज़्यादातर लोग इस लड़ाई में लड़ते हुए मारे गए। इसलिए हमने कई सीन शूट किए हैं जहां, एक-एक करके हम उन्हें खोते जाते हैं। और ये सीन इतने भावुक तरीके से सामने आए कि जब मैं इन्हें एडिट में देख रहा था, तो एक-दो बार मेरी आँख में भी आंसू आ गए। मुझे लगता है कि इसका भावनात्मक हिस्सा दिल के सही तार छूता है।

उन्होंने आगे कहा, * "ये सीन शूट करने में भी सबसे मुश्किल थे, और जब आप खुद इसे महसूस कर रहे होते हैं और सीन असल में अच्छे निकलते हैं, तो ये आपको गहराई से छू जाते हैं। इसलिए मैं कहूँगा कि मैं इस फिल्म के भावनात्मक हिस्से पर सच में गर्व महसूस करता हूँ। ये पूरी फिल्म में चलता है, लेकिन मुझे लगता है कि हमने उन लम्हों को सही तरीके से पकड़ा है। लड़कों के बीच की दोस्ती भी बहुत ही खूबसूरती से सामने आई है।"

फिल्म '120 बहादुर' 13 कुमाऊं रेजिमेंट के 120 भारतीय सैनिकों के असाधारण साहस को बयान करती है, जिन्होंने 1962 के वॉर के दौरान रेजांग ला की लड़ाई लड़ी थी। फिल्म में फरहान अख्तर ने मेजर शैतान सिंह भाटी, पीवीसी की भूमिका निभाई है, जिन्होंने अपने जवानों के साथ मिलकर भारतीय सैन्य इतिहास की सबसे निर्णायक लड़ाइयों में से एक में हर मुश्किल का सामना किया था। ऐसे बता दें कि इस फिल्म के दिल में एक दमदश पंक्ति गूंजती हैः हम पीछे नहीं हटेंगे।

इस फिल्म का डायरेक्शन रजनीश 'रैज़ी' घई ने किया है, और इसे रितेश सिधवानी, फरहान अख्तर (एक्सेल एंटरटेनमेंट), और अमित चंद्रा (ट्रिगर हैप्पी स्टूडियोज़) ने मिलकर प्रोड्यूस किया है। फ़िल्म 120 बहादुर 21 नवंबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

5 दिवसीय व्यापार समागम का समापन 112 देशों से आए खरीदार

मुख्य संवाददाता

दिल्ली/एनसीआर – 17 अक्टूबर - 13 से 17 अक्टूबर तक ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे स्थित इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित ऐतिहासिक भव्य और दिव्य आईएचजीएफ दिल्ली मेला–ऑटम 2025 के 60वें संस्करण का शानदार समापन आज उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ।

ईपीसीएच के महानिदेशक की भूमिका में मुख्य संरक्षक और आईईएमएल के अध्यक्ष डॉ. राकेश कुमार इस अवसर पर कहा, "हमारे प्रदर्शक, जो अब ईपीसीएच के नेतृत्व में भारत के प्रमुख निर्यात बाजारों में आयोजित अंतरराष्ट्रीय मेलों में भाग लेकर वैश्विक समुदाय का हिस्सा बन चुके हैं, खरीदारों की अपेक्षाओं और बाजार प्रवृत्तियों की बहुमूल्य समझ लेकर लौटते हैं। वे इस अनुभव और सीख को अपने उत्पादों और दृश्य प्रस्तुतियों में लागू करते हैं। इस वर्ष उनके अतिरिक्त प्रयास स्पष्ट रूप से अनूठे और आकर्षक प्रदर्शन में दिखाई दिए। नए उत्पाद नवाचारों ने व्यापार में वृद्धि की, कई प्रदर्शकों ने अपने क्रेता सूची का विस्तार किया। नियमित आगंतुकों ने सहजता से बताया कि हर संस्करण कुछ नया चमत्कारी प्रस्तुत करता है। स्पष्ट रूप से परिभाषित उत्पाद वर्गों और विशाल प्रदर्शन के साथ व्यापक पैमाने और सहज लेआउट ने इस संस्करण को विशेष रूप से प्रभावशाली बना दिया। कई आईएचजीएफ संरक्षक जो कुछ सीज़न बाद लौटे, उनके लिए यह संस्करण एक नवीन और स्वागत योग्य परिवर्तन बनकर उभरा।"

ईपीसीएच के उपाध्यक्ष सागर मेहता ने इस अवसर पर कहा, "जैसे-जैसे मेला सोर्सिंग सीज़न के समापन की ओर बढ़ा, हमने देखा कि हमारे नियमित खरीदार हमारे निर्यातकों के साथ अपने व्यापार में निरंतर बने रहे। सामान्यतः, स्थायित्व एक प्रमुख केंद्र रहा, कई खरीदारों ने विशेष रूप से इको फ्रेंडली और कंप्लायंट कलेक्शन, विशेष रूप से गृह और जीवनशैली उत्पादों में, की मांग की, । यूरोपीय खरीदारों ने फर्नीचर, गृह सज्जा, उपहार वस्तुएं, गृह उपयोगी वस्तुएं, बैग और क्रिसमस सजावट सहित विविध वस्तुएं खरीदीं। जूट, हेंप, मोटी नदी किनारे की घास से बने उत्पाद, बेंत और बांस जैसे प्राकृतिक सामग्री से बने टोकरी और उपयोगी उत्पादों ने भी काफी रुचि दिखाई। वस्त्र खरीदारों ने गृह सज्जा और रसोई लिनन की विस्तृत श्रृंखला की सराहना की। फैशन एक्सेसरी जैसे स्कार्फ, स्टोल और शॉल की खरीद करने वालों ने उपलब्ध विविधता से खुशी जताई। उपहार वस्तुएं, कागज़ी उत्पाद, इंटीरियर हार्डवेयर एंड कंपोनेंट भी खरीदारों को पर्याप्त विकल्प प्रदान करते हैं।"

ईपीसीएच के मुख्य संयोजक अवधेश अग्रवाल ने कहा, "पांच दिनों के दौरान, मेले में भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय तथा इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री माननीय जितिन प्रसादः उत्तर प्रदेश सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्र मंत्री राकेश सचान; तथा उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास, निर्यात संवर्धन, एनआरआई एवं निवेश संवर्धन मंत्री नंद गोपाल 'नंदी' की गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ी। इसके अतिरिक्त कई सरकारी गणमान्य व्यक्ति और विशिष्ट अतिथि जैसे, शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश से राज्यसभा सांसद मिथलेश कुमार कटारिया; उत्तर प्रदेश सरकार में अपर मुख्य सचिव, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात संवर्धन, उत्तर प्रदेश सरकार/निर्यात आयुक्त, आईडीसी आलोक कुमार; भारत सरकार में सचिव, वस्त्र मंत्रालय, नीलम शमी राव; भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय में हथकरघा विकास आयुक्त डॉ. एम बीना; गौतमबुद्ध नगर नोएडा की जिलाधिकारी और आईएएस अधिकार मेधा रूपम तथा अन्य कई विशिष्ट अतिथियों ने मेले का दौरा किया।"

ग्वाटेमाला के द्वितीय पीढ़ी के खरीदार चार्ली सेलेचनिक ने कहा**, भारत फर्नीचर और गृह सज्जा उत्पादों के लिए उनका प्रमुख सोर्सिंग गंतव्य बना हुआ है। ऑस्ट्रेलिया की खरीदार जेम्मा रॉबर्ट्सन, जो भारतीय हस्तनिर्मित आभूषणों और महिलाओं के फैशन, विशेष रूप से बैग में रुचि रखती हैं, पहली बार मेले में आईं। उन्होंने उत्साहपूर्वक कहा, "मैं यहां जो कुछ भी देख रही हूं, उससे बेहद उत्साहित हूं।"

स्पेन से आए उरको एट्कोटेगी, जो यूरोपीय बाजार के लिए गृह सज्जा और गृह वस्त्रों का व्यापार करते हैं, ने साझा किया, "यह वास्तव में मेरी दसवीं यात्रा है। मैं बार-बार लौटता हूं क्योंकि उत्पाद सुंदरता से बनाए जाते हैं और भारतीय हस्तशिल्प की गुणवत्ता हमेशा अलग पहचान रखती है। वर्षों से कीमतें काफी स्थिर रही हैं, जो नियमित खरीदारों के लिए एक अच्छी बात है।"

दिवाली के बाद पर्यावरण में AQI बढ़ने की संभावना को देखते हुए और डीजल/पेट्रोल BS 3/4 टैक्सी- बसों और प्राइवेट कारो के बंद करने की आशंका को देखते हुए लिखा पत्र

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें दिवाली के बाद पर्यावरण में AQI बढ़ने की संभावना को देखते हुए और डीजल/पेट्रोल BS 3/4 टैक्सी- बसों और प्राइवेट कारो के बंद करने की आशंका को देखते हुए एक पत्र डॉ राजीव वर्मा, चेयरमैन, CAQM को लिखा.

ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट का कहना हैं की एक तरफ तो कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मैनेजमेंट और दिल्ली सरकार दोनों पर्यावरण को स्वच्छ और साफ वातावरण के लिए काम करते हैं. लेकिन दिल्ली सरकार नें इस बार दिवाली पर ग्रीन पटाखे जलाने की सुप्रीम कोर्ट से आज्ञा ले ली हैं. हमें इस बात का कोई एतराज नहीं हैं. लेकिन हमें इस बात का पक्का अंदेशा हैं की इस बार दिल्ली के लोगो द्वारा ग्रीन पटाखे पूरी तरह ना जला कर पेहले से बने आम पटाखे ही लोग जलाएंगे. जिस से वातावरण में AQI की मात्रा दिवाली के बाद बहुत बढ़ जायेगी.

संजय सम्राट का कहना हैं की AQI का लेवल ज्यादा होते ही CAQM और दिल्ली सरकार दोनों ही हमारी डीजल /पेट्रोल की BS 3/4 गाड़ियों को बंद करने का फरमान लागू कर देंगे.

और पूरे भारत की गाड़ियाँ दिल्ली एनसीआर में आने से रोक देंगे, बल्कि दिल्ली एनसीआर में भी यें गाड़ियाँ नहीं चलने देंगे. और इन गाड़ियों को जब्त करने के साथ साथ उन पर 20 हजार का जुर्माना भी लगा दिया जाएगा.

सम्राट का कहना हैं कहना हैं कि अगर दिवाली पर पटाखे जलाने से AQI बढ़ता हैं, तो इसकी जिम्मेदारी कमिसन फॉर एयर क्वालिटी मैनेजमेंट और दिल्ली सरकार की होगी.

इस बारे में दिल्ली टैक्सी एन्ड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन नें एक पत्र कल दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता को भी लिखा.

एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय सम्राट नें CAQM के चेयरमैन से मांग की हैं की अगर दिल्ली में दिवाली के बाद पटाखों के जलाने के बाद AQI बढ़ता हैं तो हमारी डीजल /पेट्रोल BS 3/4 टैक्सी बसें और प्राइवेट गाड़ियाँ बंद ना की जाए.

CAQM और दिल्ली सरकार को इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि किसी भी प्रकार पर्यावरण खराब ना हो, क्योंकि इतनी जल्दी ग्रीन पटाखे कोई नहीं बना पाएंगे और यहां आम पटाखे चलेंगे और यह सुप्रीम कोर्ट के कानून की अवहेलना भी होगी और यह जिम्मेदारी CAQM और दिल्ली सरकार की होगी.

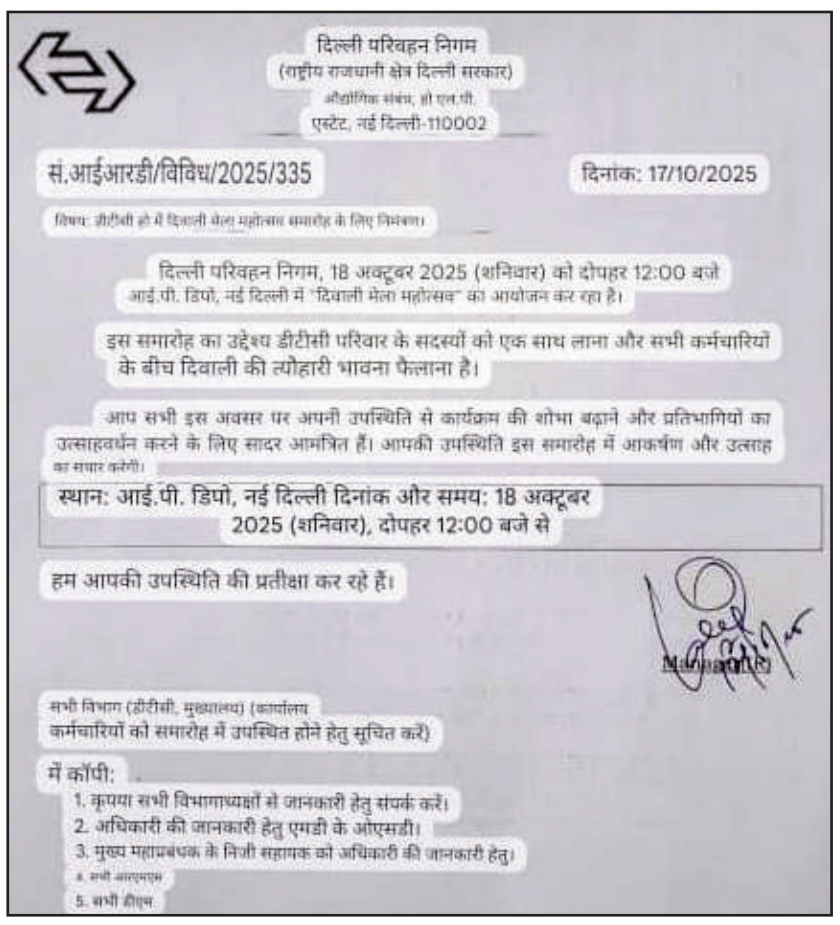

दिल्ली परिवहन निगम
(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार)
औद्योगिक संबंध, आई.पी.
एस्टेट, नई दिल्ली-110002

सं.आईआरडी/विविध/2025/335 दिनांक: 17/10/2025

विषय: डीटीसी आई.पी. में दिवाली मेला महोत्सव समारोह के लिए निमंत्रण।

दिल्ली परिवहन निगम, 18 अक्टूबर 2025 (शनिवार) को दोपहर 12:00 बजे आई.पी. डिपो, नई दिल्ली में "दिवाली मेला महोत्सव" का आयोजन कर रहा है।

इस समारोह का उद्देश्य डीटीसी परिवार के सदस्यों को एक साथ लाना और सभी कर्मचारियों के बीच दिवाली की त्योहारी भावना फैलाना है।

आप सभी इस अवसर पर अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने और प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करने के लिए सादर आमंत्रित हैं। आपकी उपस्थिति इस समारोह में आकर्षण और उत्साह का संचार करेगी।

स्थान: आई.पी. डिपो, नई दिल्ली दिनांक और समय: 18 अक्टूबर 2025 (शनिवार), दोपहर 12:00 बजे से

हम आपकी उपस्थिति की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सभी विभाग (डीटीसी, मुख्यालय) (कार्यालय कर्मचारियों को समारोह में उपस्थित होने हेतु सूचित करें)

में कॉपी:
1. कृपया सभी विभागाध्यक्षों से जानकारी हेतु संपर्क करें।
2. अधिकारी की जानकारी हेतु एमडी के ओएसडी।
3. मुख्य महाप्रबंधक के निजी सहायक को अधिकारी की जानकारी हेतु।
4. सभी आरएमएस
5. सभी डीएम

नॉर्मल गैस या साइलेंट हार्ट अटैक: डॉ हृदयेश कुमार ने बताया कब अपच हो सकती है खतरे की घंटी

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट द्वारा स्वास्थ्य पर विशेष जागरूक अभियान के तहत चर्चा डॉ हृदयेश कुमार ने बताया कि आजकल दिल की बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं, युवाओं में भी हार्ट अटैक के मामले सामने आ रहे हैं। डॉ. हृदयेश कुमार ने बताया कि सीने में दर्द को गैस समझकर अनदेखा नहीं करना चाहिए, क्योंकि यह हार्ट अटैक का संकेत हो सकता है। पेट में भारीपन, डकार आना या पेट फूलना जैसे लक्षण साइलेंट हार्ट अटैक के लक्षण हो सकते हैं, खासकर बुजुर्ग महिलाओं में। समय पर जांच कराकर जान बचाई जा सकती है।

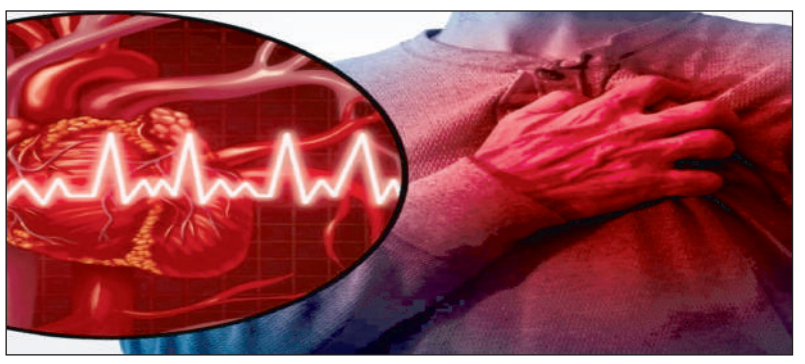

सीने में दर्द को न करें अनदेखा

गैस समझकर टालना हो सकता है खतरनाक
बेचैनी भी है साइलेंट हार्ट अटैक का लक्षण

इन दिनों दिल से जुड़ी समस्याओं के मामले तेजी से बढ़ने लगे हैं। आजकल लोगों लाइफस्टाइल काफी ज्यादा बदल चुकी है और इसलिए सेहत से जुड़ी समस्याएं आजकल लोगों को अपना शिकार बनाने लगी हैं। हार्ट की समस्या पिछले कुछ समय से चिंता का विषय बनकर सामने आई है।

पहले बुजुर्गों में होने वाली यह बीमारी अब युवाओं और बच्चों तक को अपना शिकार बना रही है। हार्ट अटैक दिल से जुड़ी बीमारियों में सबसे आम और खतरनाक है। बात जब भी इसके लक्षणों की होती है, तो सीने में दर्द इसका पहला और सबसे प्रमुख लक्षण माना जाता है। हालांकि, कई बार लोग इसे सिर्फ ब्लोटिंग, गैस या अपच मानकर अनदेखा कर देते हैं, लेकिन कई बार यह पाचन से जुड़ी समस्याएं नहीं, बल्कि हार्ट की समस्या की शुरुआत हो सकती है।

ऐसे में लोगों को इसके बारे में बताया कि आम लगने वाले इन लक्षणों को नजरअंदाज क्यों नहीं करना चाहिए और तुरन्त ही अपने डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए।

हार्ट अटैक और गैस में अंतर कैसे करें, इस बारे में बहुत कम लोग ही जानते हैं। डॉक्टर बताते हैं कि भारत में गैस एक आम समस्या है और इसलिए अक्सर लोग हार्ट अटैक और गैस में अंतर नहीं कर पाते हैं। लोग अक्सर पेट फूला हुआ यानी ब्लोटिंग महसूस करते हैं और बिना सीने में दर्द के, मान लेते हैं कि यह सिर्फ गैस है। हालांकि, ये लक्षण दिल के दौरे जैसे भी हो सकते हैं।

इग्नोर न करें पेट में भारीपन

उन्होंने आगे कहा कि यह जरूरी है कि ऐसे लक्षणों को नजरअंदाज न किया जाए। अगर आपको ये लक्षण लगातार महसूस हो रहे हैं, तो आपको तुरंत किसी हार्ट स्पेशिएलिस्ट से मिलना चाहिए। अक्सर सीने में भारीपन, डकार आना या पेट फूलना जैसे लक्षण, खासकर साइलेंट हार्ट अटैक का संकेत हो सकते हैं। खासकर बुजुर्ग महिलाओं या लंबे समय से हाई बीपी से पीड़ित महिलाओं में यह ज्यादा आम है।

साइलेंट हार्ट अटैक के लक्षण

डॉक्टर बताते हैं कि गैस और अपच से यूं तो कोई परेशानी नहीं होती, लेकिन अगर यह लगातार और बार-बार हो, तो इसे नजरअंदाज न करें। उन्होंने यह भी कहा कि साइलेंट हार्ट अटैक आने पर सीने में तेज दर्द नहीं होता, बल्कि ऐसा होने पर हल्की बेचैनी, ब्लोटिंग या सीने में असामान्य भारीपन महसूस हो सकता है। ऐसे में समय पर मेडिकल चेकअप जीवन बचाने में मदद कर सकता है। यह एक लक्षण, अनदेखा करने की गलती बन सकती है जानलेवा।

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय विज्ञान विहार में वार्षिक खेल दिवस का आयोजन

पत्रकार हंसराज

दिनांक 17-10-2025 को पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय विज्ञान विहार में वार्षिक खेल दिवस 2025 का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष एस. एस. परिहार (आई.ए. एस.) जिला अधिकारी शाहदरा दिल्ली का आगमन हुआ और विशिष्ट अतिथि के रूप में विद्यालय प्रबंध समिति के नामित अध्यक्ष श्री मंगल सेन ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

मुख्य अतिथि महोदय ने विद्यालय के उद्यान में पौध रोपण किया। प्राचार्य डॉ. गया रविदास ने अतिथियों का स्वागत किया तत्पश्चात मुख्य अतिथि द्वारा विधिवत रूप से वार्षिक खेल दिवस के शुभारम्भ की घोषणा की गई।

विद्यालय के चारों सदन कैप्टन की नेतृत्व में मुख्य अतिथि महोदय को मार्च पास्ट द्वारा सलामी दी गई. योगा तथा ऐरोबिक्स के प्रदर्शन दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बने।

विद्यार्थियों ने विभिन्न खेल गतिविधियों में भाग लिया तथा मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि द्वारा खिलड़ियों को मेडल देकर सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि म वनहोदय एस. एस. परिहार ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन से बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

बदायूं : उपभोक्ता आयोग ने मारुति डीलर पर ठोंका दो लाख का जुर्माना...

एम्बुलेंस की कीमत में मनमानी वसूली पर डिट्रीब्यूटर को दोषी ठहराया

बदायूं। जिला उपभोक्ता आयोग ने मारुति ईको एम्बुलेंस की तयशुदा बुकिंग रकम से अधिक वसूलने को सेवा में कमी मानते हुए कंपनी के डिस्ट्रीब्यूटर/ विक्रेता को दोषी ठहराया है। आयोग ने आदेश दिया है कि वसूली गई अधिक रकम ब्याज सहित उपभोक्ता को लौटाई जाए। वादी डॉ. अजरा बी, जो पेशे से चिकित्सक हैं। उन्होंने 2017 में अपनी चिकित्सीय जरूरतों के लिए मारुति कंपनी की एक ईको एम्बुलेंस 4.02 लाख रुपए में कंपनी के अधिकृत विक्रेता कोरल मोटर्स से बुक की थी। इसके लिए उन्होंने 10 हजार रुपए एडवांस जमा किए थे। डिलीवरी के लिए बार-बार कहने के बावजूद विक्रेता ने तरह-तरह के बहाने बनाए और कई साल तक वाहन नहीं दिया। आखिरकार नवंबर 2023 में एम्बुलेंस की डिलीवरी दी गई, लेकिन तयशुदा कीमत के विपरीत 7.95 लाख की वसूली की गई। साथ ही यह आश्वासन दिया कि कंपनी से स्वीकृति मिलने के बाद वसूली गई अतिरिक्त रकम लौटा दी जाएगी। काफी समय बीत जाने के बाद भी रकम वापस न होने पर डॉ. अजरा बी ने अपने अधिवक्ता जियाउर रहमान समी के माध्यम से जिला उपभोक्ता आयोग में परिवाद दायर कराया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने और साक्ष्यों की समीक्षा करने के बाद आयोग के अध्यक्ष संजीव यादव और सदस्य श्रीमती अनिता ने आदेश पारित किया कि विपक्षी कोरल मोटर्स परिवादिनी को 2.1 रुपए प्राप्ति की तिथि से छह प्रतिशत वार्षिक ब्याज सहित अदा करे। साथ ही 2,500 रुपए वाद खर्च के रूप में भी भुगतान करने के निर्देश दिए।

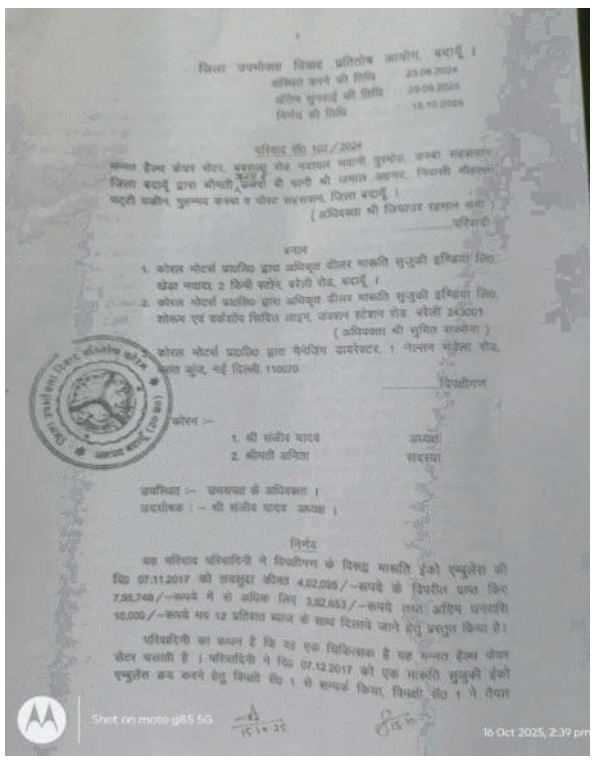

श्रीहनुमद् आराधन मण्डल ने किया "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी को सम्मानित

वृन्दावन। अक्रूर ग्राम स्थित प्राचीन श्रीपंचमुखी हनुमान मंदिर में श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के द्वारा मण्डल का चौदहवां वार्षिकोत्सव अनेक प्रख्यात संतों-विद्वानों एवं धर्माचार्यों की सन्निधि में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसके अंतर्गत नगर के प्रख्यात साहित्यकार एवं आध्यात्मिक पत्रकार "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी को उनके द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट लेखन के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान श्रीहनुमद् आराधन मण्डल के संरक्षक डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, अध्यक्ष अशोक व्यास, कोषाध्यक्ष आचार्य विपिन बापू , आचार्य बुद्धिप्रकाश शास्त्री, आचार्य अश्वनी मिश्र एवं सुमंत कृष्ण शास्त्री आदि ने अभिनंदन पत्र, स्मृति चिन्ह एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट कर प्रदान किया। संरक्षक डॉ. मनोज मोहन शास्त्री एवं अध्यक्ष अशोक व्यास रामायणी ने कहा कि डॉ. गोपाल चतुर्वेदी न केवल ब्रज के अपितु समूचे देश के गौरव हैं। उन्होंने हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में अपने उत्कृष्ट लेखन के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी जो एक अलग पहचान बनाई है, वह स्तुत्य है। ज्ञात हो कि पिछले माह उत्तर प्रदेश के पूर्व उप-मुख्यमंत्री एवं राज्य सभा सांसद डॉक्टर दिनेश शर्मा ने डॉक्टर गोपाल चतुर्वेदी को लखनऊ में "यूपी रत्न" की मानद उपाधि से अलंकृत किया था। इस अवसर पर जगद्गुरु पीपाद्वाराचार्य बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, जगद्गुरु श्रीमद्विष्णुस्वामी विजयराम देवाचार्य भैयाजी महाराज (बल्लभगढ़ वाले), गौ ऋषि सन्त कृष्णानंद महाराज (भूरी वाले), विश्वविख्यात भागवताचार्य कृष्ण चंद्र शास्त्री ठाकुरजी महाराज, सांसद प्रतिनिधि जनार्दन शर्मा, मथुरा-वृन्दावन नगर निगम के उप-सभापति मुकेश सारस्वत, प्रमुख भाजपा नेता पण्डित योगेश द्विवेदी, पद्मनाभ शास्त्री, प्रमुख शिक्षाविद् प्रमोद गौतम, डॉ. अशोक शास्त्री, उमाशक्ति पीठ के राष्ट्रीय प्रवक्ता राज नारायण द्विवेदी (राजू भैया), आचार्य युगल किशोर कटारे, पण्डित बिहारीलाल शास्त्री, आचार्य श्रीराम मुद्गल, आचार्य विनय त्रिपाठी, श्रीमती मीरा शास्त्री, भागवत विदुषी कीर्ति किशोरी, आचार्य ऋषि तिवारी, रसिया बाबा, डॉ. राधाकांत शर्मा, संजीव कृष्ण ठाकुरजी महाराज, संगीताचार्य बनवारी महाराज, आचार्य नेत्रपाल शास्त्री, आचार्य राजेश किशोर गोस्वामी,देशी टार्जन पहलवान संजय सिंह, श्याम सुन्दर ब्रजवासी, स्वामी सत्यमित्रानंद महाराज आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

एटा की जनता के लिए बड़ी राहत - रानी अवंतीबाई मेडिकल कॉलेज में शुरू हुई कैंसर जांच सुविधा

अब दिल्ली–मुंबई नहीं जाना पड़ेगा, साइटोलैब में एफएनएसी तकनीक से हो रही सटीक जांच महिलाओं के लिए पैप स्मीयर टेस्ट भी शुरू

एटा। संवाददाता

जनपद एटा के लोगों के लिए बड़ी राहत की खबर है। अब कैंसर जैसी घातक बीमारी की जांच के लिए दिल्ली या मुंबई जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। एटा मेडिकल कॉलेज में कैंसर जांच की अत्याधुनिक सुविधा शुरू हो गई है। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में साइटोलैब (Cytolab) की स्थापना की गई है, जहां एफएनएसी (FNAC) तकनीक के माध्यम से कैंसर की जांच की जा रही है।

साइटोलैब की इंचार्ज डॉ. अंकिता शर्मा ने जानकारी दी कि एफएनएसी तकनीक द्वारा शरीर के किसी भी हिस्से में पाई जाने वाली गांठ से सैंपल लेकर माइक्रोस्कोपिक जांच की जाती है, जिससे यह पता लगाया जा सकता है कि गांठ सामान्य है या कैंसरग्रस्त।

पहले यह जांचें दिल्ली या मुंबई जैसे बड़े शहरों में ही संभव थीं, लेकिन अब यह सुविधा एटा मेडिकल कॉलेज में उपलब्ध है।

डॉ. अंकिता शर्मा ने बताया कि—

> "साइटोलैब में प्रतिदिन 15 से 20 मरीज जांच कराने आ रहे हैं। अब एटा की जनता को कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है। शुरुआती अवस्था में कैंसर का पता चलने पर इसका इलाज पूरी तरह संभव है।"

उन्होंने बताया कि हाल ही में एक 12 वर्षीय बच्ची के स्तन में गांठ की जांच में कैंसर की पुष्टि हुई। बच्ची की मां भी कैंसर से पीड़ित थीं और उनकी मृत्यु इसी बीमारी से हुई थी। वहीं, एक 60 वर्षीय बुजुर्ग के गले में सूजन की जांच में भी कैंसर पाया गया।

यह दोनों मामले इस बात के उदाहरण हैं कि शुरुआती जांच से गंभीर बीमारी की पहचान संभव है।

डॉ. अंकिता शर्मा ने बताया कि अब महिलाओं के लिए सर्वाइकल कैंसर की जांच हेतु पैप स्मीयर टेस्ट (Pap Smear Test) की सुविधा भी शुरू कर दी गई है।

> "यह टेस्ट महिलाओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं है, क्योंकि इससे सर्वाइकल कैंसर की पहचान शुरुआती अवस्था में ही हो जाती है और समय रहते इलाज किया जा सकता है," उन्होंने बताया।

साइटोलैब में बच्चों की गर्दन में पाई जाने वाली गांठों की भी जांच की जा रही है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि वह सामान्य है, ट्यूबरक्लोसिस है या कैंसर।

यदि गांठ टीबी से जुड़ी है तो रेजिस्टेंट (दवा प्रतिरोधी) होने से पहले ही उपचार शुरू किया जा सकता है।

डॉ. अंकिता शर्मा ने अपील की—

> "यदि शरीर में कहीं भी गांठ, सूजन या असामान्य परिवर्तन दिखे तो तुरंत जांच कराएं। कैंसर का इलाज तभी सफल है जब इसका पता समय रहते चल जाए।"

एटा मेडिकल कॉलेज की यह उपलब्धि जनपद के लिए स्वास्थ्य सेवाओं में एक ऐतिहासिक कदम है। अब कैंसर जैसी घातक बीमारी की जांच और प्रारंभिक उपचार एटा में ही संभव है — जो निस्संदेह जनता के लिए एक बड़ी सौगात और जीवन रक्षक पहल है।

धनतेरस 18 अक्टूबर 2025- समृद्धि, स्वास्थ्य, आस्था और वैश्विक सांस्कृतिक एकता का प्रतीक पर्व

भारत में धनतेरस के दिन सोना, चांदी, बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ, वाहन और गहने खरीदने की परंपरा है

आधुनिक युग में धनतेरस ने अपने धार्मिक स्वरूप से आगे बढ़कर वैश्विक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को भी अपने साथ जोड़ा है **–एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर भारत की संस्कृति में दीपावली केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि पाँच दिवसीय आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक यात्रा है। इस यात्रा की शुरुआत जिस दिन से होती है, वह दिन है धनतेरस, समृद्धि, आरोग्य और शुभारंभ का पर्व। वर्ष 2025 में धनतेरस 18 अक्टूबर, शनिवार को मनाया जा रहा है। यह दिन न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में बसे करोड़ों भारतीयों के लिए दिवाली की शुरुआत का प्रतीक है। आधुनिक युग में धनतेरस ने अपने धार्मिक स्वरूप से आगे बढ़कर वैश्विक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों को भी अपने साथ जोड़ा है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि धनतेरस का उद्भव वैदिक परंपरा से जुड़ा हुआ है। पुराणों में उल्लेख है कि समुद्र मंथन के समय, देवताओं और असुरों के बीच जब अमृत कलश प्राप्त हुआ, उसी समय धन्वंतरि भगवान, जो आयुर्वेद के देवता माने जाते हैं, अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। यही दिन त्रयोदशी तिथि का था, जो कार्तिक कृष्ण पक्ष की होती है। इसी कारण इसे धन्वंतरि त्रयोदशी कहा गया, जो आगे चलकर "धनतेरस" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। धन्वंतरि देव का आगमन जीवन में स्वास्थ्य, दीर्घायु और संतुलन का प्रतीक है। भारत में प्राचीन काल से ही स्वास्थ्य को धन के समान माना गया है "आरोग्यं परमं भाग्यं, स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्।" अर्थात आरोग्य ही सबसे बड़ा धन है। इसीलिए धनतेरस पर लोग न केवल सोना-चांदी या बर्तन खरीदते हैं, बल्कि आरोग्य, स्वच्छता और संतुलित जीवन के संकल्प भी लेते हैं।

साथियों बात अगर हम धनतेरसः शुभ क्रय और आर्थिकप्रतीकवाद को समझने की करें तो, भारत में धनतेरस के दिन सोना, चांदी, बर्तन, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ, वाहन और गहने खरीदने की परंपरा है। इसे शुभ मुहूर्त का प्रतीक माना जाता है। यह दिन वर्ष का वह क्षण होता है जब अर्थव्यवस्था में उपभोक्ता भावनाओं का चरमोत्कर्ष देखा जाता है। 2025 के लिए अनुमान है कि भारतीय बाजार में धनतेरस पर लगभग 65,000 करोड़ रूपए से अधिक का कारोबार होगा, जिसमें आभूषण उद्योग, वाहन, मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, गृह सज्जा और स्टील-बर्तन उद्योग अग्रणी होंगे। इस दिन का आर्थिक महत्व केवल भारत तक सीमित नहीं है। दुबई, लंदन, न्यूयॉर्क, सिंगापुर, मेलबर्न, टोरंटो और नैरोबी जैसे महानगरों में बसे प्रवासी भारतीय समुदाय भी इस दिन 'धनतेरस शॉपिंग फेस्टिवल' आयोजित करते हैं। यह दर्शाता है कि भारतीय परंपरा अब एक वैश्विक ब्रांड पहचान में परिवर्तित हो चुकी है।

साथियों बात अगर हम आयुर्वेद और स्वास्थ्य का दिवसःधन्वंतरि पूजा का गूढ़ अर्थ, पर्यावरणीय दृष्टिकोण व सामाजिक एकजुट को समझने की करें तो धनतेरस केवल धन-संपदा का नहीं, बल्कि स्वास्थ्य-संपदा का पर्व हैभगवान धन्वंतरि को आयुर्वेद का जनक माना जाता है। इस दिन चिकित्सक, वैद्य, फार्मासिस्ट, योग प्रशिक्षक और स्वास्थ्य संस्थान विशेष पूजन-अर्चन करते हैं। 2025 में विश्व स्वास्थ्य संगठन और आयुष मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से "ग्लोबल आयुर्वेदा वैलनेस डे" के रूप में धनतेरस को मान्यता देने की पहल भी चल रही है। यह एक ऐसी ऐतिहासिक दिशा होगी जिसमें भारतीय चिकित्सा ज्ञान को वैश्विक आयुर्विज्ञान के मानचित्र पर स्थान मिलेगा। धनतेरस और पर्यावरणीय दृष्टिकोण-धनतेरस का एक गहरा संदेश "संपन्नता के साथ स्थिरता" का भी है। वर्तमान समय में जब उपभोक्तावाद चरम पर है, यह पर्व हमें याद दिलाता है कि वास्तविक समृद्धि वही है जो प्रकृति के संतुलन को बनाए रखे। मिट्टी के दीपक जलाना, तांबे- पीतल के बर्तन खरीदना, और स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना पर्यावरणीय दृष्टि से भी सार्थक कदम हैं।

वर्ष 2025 में पर्यावरणविदों ने यह आह्वान किया है कि धनतेरस पर इको-फ्रेंडली खरीदारी की जाए, जैसे ऊर्जा-संवर्धन करने वाले उपकरण, सौर लैंप, या स्थायी धातु से बने उत्पाद। यह कदम "ग्रीन धनतेरस" की अवधारणा को आगे बढ़ा रहा है। धनतेरस और सामाजिक एकजुटता-धनतेरस का एक बड़ा पक्ष सामाजिक समरसता और सहानुभूति का है। परंपरागत रूप से इस दिन घर में दीप जलाए जाते हैं ताकि अंधकार, गरीबी और दुख को दूर किया जा सके। आधुनिक संदर्भ में इसका अर्थ है, समाज के वंचित वर्ग तक प्रकाश पहुँचाना। अनेक सामाजिक संगठन और एनजीओ धनतेरस के दिन गरीबों को वस्त्र, बर्तन और मिठाइयाँ वितरित करते हैं। कटनी, वाराणसी, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, दुबई और न्यूयॉर्क जैसे शहरों में प्रवासी भारतीय संगठन इस दिन "शेयर द लाइट मूवमेंट" नामक कार्यक्रम चलाते हैं, जिसमें जरूरतमंद परिवारों के घर रोशनी और मुस्कान पहुँचाई जाती है।

साथियों बात अगर हम विश्व पटल पर धनतेरस का विस्तार को समझने की करें तो, आज धनतेरस केवल भारतीयों का त्योहार नहीं रह गया है। यह एक ग्लोबल सांस्कृतिक इवेंट बन चुका है। लंदन में "दिवाली ऑन द स्क्वायर" नाम से जो आयोजन होता है, वहाँ हर वर्ष लाखों लोग भाग लेते हैं। इस आयोजन की शुरुआत धनतेरस के दिन होती है। सिंगापुर, मलेशिया, फिजी, मॉरीशस,

ट्रिनिडाड, और कनाडा जैसे देशों में धनतेरस के अवसर पर "फेस्टिवल ऑफ़ वेल्थ एंड हेल्थ" नाम से सार्वजनिक समारोह आयोजित किए जाते हैं। 2025 में अमेरिका के न्यू जर्सी, डलास, और कैलिफोर्निया के भारतीय संघों ने भी धनतेरस पर "ग्लोबल धन्वन्तरि कांफ्रेंस 2025" आयोजित करने की घोषणा की है। इस सम्मेलन में स्वास्थ्य, योग, आयुर्वेद और वित्तीय जागरूकता पर चर्चा होगी, जो दिखाता है कि यह पर्व कितनी बहुआयामी प्रासंगिकता रखता है।

साथियों बात अगर हम धनतेरस और डिजिटल युग कीकांबिनेशन को समझने की करें तो ,वर्तमान डिजिटल युग में धनतेरस ने नई पहचान प्राप्त की है। ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म्स जैसे अमेज़ॉन, फ्लिपकार्ट टाटा क्लिक, और रिलायंस डिजिटल इस दिन विशेष "धनतेरस फेस्टिव सेल " लॉन्च करते हैं। 2025 में इन ऑनलाइन बिक्री से भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था में लगभग 25,000 करोड़ रूपए का अतिरिक्त प्रवाह होने का अनुमान है। डिजिटल पेमेंट्स, यूपीआई और रुपे कार्ड जैसी तकनीकें इस दिन के आर्थिक व्यवहार को पारदर्शिता और गति देती हैं।

धनतेरस अब केवल बाजारों की चमक तक सीमित नहीं, बल्कि यह डिजिटल समृद्धि का प्रतीक भी बन चुका है, जो "नए भारत" की पहचान को दर्शाता है।

साथियों बात अगर हम परिवार और परंपरा, घर की लक्ष्मी का स्वागत व धनतेरस और आधुनिक युवा पीढ़ी को समझने की करें तो, धनतेरस के दिन भारतीय घरों में सुबह से ही सजावट शुरू हो जाती है। लोग अपने घरों को साफ-सुथरा करते हैं, नए वस्त्र पहनते हैं और द्वार पर स्वस्तिक और शुभ-लाभ के चिन्ह बनाते हैं। सायंकाल के समय दीपदान किया जाता है, विशेषकर तुलसी और मुख्य द्वार पर दीप जलाने का विधान है। गृहस्थ इस दिन "यम दीपदान" भी करते हैं, मान्यता है कि इस दीपक की ज्योति से मृत्यु और भय का निवारण होता है। यह प्रतीकात्मक रूप से "प्रकाश से अंधकार पर विजय" का संदेश देता है। घर की स्त्रियाँ इस दिन "लक्ष्मी आराधना" का प्रारंभ करती हैं, जिससे दीपावली की मुख्य पूजा का मंगल आरंभ माना जाता है। धनतेरस और आधुनिक युवा पीढ़ी-नई पीढ़ी के लिए धनतेरस केवल पूजा का दिन नहीं, बल्कि स्व-विकास और वित्तीय अनुशासन की प्रेरणा भी है। भारत के शहरी युवाओं में धनतेरस पर म्यूचुअल फंड, सोने के बॉन्ड, या डिजिटल गोल्ड में निवेश करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। 2025 में वित्त विशेषज्ञों ने इसे "फाइनेंसियल वैलनेस फेस्टिवल" का नाम दिया है, जो दर्शाता है कि आज की पीढ़ी इस परंपरा को आर्थिक साक्षरता के माध्यम से पुनःपरिभाषित कर रही है।

साथियों बात अगर हम धनतेरस और भारतीय अर्थव्यवस्था का मनोवैज्ञानिक पहलू व धनतेरस और महिला सशक्तिकरण को समझने की करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था में त्योहारों का प्रभाव गहरा होता है। धनतेरस वह क्षण है जब करोड़ों उपभोक्ता नई खरीदारी के लिएसकारात्मक मानसिकता में होते हैं। इसउत्साह से मांग बढ़ती है, उत्पादन को गति मिलती है, और रोज़गार सृजन को बल मिलता है। अर्थशास्त्रियों का मत है कि भारत की जीडीपी में त्योहारों के सीज़न के दौरान लगभग 2पेर्सेंट तक का उछाल देखा जा सकता है। इस प्रकार धनतेरस केवल सांस्कृतिक उत्सव नहीं, बल्कि आर्थिक इंजन का उत्प्रेरक भी है। धनतेरस और महिला सशक्तिकरण -धनतेरस के दिन घर की "गृहलक्ष्मी" को केंद्र में रखा जाता है। यह सांस्कृतिक रूप से नारी शक्ति का सम्मान है। आज के युग में महिलाएँ न केवल परिवार की रक्षक हैं, बल्कि वित्तीय निर्णयों में समान भागीदारी निभा रही हैं। इस दिन कई बैंक और फिनटेक संस्थान महिलाओं के लिए "स्वर्ण निवेश योजना" या "धन लक्ष्मी सेविंग प्रोग्राम" जैसी योजनाएँ लॉन्च करते हैं। यह दिखाता है कि परंपरा और आधुनिकता का संगम किस प्रकार महिला सशक्तिकरण के माध्यम से सामाजिक समृद्धि में परिवर्तित हो रहा है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि धनतेरस समृद्धि का नया अर्थ, धनतेरस 2025 केवल तिथि नहीं, बल्कि एक विचार हैँ कि सच्चा धन वह है जो बाँटने से बढ़ता है, और सच्ची समृद्धि वह है जो सबके जीवन में प्रकाश लाए। चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो या आध्यात्मिक धनतेरस हमें यह सिखाता है कि हर उपलब्धि का अर्थ तभी है जब वह साझी खुशी में परिवर्तित हो। इसलिए जब 18 अक्टूबर 2025 की संध्या में दीपक जलें, तो वे केवल घरों में नहीं, मानवता के हृदयों में भी उजियारा करें। यह धनतेरस नई चेतना, नईजिम्मेदारी और नई वैश्विक संस्कृति का उद्घोष बने, जहाँ आरोग्य, समृद्धि और सद्भाव एक साथ दीपित हों।

धन्वंतरि से महावीर तक: धनतेरस की बहुधार्मिक विरासत

धनतेरस—दीपोत्सव का स्वर्णिम प्रारंभ, भारतीय चेतना का पवित्र द्वार, जहां स्वास्थ्य की ज्योति अमरत्व की किरणों से प्रज्ज्वलित हो उठती है और समृद्धि का आलोक लोभ के अंधकार को चीरकर आत्मा को स्पर्श करता है। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी की यह तिथि सोने-चांदी की चमक से परे, वैदिक ऋषियों की अमिट विरासत है, जो समुद्र मंथन की महाकाव्य घटना से जन्मी। पुराणों में वर्णित है कि देवासुरों के संयुक्त मंथन में क्षीर सागर से विष्णु के धन्वंतरि अवतार प्रकट हुए—हाथों में जड़ी-बूटियाँ और अमृत कलश लिए। यह क्षण अमरत्व का उद्घोष था ही, आयुर्वेद की नींव भी, जहां ऋग्वेद के मंत्र धन्वंतरि को रोगनाशक देवता के रूप में गुणते हैं। अथर्ववेद के चिकित्सा सूत्र वैद्यों की परंपरा का आधार बने, जो त्रयोदशी को औषध संग्रह और शिष्य दीक्षा का पवित्र मुहूर्त मानते थे। इतिहास में यह तिथि सिंधु घाटी की कृषि सभ्यताओं से जुड़ती है—हड़प्पा के अवशेष तांबे-कांस्य बर्तनों की प्राचीन खरीद-फरोख्त को उजागर करते हैं, जो फसलोत्सव के बाद आर्थिक पुनरुत्थान का प्रतीक थी। स्कंद पुराण राजा बलि के उदार धन वितरण के पश्चात धन्वंतरि द्वारा प्रदत्त स्वास्थ्य वरदान की कथा से इसकी महत्ता को रेखांकित करता है। ये ऐतिहासिक सूत्र लोककथाओं की परतों में छिपे, सभ्यता के चक्रव्यूह से मुक्ति का संदेश देते हैं।

इस पर्व की गहराई कृषि युग की सामूहिक समृद्धि से गूंजी है, जब कार्तिक की शीतल वायु फसल कटाई के बाद गोदामों को अन्न से भर देती। प्राचीन ग्रामीण सभ्यताओं में मोहनजोदड़ो के जल निकासी तंत्र से प्रेरित होकर लोग घर लीपते, नदी स्नान से शुद्धि का संकल्प लेते—यह वैदिक 'शुद्धिकरण यज्ञों' से विकसित परंपरा बनी, जहां नई धातु वस्तुओं की खरीद जीवन चक्र के नवीनीकरण का प्रतीक हुई। मध्यकालीन चोल राजवंश में वैद्यों को दान देकर स्वास्थ्य सेवाओं को संरक्षण दिया जाता था, जबकि गुप्त काल में धन्वंतरि जैसे चिकित्सकों के माध्यम से आयुर्वेद की उन्नति हुई—प्रजा की आयु वृद्धि की कामना से जुड़ी परंपरा। ये तथ्य धनतेरस को प्राचीन भारत के आर्थिक लचीलापन की कथा बनाते—किसान उपज से व्यापार गति देते, शिल्पकार धातु कृतियां रचते, समाज नवसंवत्सर की ओर अग्रसर होता। हिंदू परंपरा के हृदय में यह उत्सव लक्ष्मी की समृद्धि-प्रदायिनी शक्ति और कुबेर की धन-संरक्षण क्षमता से आलोकित है, जहाँ निवास की शुद्धि और प्रवेश द्वार पर दीपमालाएँ धन की अटल निवास का आकर्षण करती हैं। गरुड़ पुराण की यमदीपदान कथा राजा हिम के पुत्र की असमय मृत्यु से प्रेरित है, जहाँ पत्नी ने दक्षिण मुखी दीप प्रज्ज्वलन और निशा-जागरण से यम को अधीन कर जीवन-विजय अर्जित की—यह प्रकाश की मृत्यु-भय पर विजय का प्रखर संदेश देती है। वैष्णव इसे विष्णु जयंती के रूप में, शैव शिव कृपा के द्वार के रूप में ग्रहण करते हैं, इस प्रकार पर्व संप्रदायिक एकता का प्रतीक बनता है।

जैन धर्म में धनतेरस आध्यात्मिक शिखरों को छूता है, जहां भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को दीर्घ मौन व्रत का प्रारंभ किया—दीपावली से ठीक दो दिन पूर्व—अपने अंतिम उपदेशों का साक्षी बनाते हुए। कल्पसूत्र और जैन आगमों के अनुसार, महावीर ने गणधरों को अणुव्रत, महाव्रत, अहिंसा और आत्मतत्त्व के रहस्यों का गहन उपदेश दिया, जो 'धन्य तेरस' के रूप में आत्म-विजय का दिव्य उत्सव है। जैन मंदिरों में इस दिन विशेष ध्यान, स्वाध्याय और दान से सच्चा धन—आत्मज्ञान व संयम—की आराधना होती है, जो हिंदू भौतिकवाद से कटकर आंतरिक समृद्धि का उज्ज्वल मार्ग प्रशस्त करता। यह दृष्टि जैन साहित्य की 'धन परित्याग' अवधारणा से प्रेरित है, जहां भौतिक संचय मोह का बंधन मात्र है। अन्य धर्मों में भी इसका प्रतिबिंब चमकता है: बौद्ध परंपरा कार्तिक को दान-पुण्य का पावन मास मानती है, जहाँ अमृत प्राप्ति की कथा करुणा का प्रतीक बनती है, जबकि तिब्बती चिकित्सा ग्रंथ स्वास्थ्य देवताओं की स्तुति से समृद्ध हैं। सिख धर्म में दीपोत्सव की तैयारी हरमंदिर साहिब के लंगर और गुरुवाणी से समानता का संदेश ग्रहण करती है। गोवा के चर्च और केरल के मस्जिद क्षेत्रों में दीपोत्सव-सफाई अभियान स्वास्थ्य जागरूकता से जुड़ते हैं—ये आयाम धनतेरस को सांस्कृतिक संमिश्रण का जीवंत प्रमाण बनाते हैं।

सामाजिक विमर्श में धनतेरस घर-गलियों की चमक-दमक, लीप-पोत की पवित्रता और नई वस्तुओं की उत्साहपूर्ण खरीदारी से जागृत होता है, जो लोभ-ईर्ष्या के गहन आंतरिक अंधकार का प्रलयकारी दहन करता है। ग्रामीण हृदय में 'नव बर्तन उत्सव' पुराने का त्याग और नव संकल्पों का उल्लासपूर्ण स्वागत है—जीवन की अनंत प्रवाहिता का जीवंत प्रतीक। वैज्ञानिक दृष्टि से, मानसूनोत्तर संक्रमण काल में आयुर्वेद त्रिफला सेवन, शारीरिक शोधन और व्यायाम की सिफारिश करता है; धन्वंतरि पूजा इसी स्वास्थ्य क्रांति का सांस्कृतिक अवतार बन उठती है। आधुनिक शोध वायु शुद्धिकरण में दीपों की भूमिका और सफाई के एंटी-बैक्टीरियल प्रभाव को प्रमाणित करते हैं, जो प्राचीन बुद्धिमत्ता की प्रासंगिकता को उजागर करता है। आधुनिक भौतिकता के कुशासन में धनतेरस हमें ठहरने और चिंतन का अवसर देता है—सच्चा धन संचय नहीं, सहयोग और संतोष है। हिंदू लक्ष्मी-आराधना, जैन आत्म-चिंतन या बहुधार्मिक एकता से, यह पर्व भौतिक-अध्यात्म के मिलन को प्रज्ज्वलित करता है। ऐतिहासिक गाथाओं से वैज्ञानिक प्रज्ञा तक, धनतेरस प्राचीन भारत की अमर ज्योति है—जो स्वास्थ्य, समृद्धि और शुभता की त्रिवेणी बांधती है। यह उत्सव सोने की क्षणभंगुर चमक से परे, आत्मा की स्वर्णिम विजय का महाकाव्य है, जो पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

यहाँ दिवाली क्यों नहीं मनाई जाती ?

चंद्र मोहन

दिल्ली से 30-35 किलोमीटर दूर उत्तर प्रदेश, ग्रेटर नॉएडा का एक गांव है बिसरख जलालपुर जहाँ के लोग दिवाली नहीं मनाते क्योंकि वे खुद को रावण के वंशज मानते हैं. उनका मानना है कि उनका गांव रावण के पिता 'विश्रवा' से आया है और रावण का जन्म यहीं हुआ था, इसलिए वे उसकी हार का जश्न नहीं मना सकते. इसके बजाय वे दशहरा जैसे त्योहारों में रावण की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करते हैं और उसकी आत्मा को मुक्ति दिलाने के लिए पूजा-अर्चना में शामिल होते हैं.

वंशावली का दावा - गांव के लोगों का मानना है कि यह स्थान रावण के पिता विश्रवा से जुड़ा है, और रावण का जन्म भी यहीं हुआ था.

रावण के प्रति सम्मानः क्योंकि वे रावण को अपना पूर्वज मानते हैं, वे उसके पुतले जलाने का विरोध करते हैं और इसके बजाय उसके पतन का जश्न मनाने के बजाय उसके लिए प्रार्थना करते हैं.

परंपरागत उत्सवों से दूरी - इस वजह से वे दीवाली और दशहरा जैसे त्योहारों के दौरान परंपरागत उत्सवों में भाग नहीं लेते हैं.

अनहोनी का डर - कुछ ग्रामीणों का यह भी मानना है कि अगर कोई त्योहार मनाने की कोशिश करता है तो अनहोनी हो सकती है जैसे कि लोग बीमार पड़ जाते हैं.

गांव के बुजुर्ग बताते है कि बिसरख गांव का जिक्र शिवपुराण में भी किया गया है. कहा जाता है कि त्रेता युग में इस गांव में ऋषि विश्रवा का जन्म हुआ था. इसी गांव में उन्होंने शिवलिंग की स्थापना की थी. उन्हीं के घर रावण का जन्म हुआ था. अब तक इस गांव में 25 शिवलिंग मिल चुके हैं. एक शिवलिंग की गहराई इतनी है कि खुदाई के बाद भी उसका कहीं छोर नहीं मिला है. ये सभी अष्टभुजा के हैं.

गांव के लोगों का कहना है कि रावण को पापी रूप में प्रचारित किया जाता है जबकि वह बहुत तेजस्वी, बुद्धिमान, शिवभक्त, प्रकाण्ड पण्डित और क्षत्रिय गुणों से युक्त थे. जब देशभर में जहां दशहरा असत्य पर सत्य की और बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, वहीं रावण के पैतृक गांव बिसरख में इस दिन उदासी का माहौल रहता है. दशहरे के त्योहार को लेकर यहां के लोगों में कोई खास उत्साह नहीं है. इस गांव में शिव मंदिर तो है, लेकिन भगवान राम का कोई मंदिर नहीं है.

गांव बिसरख में न रामलीला होती है और न ही रावण दहन किया जाता है. यह परंपरा सालों से चली आ रही है. मान्यता यह भी है कि जो यहां कुछ मांगता है, उसकी मुराद पूरी हो जाती है. इसलिए साल भर देश के कोने-कोने से यहां आने-जाने वालों का तांता लगा रहता है. रावण के मंदिर को देखने के लिए लोगो यहां आते रहते है.

बिसरख गांव के मध्य स्थित इस शिव मंदिर को गांव वाले रावण का मंदिर के नाम से जाना जाता है. नोएडा के शासकीय गजट में रावण के पैतृक गांव बिसरख के साक्ष्य मौजूद नजर आते हैं. गजट के अनुसार बिसरख रावण का पैतृक गांव है और लंका का सम्राट बनने से पहले रावण का जीवन यहीं गुजरा था. इस गांव का नाम पहले विश्वेशरा था, जो रावण के पिता विश्वेशरा के नाम पर पड़ा है. कालांतर में इसे बिसरख कहा जाने लगा.

बिसरख गांव में दशहरे की अलग परंपरा है, जो अन्य गांवों और शहरों से भिन्न है. यहां रावण की पूजा और सम्मान किया जाता है, न कि उनकी निंदा। गांव के लोग इस अनोखी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए रावण की महानता और उनके विद्वता को याद करते हैं, साथ ही उनकी आत्मा की शांति के लिए यज्ञ करते हैं।

लोकप्रिय चेहरों के पर्दे में छुपे विकास के सवाल

गंगा के किनारे बिहार की मिट्टी में सियासत का बीज बोया जा रहा है, लेकिन इस बार बीज में चमकते सितारों की धूल झोंक दी गई है—भोजपुरी ठुमरियों की लहरों से लेकर आइटम डांस की चकाचौंध तक। कल्पना कीजिए, विधानसभा का मंच अब सिल्वर स्क्रीन का विस्तार बन गया है—एक तरफ लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) की सीमा सिंह, भोजपुरी सिनेमा की 'क्वीन ऑफ आइटम', मढ़ौरा की धूल भरी सड़कों पर उतर रही हैं; दूसरी तरफ भाजपा की मैथिली ठाकुर, मिथिला के मधुर स्वरों की धनी, अलीनगर के जातिगत जाल में फँसने को तैयार। ये नाम न सिर्फ टिकटों की सूची में चमक रहे हैं, बल्कि पूरे चुनावी परिदृश्य को हिला रहे हैं। एनडीए की २४३ सीटों की पूरी सूची, भाजपा-जेडीयू को 101-101, एलजेपी (आरवी) को २९, में ये चेहरे सांस्कृतिक हथियार के रूप में उभरे हैं। विपक्ष महागठबंधन अभी सीटों की बाजीगरी में उलझा है, लेकिन एनडीए की यह चाल साफ संकेत दे रही है—वोटों की जंग अब नीतियों से ज्यादा नाच-गाने की हो चुकी है। सवाल गूंज रहा है—क्या ये स्टार कैंडिडेट्स बिहार के जख्मदारों की आवाज बन पाएंगे, या फिर चुनावी तमाशे का एक और अध्याय साबित होंगे, जहाँ जीत के बाद चेहरे गायब हो जाते हैं?

यह ट्रेंड बिहार की राजनीति का नया अध्याय नहीं, बल्कि पुरानी किताब का दोहराव है। पार्टियाँ ख्याति प्राप्त चेहरों को उतार रही हैं, जिनका राजनीति से वास्तविक जुड़ाव कभी न के बराबर रहा। सीमा सिंह, जिनकी भोजपुरी फिल्मों में ' चोली चिलाता चाहूं चाहूं' जैसे गाने लाखों दिलों पर छाए, अब मढ़ौरा से मैदान संभालेंगी। सारण जिले की यह सीट भोजपुरी संस्कृति का गढ़ है, जहाँ युवा पीढ़ी सिनेमा से अपनी पहचान जोड़ती है। एलजेपी का दावा है कि सीमा महिलाओं और नौजवानों को जोड़ेंगी, महिला सशक्तिकरण और विकास के मुद्दों पर लड़ेंगी। लेकिन उनके राजनीतिक अनुभव का अभाव सवाल खड़ा करता है—क्या स्टेज की लाइट्स विधानसभा की बहसों में बदल पाएंगी? पार्टी ने चार महिलाओं को टिकट देकर लिंग समावेशिता का झंडा लहराया है, लेकिन जमीनी हकीकत क्या कहती है? इसी तरह, मैथिली ठाकुर—जिन्होंने 'राम भजन' जैसे गीतों से पीएम मोदी का दिल जीता—भाजपा में एक दिन पहले शामिल होकर अलीनगर से टिकट पा लीं। दरभंगा का यह क्षेत्र मैथिली परंपराओं और जाति समीकरणों का केंद्र है। ठाकुर की सॉफ्ट इमेज से पार्टी मिथिला वोटबैंक को मजबूत करना चाहती है। भाजपा की स्टार कैंपेनर्स में पवन सिंह, निरहुआ जैसे भोजपुरी सितारे शामिल हैं, जो प्रचार की आग को भड़काएंगे। महागठबंधन की ओर से खेसारी लाल यादव जैसे नामों की अफवाहें हैं। लेकिन यह सब उद्देश्यपूर्ण लगता है—सोशल मीडिया के दौर में एक वायरल वीडियो करोड़ों वोट जुटा सकता है।

तर्क की नजर से देखें तो यह रणनीति सतही है। बिहार, जहाँ बेरोजगारी दर 14.5 प्रतिशत है, बाढ़ से हर साल 10 लाख हेक्टेयर फसल बर्बाद होती है, और 30 लाख से ज्यादा युवा पलायन पर मजबूर हैं, वहाँ सांस्कृतिक अपील कितनी कारगर? पार्टियाँ जानती हैं कि भोजपुरी सिनेमा राज्य की नसों में दौड़ता है—यह गरीबी, प्रेम और संघर्ष की कहानियाँ बुनता है, जो जनता की भावनाओं से गहराई से जुड़ी हैं। सीमा सिंह जैसे कलाकार इन फिल्मों से करोड़ों तक पहुँचते हैं, ठाकुर मिथिला की लोककथाओं को जीवंत करती हैं। एनडीए का 'बिहार फर्स्ट' नारा इसी सांस्कृतिक चमक से चमक रहा है। लेकिन जमीनी कार्यकर्ताओं के लिए यह कितना न्यायोचित? वे वर्षों से गलियों में पसीना बहाते हैं, जनसमस्याएँ सुलझाते हैं—बिजली, पानी, सड़क के लिए घर-घर घूमते हैं। एक रात में स्टार कैंडिडेट टिकट लेकर आ जाए, तो उनकी मेहनत पर पानी फिर जाता है। कार्यकर्ताओं में असंतोष है; एक सर्वे बताता है कि 70 प्रतिशत से ज्यादा मानते हैं कि सेलिब्रिटी टिकट पार्टी की एकता तोड़ते हैं। इतिहास गवाह है—२०१० में शत्रुघ्न सिन्हा जैसे नाम आए, लेकिन विधानसभा में स्थायी असर नहीं। प्रीतम शरणू या अन्य भोजपुरी कलाकार जीतकर भी क्षेत्र से गायब हो गए। २०२० चुनावों में कई स्टार हारे, जीतने वाले भी सुर्खियों से बाहर। उत्तर प्रदेश में गोविंदा की हार, महाराष्ट्र में रवीना टंडन का छोटा राजनीतिक सफर—ये उदाहरण चेतावनी हैं।

इस रणनीति के पीछे का उद्देश्य स्पष्ट है: पारंपरिक प्रचार से ऊबे मतदाताओं को ताजगी देना। युवा, जो सिनेमा और संगीत से जुड़े हैं, वोटिंग में हिस्सा लेंगे। महिलाओं के टिकट, एनडीए के ३५, से लिंग समानता का संदेश जाता है। सोशल मीडिया पर ये चेहरे वायरल होकर पार्टी की रीच बढ़ाते हैं। लेकिन तर्कसंगत विश्लेषण में खामियाँ साफ हैं। पहला, लोकप्रियता अस्थायी—चुनाव बाद कैमरे बंद, कलाकार स्टूडियो लौट जाते हैं। विधायक का काम बजट पास करना, विकास योजनाएँ लागू करना है; बिना अनुभव के यह कैसे? दूसरा, जातिगत जोखिम—अलीनगर में मुस्लिम-यादव वोटर, ठाकुर की मैथिली अपील कैसे काम करेगी? मढ़ौरा में यादव-रॉय समुदाय, विपक्ष आरजेडी इसका फायदा उठाएगा। तीसरा, लोकतंत्र की गुणवत्ता पर असर—जमीनी नेता स्थानीय मुद्दों से वाकिफ होते हैं, स्टार नहीं। यह अवसरवाद को बढ़ावा देता है, भ्रष्टाचार को आमंत्रित करता है। जमीनी कार्यकर्ता ही पार्टी की रीढ़ हैं; उनकी अनदेखी से आधार कमजोर होता है। पार्टियों को चाहिए—स्टार्स को ट्रेनिंग दें, मुद्दों से जोड़ें, कार्यकर्ताओं को महत्व दें। फिर भी, सकारात्मक पहलू हैं। यह युवाओं को राजनीति से जोड़ सकता है, सांस्कृतिक विविधता को मुख्यधारा में ला सकता है। बिहार का मतदाता अब जागरूक है—वह नाच-गाने पर नहीं, वादों की सच्चाई पर वोट देगा। सड़कें, स्कूल, रोजगार ही असली मुद्दे हैं। अगर सीमा और मैथिली इन पर खरी उतरें, तो क्रांति रचेंगी; वरना, चुनावी मंच की धूल बनेंगी। बिहार की सियासत को चाहिए संतुलन—चमक के साथ पदार्थ। जमीनी कार्यकर्ताओं की ताकत पहचानें, तभी लोकतंत्र मजबूत होगा। यह चुनाव बिहार के भविष्य का फैसला करेगा—चमक-दमक की कैद से निकलकर विकास की उड़ान भरे। जनता की नजरें हैं, और वह कभी धोखा नहीं खाती। बिहार जागेगा, तो नया सवेरा होगा।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

समृद्ध का एहसास कराता है धनतेरस

रमेश सर्राफ धमोरा

धनतेरस का त्योहार दीपावली पर्व के प्रारम्भ को दर्शाता करता है। धनतेरस पूजा को धनत्रयोदशी के नाम से भी जाना जाता है। धनतेरस के दिन नई वस्तुएं खरीदना शुभ माना जाता है। यह त्योहार लोगों के जीवन में समृद्धि और स्वास्थ्य लाने के लिए माना जाता है और इसलिए इसे बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। धनतेरस के दिन चांदी खरीदने की भी प्रथा है। अगर सम्भव न हो तो कोई बर्तन खरीदे। इसके पीछे यह कारण माना जाता है कि यह चन्द्रमा का प्रतीक है जो शीतलता प्रदान करता है और मन में सन्तोष रूपी धन का वास होता है।

धनतेरस का दिन धन्वन्तरी त्रयोदशी या धन्वन्तरि जयन्ती भी होती है। धनतेरस को आयुर्वेद के देवता का जन्म दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन गणेश लक्ष्मी घर लाएं जाते है। इस दिन लक्ष्मी और कुबेर की पूजा के साथ-साथ यमराज की भी पूजा की जाती है। पूरे वर्ष में एक मात्र यही वह दिन है जब मृत्यु के देवता यमराज की पूजा की जाती है। यह पूजा दिन में नहीं की जाती अपितु रात्रि होते समय यमराज के निमित्त एक दीपक जलाया जाता है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार ऐसा माना जाता है कि धनतेरस के दौरान अपने घर में 13 दीये जलाना चाहिए और अच्छे स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। जिसमें से सबसे पहले दक्षिण दिशा में यम देवता के लिए और दूसरा धन की देवी मां लक्ष्मी के लिए जलाना चाहिए। इसी तरह दो दीये अपने घर के मुख्य द्वार पर एक दीया तुलसी महारानी के लिए एक दीया घर की छत पर और बाकी दीये घर के अलग-अलग कोने में रख देने चाहिए। माना जाता है कि यह 13 दीये नकारात्मक ऊर्जा और बुरी आत्माओं से रक्षा करते हैं।

धनतेरस के दिन यमराज को प्रसन्न करने के लिए यमुना स्नान भी किया जाता है अथवा यदि यमुना स्नान सम्भव न हो तो स्नान करते समय यमुना जी का स्मारण मात्र कर लेने से भी यमराज प्रसन्न होते हैं। हिन्दु धर्म की ऐसी मान्यता है कि यमराज और देवी यमुना दोनों ही सूर्य की सन्ताने होने से आपस में भाई-बहिन हैं और दोनों में बड़ा प्रेम है। इसलिए यमराज यमुना का स्नान करके दीपदान करने वालों से बहुत ही ज्यादा प्रसन्न होते और उन्हें अकाल मृत्यु के दोष से मुक्त कर देते है।

धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस दिन का विशेष महत्व है। शास्त्रों में कहा है कि जिन परिवारों में धनतेरस के दिन यमराज के निमित्त दीपदान किया जाता है। वहां अकाल मृत्यु नहीं होती। घरों में दीपावली की सजावट भी इसी दिन से प्रारम्भ होती है। इस दिन घरों को लीप-पोतकर, चौक में रंगोली बनाकर सायंकाल के समय दीपक जलाकर लक्ष्मी जी का आवाहन किया जाता है। इस दिन पुराने बर्तनों को बदलना व नए बर्तन खरीदना शुभ माना गया है। धनतेरस को चांदी के बर्तन खरीदने से तो अत्यधिक पुण्य लाभ होता है। इस दिन कार्तिक स्नान करके प्रदोष काल में घाट, गौशाला, कुआं, बावड़ी, मंदिर आदि स्थानों पर तीन दिन तक दीपक जलाना चाहिए।

धनतेरस के दिन यम के लिए आटे का दीपक बनाकर घर के मुख्य द्वार पर रखा जाता हैं। इस दीप को यमदीवा अर्थात यमराज का दीपक कहा जाता है। रात को घर की स्त्रियां दीपक में तेल डालकर नई रूई की बत्ती बनाकर, चार बत्तियां जलाती हैं। दीपक की बत्ती दक्षिण दिशा की ओर रखनी चाहिए। जल, रोली, फूल, चावल, गुड़, नैवेद्य आदि सहित दीपक जलाकर स्त्रियां यम का पूजन करती हैं। चूंकि यह दीपक मृत्यु के नियन्त्रक देव यमराज के निमित्त जलाया जाता है, अतः दीप जलाते समय पूर्ण श्रद्धा से उन्हें नमन तो करें। साथ ही यह भी प्रार्थना करें कि वे आपके परिवार पर दया दृष्टि बनाए रखें और किसी की अकाल मृत्यु न हो। धनतेरस की शाम घर के बाहर मुख्य द्वार पर और आंगन में दीप जलाने की प्रथा भी है।

धनतेरस को मृत्यु के देवता यमराज जी की पूजा करने के लिए संध्या के समय एक वेदी (पाट्टा) पर रोली से स्वास्तिक बनाइये। उस स्वास्तिक पर एक दीपक रखकर उसे प्रज्वलित करें और उसमें एक छिद्रयुक्त कोड़ी डाल दें। अब इस दीपक के चारों ओर तीन बार गंगा जल छिडकें। दीपक को रोली से तिलक लगाकर अक्षत और मिष्ठान आदि चढाएं। इसके बाद इसमें कुछ दक्षिणा आदि रख दीजिए जिसे बाद में किसी ब्राह्मण को दे देवें। अब दीपक पर कुछ पुष्पादि अर्पण करें। इसके बाद हाथ जोडकर दीपक को प्रणाम करें और परिवार के प्रत्येक सदस्य को तिलक लगाएं। अब इस दीपक को अपने मुख्य द्वार के दाहिनी और रख दीजिए। यम पूजन करने के बाद अन्त में धनवंतरी पूजा करें।

इस प्रथा के पीछे एक लोक कथा है। कथा के अनुसार किसी समय में एक राजा थे जिनका नाम हेम था। दैव कृपा से उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। ज्योतिषियों ने जब बालक की कुण्डली बनाई तो पता चला कि बालक का विवाह जिस दिन होगा उसके ठीक चार दिन के बाद वह मृत्यु को प्राप्त होगा। राजा इस बात को जानकर बहुत दुखी हुआ और उन्होने राजकुमार को ऐसी जगह पर भेज दिया जहां किसी स्त्री की परछाई भी न पड़े। दैवयोग से एक दिन एक राजकुमारी उधर से गुजरी और दोनों एक दूसरे को देखकर मोहित हो गये और उन्होंने गन्धर्व विवाह कर लिया।

विवाह के पश्चात विधि का विधान सामने आया और विवाह के चार दिन बाद यमदूत उस राजकुमार के प्राण लेने आ पहुंचे। जब यमदूत राजकुमार प्राण ले जा रहे थे उस वक्त उसकी नवविवाहिता पत्नी का विलाप सुनकर उनका हृदय भी द्रवित हो उठा। परन्तु विधि के अनुसार उन्हें अपना कार्य करना पड़ा। यमराज को जब यमदूत यह कह रहे थे उसी वक्त उनमें से एक ने यमदेवता से विनती की। हे यमराज क्या कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे मनुष्य अकाल मृत्यु के लेख से मुक्त हो जाए। दूत के इस प्रकार अनुरोध करने से यमदेवता बोले हे दूत अकाल मृत्यु तो कर्म की गति है। इससे मुक्ति का एक आसान तरीका मैं तुम्हें बताता हूं सो सुनो। कार्तिक कृष्ण पक्ष की रात जो प्राणी मेरे नाम से पूजन करके दीप माला दक्षिण दिशा की ओर भेट करता है। उसे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता है। यही कारण है कि लोग इस दिन घर से बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाकर रखते हैं।

ॐ धन्वंतराये नमः धन्वंतरि मंत्र है। इस मंत्र का जाप रोगों से मुक्ति और अच्छे स्वास्थ्य के लिए किया जाता है। चूंकि यह समृद्धि का त्योहार है इसलिए लोग अपने घरों को भी साफ करते हैं। उन्हें एक नया रंग देते हैं और कई तरह से सजाते हैं। धनतेरस हर किसी को समृद्ध और अच्छे स्वास्थ्य का एहसास कराता है। दीपावली धन से ज्यादा स्वास्थ्य और पर्यावरण पर आधारित त्योहार है। दीपावली एक ऐसा त्योहार है जिसके अपने पर्यावरणीय निहितार्थ है। मौसम मे बदलाव और दीपपर्व मे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसे समझते हुए कृपया दीपावली परपर्यावरण को नुकसान पहुचाने वाली गतिविधिया ना करे।

बिहार में चुनावी भाषणों का स्तर — उठेगा या और गिरेगा ?

शम्भू शरण सत्यार्थी

कभी राजनीति विचारों का उत्सव हुआ करती थी। नेताओं के भाषणों में न केवल मत मांगने की भाषा होती थी बल्कि जनता को सोचने, समझने और जागरूक होने का निमंत्रण भी होता था।

वो दौर था जब एक नेता का भाषण लोकशिक्षा का माध्यम होता था

जहाँ नारे नहीं, तर्क गूँजते थे;

जहाँ आवाज़ ऊँची नहीं, विचार ऊँचे होते थे।

आज वही राजनीति, जो समाज को दिशा देती थी, अब मनोरंजन का साधन बन चुकी है।

बिहार की चुनावी ज़मीन, जो कभी राजनीतिक चेतना और विचारधारा का केंद्र हुआ करती थी,

आज शोरगुल, कटाक्ष और सोशल मीडिया की त्वरित तालियों में खो गई है।

1962 का उदाहरण हमें यह याद दिलाता है कि

राजनीति में असहमति का अर्थ कभी दुश्मनी नहीं था।

जब पंडित नेहरू और डॉ. लोहिया आमने-सामने थे,

तो भी दोनों के भाषणों में सम्मान की भाषा थी।

नेहरू ने कहा था —राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हैं पर यदि कोई मुझसे पूछे कि वोट किसे दूँ तो निस्संदेह मैं लोहिया को ही दूँगा। सोचिए — आज के दौर में ऐसा उदार दृष्टिकोण कितना दुर्लभ है ! आज तो राजनीति का अर्थ ही "हम बनाम वो" हो गया है

जहाँ बहस की जगह आरोप हैं और विचारों की जगह शब्दों के वार।

1962 से लेकर अब तक, राजनीति की गंगा में बहुत पानी बह चुका है लेकिन उस पानी के साथ-साथ मर्यादा की धारा भी सूखती चली गई। नेताओं के भाषण अब समाज को जोड़ने के बजाय बाँटने लगे हैं।

जहाँ कभी जयप्रकाश नारायण संपूर्ण क्रांति की बात करते थे, वहीं अब कुछ नेता संपूर्ण चरित्र हनन को राजनीति का शस्त्र बना चुके हैं।

टेलीविज़न और सोशल मीडिया के युग में, भाषण अब विचार नहीं बल्कि प्रदर्शन बन गए हैं। नेता अब जनता से संवाद नहीं करते. वो मंच से 'कंटेंट' परोसते हैं जिसे अगले दिन व्हाट्सऐप और ट्विटर पर वायरल किया जा सके।

बिहार कभी समाजवादी चिंतन का केंद्र रहा। लोहिया, जेपी, कर्पूरी ठाकुर और बाद में लालू प्रसाद यादव जैसे नेताओं ने राजनीति को जनाधिकार की लड़ाई से जोड़ा लेकिन धीरे-धीरे, वही राजनीति वर्गीय चेतना से हटकर वोट की गणित में सिमट गई। अब भाषणों में न नीति बची, न दृष्टि। विकास, शिक्षा, कृषि, रोजगार — ये सब विषय भाषण के शुरुआती पंद्रह सेकंड तक सीमित रहते हैं और फिर शुरू हो जाती है व्यक्तिगत छींटाकशी, जातीय समीकरण और विरोधी को नीचा दिखाने की होड़।

हम यह नहीं भूल सकते कि राजनीति समाज का दर्पण है। अगर भाषणों का स्तर गिरा है तो उसमें जनता की भी भूमिका है क्योंकि नेता वही बोलता है जो जनता सुनना चाहती है। जब भीड़ ताली उन शब्दों पर बजाती है जिनमें अपशब्द या व्यंग्य होता है

तो नेता उसी दिशा में आगे बढ़ता है। जब जनता को तथ्यों की जगह तुकबंदी पसंद आने लगती है तो राजनीति का संवाद लोकशिक्षा से लोकलुभावन बन जाता है। इसलिए, राजनीति का स्तर तभी उठेगा जब जनता अपनी अपेक्षाओं का स्तर उठाएगी।

मतदाता अगर यह ठान लें कि उन्हें केवल नारे नहीं, काम चाहिए —तो नेता की भाषा अपने आप सुधर जाएगी।

आज के दौर में भाषण का अर्थ 'सोशल मीडिया क्लिप' बन गया है। एक मिनट का वायरल वीडियो ही नेता की छवि तय कर देता है। भाषण अब जनसंवाद नहीं, डिजिटल ब्रांडिंग का उपकरण है। अब नेताओं को अपने शब्दों की गहराई से ज़्यादा उसकी "क्लिप वैल्यू" की चिंता होती है। कैसे बोलें कि लोग वीडियो शेयर करें, कैसे कटाक्ष करें कि न्यूज़ चैनल उसे हेडलाइन बना दे। इस चक्कर में भाषा का सौंदर्य, संयम और मर्यादा — सब खो जाते हैं।कभी भारत की राजनीति में वैचारिक गरमाहट हुआ करती थी । समाजवाद, पूंजीवाद, धर्मनिरपेक्षता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था —इन पर रात-रात भर बहस होती थी।

अब वही राजनीति मीम्स, जोक और ट्रोलिंग तक सीमित है। राजनीतिक दलों के पास अब न कोई ठोस विचारधारा है, न कोई दीर्घकालिक दृष्टि। हर भाषण बस अगले चुनाव तक टिकने के लिए गढ़ा जाता है।

यह अल्पकालिक दृष्टि ही राजनीति को खोखला बना रही है। फिर भी उम्मीद खत्म नहीं हुई है। बिहार का मतदाता, भले ही गरीबी, बेरोज़गारी और पलायन से जूझ रहा हो पर उसकी राजनीतिक समझ आज भी पूरे देश में मिसाल है। वह नेता की भाषा को केवल सुनता नहीं, परखता भी है। उसके दिल में अभी भी लोहिया और जेपी की चेतना कहीं न कहीं जिंदा है।

अगर आने वाले चुनावों में कोई नेता शालीनता, तर्क और नीति के साथ जनता से बात करेगा तो बिहार का मतदाता उसे ज़रूर सुनेगा क्योंकि यहाँ जनता भावुक हो सकती है, पर बेवकूफ नहीं। आज वक्त है कि नेता अपने भाषणों को केवल वोट बटोरने का साधन न मानें बल्कि मूल्यों के प्रचार का माध्यम बनाएं। राजनीति का अर्थ विरोधी को नीचा दिखाना नहीं बल्कि अपनी नीति को ऊँचा उठाना होना चाहिए।

यदि नेता अपने भाषणों में —तथ्य रखेंगे, सभ्यता बनाए रखेंगे और युवाओं को प्रेरित करने वाली भाषा अपनाएँगे तो राजनीति फिर उसी ऊँचाई पर पहुँच सकती है जहाँ यह कभी थी। आज का युवा केवल नारे नहीं चाहता। वह जवाब चाहता है, योजना चाहता है, पारदर्शिता चाहता है। उसके सामने आज दुनिया का हर ज्ञान मोबाइल पर है। वह जानता है कि नेता कब झूठ बोल रहा है और कब सच। इसलिए अगर नेता अब भी पुरानी शैली में 'वादा करो, तालियाँ बजाओ' वाला खेल खेलते रहेंगे तो नई पीढ़ी उन्हें गंभीरता से नहीं लेगी.

बिहार के चुनाव केवल सीटों की लड़ाई नहीं हैं. यह राजनीति की आत्मा की परीक्षा हैं. यह देखना होगा कि क्या नेता अपनी भाषा में गरिमा, संयम और आदर्श वापस ला पाते हैं या नहीं. अगर यह परिवर्तन हुआ तो यह केवल चुनाव की जीत नहीं बल्कि लोकतंत्र की पुनर्स्थापना होगी क्योंकि लोकतंत्र केवल संस्थानों से नहीं, भाषा और व्यवहार की शालीनता से भी जिंदा रहता है.

बिहार की राजनीति अगर अपनी भाषा सुधार ले तो देश की राजनीति को भी नई दिशा मिल सकती है.

अब देखना यह है —इस चुनाव में राजनीति बोलेगी या राजनीति चीखेगी ? क्या बिहार के मंचों से फिर वही गरिमामयी आवाज़ें उठेंगी जो कभी समाज को जगाती थीं या फिर यह दौर और नीचे गिर जाएगा ?

(लेखक सामाजिक विश्लेषक एवं स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

रूप चतुर्दशी : आंतरिक सुंदरता और सकारात्मक ऊर्जा

उमेश कुमार साहू

दीपावली से ठीक एक दिन पहले आने वाला रूप चतुर्दशी या नरक चतुर्दशी केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि का उत्सव भी है। इस दिन को छोटी दिवाली और काली चतुर्दशी के नाम से भी जाना जाता है। जहाँ दीपावली धन और समृद्धि का प्रतीक है, वहीं रूप चतुर्दशी स्वास्थ्य, सौंदर्य और आत्मसंवर्धन का प्रतीक पर्व माना गया है। इस तिथि का उल्लेख स्कंद पुराण, पद्म पुराण और भविष्य पुराण में मिलता है। कहा गया है कि इस दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर तेल स्नान, उबटन, और शुद्धिकरण के बाद भगवान विष्णु, श्रीकृष्ण और यमराज की आराधना करने से व्यक्ति के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं तथा जीवन में नई ऊर्जा और प्रकाश का संचार होता है।

नरकासुर से मुक्ति का प्रतीक पर्व

पुराणों के अनुसार, द्वापर युग में राक्षस नरकासुर ने पृथ्वी पर आतंक मचा रखा था। उसने सोलह हजार कन्याओं को कैद कर रखा था। तब भगवान श्रीकृष्ण ने कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन उसका वध कर उन्हें मुक्त कराया। इसलिए यह दिन नरक चतुर्दशी कहलाया। अर्थात "अंधकार और पाप रूपी नरक से मुक्ति का दिन।" इसीलिए परंपरा है कि इस दिन अंधकार, आलस्य और नकारात्मकता को जीवन से दूर कर प्रकाश और स्वच्छता को अपनाया जाए।

दरिद्रा देवी की कथा और शुद्धता का संदेश

एक अन्य लोककथा के अनुसार, देवी लक्ष्मी की बड़ी बहन दरिद्रा दरिद्रता और गंदगी की अधिष्ठात्री मानी जाती हैं। जब घर में कूड़ा-कचरा, अव्यवस्था और मैल होता है, तब दरिद्रा वहाँ निवास करती हैं। इसीलिए रूप चतुर्दशी के दिन घर की सफाई कर कूड़े के स्थान पर दीपक जलाया जाता है, जिससे दरिद्रा का सम्मानपूर्वक निरसन होता है। यह परंपरा केवल धार्मिक कर्म नहीं बल्कि साफ-सुथरे वातावरण और सकारात्मक ऊर्जा का वैज्ञानिक संदेश भी देती है। जब घर स्वच्छ होता है, तब न केवल देवी लक्ष्मी का आगमन होता है, बल्कि मन भी हल्का और प्रसन्न रहता है।

रूप और आंतरिक सौंदर्य का महत्व

इस दिन स्त्रियाँ विशेष रूप से उबटन और तिल के तेल से स्नान करती हैं। इसे "अभ्यंग स्नान" कहा जाता है। यह केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने का आयुर्वेदिक उपाय भी है। मान्यता है कि रूप चतुर्दशी पर स्नान और शृंगार करने से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं, और जो स्वयं की स्वच्छता व सज्जा का ध्यान रखता है, उसके जीवन में समृद्धि और आत्मविश्वास दोनों बढ़ते हैं। इसीलिए इसे "रूप चतुर्दशी" कहा गया, अर्थात सौंदर्य का दिव्य दिन।

यम दीपदान की परंपरा

रूप चतुर्दशी की शाम एक विशेष विधि का पालन किया जाता है यम दीपदान। घर का सबसे वरिष्ठ सदस्य संध्या समय एक दीपक प्रज्वलित कर पूरे घर में घुमाता है, और फिर उसे मुख्य द्वार या घर से थोड़ी दूरी पर रख देता है। इसे "यम दीया" कहा जाता है। विश्वास है कि यह दीपक यमराज को समर्पित होता है, जिससे परिवार को अकाल मृत्यु और रोगों से रक्षा मिलती है। साथ ही, घर में घुमाया गया यह दीपक बुरी शक्तियों को बाहर निकाल देता है। यह परंपरा प्रतीक है अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की, भय से विश्वास की ओर अग्रसर होने की।

आधुनिक दृष्टिकोण से रूप चतुर्दशी

अगर इस पर्व को आधुनिक नज़रिए से देखें तो यह दिन आत्म-देखभाल (self-care) का भी पर्व है। सालभर की व्यस्तता और थकान के बीच यह दिन हमें याद दिलाता है कि अपना ध्यान रखना भी एक प्रकार की पूजा है। शरीर और मन दोनों को शुद्ध रखकर जब व्यक्ति पूजा करता है, तो उसकी प्रार्थना और अधिक प्रभावशाली बनती है। दरअसल, रूप चतुर्दशी केवल बाहरी सौंदर्य का पर्व नहीं, बल्कि आंतरिक सौंदर्य की साधना का दिन है, जहाँ आत्मा भी दीप की तरह उज्ज्वल हो उठती है।

पर्व का गूढ़ संदेश

रूप चतुर्दशी हमें सिखाती है कि -

स्वच्छता ही लक्ष्मी का पहला द्वार है।

स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।

और आंतरिक सुंदरता ही सच्चा रूप है।

जब मन, तन और घर तीनों पवित्र हो जाएँ, तभी दीपावली का प्रकाश सच्चे अर्थों में जीवन को आलोकित करता है।

कर्म और विचार हो पवित्र

रूप चतुर्दशी का वास्तविक अर्थ है - "अंधकार से सुंदरता की ओर, पाप से पवित्रता की ओर और दुर्भाव से दिव्यता की ओर यात्रा।" इस दिन दीपक केवल बाहर के अंधकार को नहीं मिटाते, बल्कि हमारे भीतर के अंधेरों को भी प्रकाशित करते हैं। इसलिए जब आप इस चतुर्दशी को मनाएँ, तो केवल दीप जलाएँ नहीं, बल्कि अपने भीतर के प्रकाश को भी जगाएँ। यही है रूप चतुर्दशी का सच्चा संदेश - "प्रकाश केवल दीप में नहीं, हमारे कर्मों और विचारों में भी झलके।"

भविष्य को खिलाना: निर्माण जलवायु प्रतिरोधी खाद्य प्रणाली

विजय गर्ग

इस प्रकार विश्व खाद्य दिवस 2025 का विषय ₹बेहतरीन भोजन और बेहतर भविष्य के लिए हाथ में हाथ₹ दोनों ही प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है। यह उन खाद्य प्रणालियों को स्थापित करने के लिए सभी सामाजिक स्तरों पर संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है जो उत्पादक, जलवायु प्रतिरोधी, समावेशी और टिकाऊ हों। भारत में और पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया में, इस संदेश का गहरा अर्थ है। इन क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर छोटे किसानों की सबसे अधिक घनत्व है, जो जलवायु उतार-चढ़ाव के कारण बढ़ती चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

संपादकीय

चिंतन-मनन

विश्वखाद्यदिवस 2025 को₹बेहतर खाद्य पदार्थों और बेहतर भविष्य के लिए हाथ से मिलकर मनाता है₹ विषय के तहत, यह आह्वान स्पष्ट है: केवल सामूहिक कार्रवाई - किसानों, नीति निर्माताओं, वैज्ञानिकों और समुदायों को जोड़कर ही हम कल एक स्थायी और भूख मुक्त जीवन सुनिश्चित कर सकते हैं

जलवायु परिवर्तन आज वैश्विक खाद्य सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। अप्रत्याशित बारिश, बढ़ते तापमान, सूखे की अवधि, बाढ़ और कीटों के आक्रमण कृषि प्रथाओं को बदल रहे हैं तथा उत्पादकता को कमजोर कर रहे हैं। ये प्रभाव समान रूप से वितरित नहीं होते; वे छोटे किसानों और सीमांत किसानों पर सबसे अधिक असर डालते हैं जो अपने जीवन के लिए सीधे मौसम और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) का कहना है कि आपदाओं से पिछले तीस वर्षों में फसल और पशुधन उत्पादन में लगभग 3.8 ट्रिलियन डॉलर की हानि हुई है, जो प्रति वर्ष औसतन लगभग 123 बिलियन डॉलर है। विशेष रूप से, एफएओ बताता है कि आपदाओं के परिणामस्वरूप कुल क्षति और नुकसान का लगभग 23 प्रतिशत हिस्सा कृषि क्षेत्र में होता है। इसका मतलब यह है कि आपदाओं से होने वाले सभी आर्थिक नुकसान का लगभग एक चौथाई हिस्सा सीधे उन लोगों को प्रभावित करता है जो हमारे भोजन का उत्पादन करते हैं।

इस प्रकार विश्व खाद्य दिवस 2025 का विषय ₹बेहतरीन भोजन और बेहतर भविष्य के लिए हाथ में हाथ₹ दोनों ही प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है। यह उन खाद्य प्रणालियों को स्थापित करने के लिए सभी सामाजिक स्तरों पर संयुक्त प्रयास की आवश्यकता है जो उत्पादक, जलवायु प्रतिरोधी, समावेशी और टिकाऊ हों। भारत में और पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया में, इस संदेश का गहरा अर्थ है। इन क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर छोटे किसानों की सबसे अधिक घनत्व है, जो जलवायु उतार-चढ़ाव के कारण बढ़ती चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) बताता है कि तापमान में वृद्धि और मानसून के बदलते पैटर्न 2050 तक दक्षिण एशिया में फसल की उपज को 10-30 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं, विशेष रूप से चावल और गेहूं - क्षेत्रीय खाद्य सुरक्षा के लिए दो आवश्यक तत्व। इसके अलावा, बाढ़ और सूखे की बढ़ती घटना से खाद्य मूल्य उतार-चढ़ाव और ग्रामीण कठिनाइयों में वृद्धि होने की उम्मीद है।

भारत में डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म वर्तमान में किसानों को पूर्वानुमानात्मक जलवायु डेटा, फसल सिफारिशें और बीमा विकल्पों से जोड़ रहे हैं। हालांकि, इन नवाचारों को समावेशी और सुलभ होने की आवश्यकता है - जो भारत के कृषि कार्यबल का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं सहित छोटे तथा सीमांत किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

इस संकट में भारत का एक बड़ा और विविध कृषि आधार अग्रणी है। हाल के वर्षों में, देश ने पूर्वोत्तर और उत्तरी मैदानों में बार-बार बाढ़ का अनुभव किया है, मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में सूखे हुए हैं, तथा कई राज्यों को प्रभावित करने वाली गर्मी की लहरें - जिसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन पर संयुक्त प्रभाव पड़ा है। 2023-24 मानसून के मौसम में महाराष्ट्र, कर्नाटक और तेलंगाना के कुछ क्षेत्रों में अपर्याप्त तथा अनियमित बारिश हुई है जिसके परिणामस्वरूप दाल और तेलों की फसलों में काफी नुकसान हुआ है। उत्तरी भारत में अप्रत्याशित बारिश ने गेहूं और बागवानी की फसलों को नुकसान पहुंचाया, जिससे पता चलता है कि अल्पकालिक जलवायु अनियमितताएं आजीविका बर्बाद कर सकती हैं।

विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की रिपोर्ट के अनुसार, 2015 से 2021 तक भारत में भारी बारिश के कारण लगभग 34 मिलियन हेक्टेयर फसल का नुकसान हुआ। ये आंकड़े देश के कृषि क्षेत्र पर चरम मौसम का महत्वपूर्ण प्रभाव दर्शाते हैं।

जलवायु सदमे अब भारत की अर्थव्यवस्था और समाज के लगभग हर पहलू को प्रभावित करते हैं, लेकिन उनके प्रभाव कृषि में सबसे अधिक स्पष्ट होते हैं, जो राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 15 प्रतिशत हिस्सा है तथा ग्रामीण परिवारों सहित लगभग 40 प्रतिशत आबादी के लिए आजीविका का समर्थन करता है। ये आंकड़े कृषि नीति और नियोजन ढांचे में जलवायु और आपदा प्रतिरोध को शामिल करने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। यह केवल किसानों की सुरक्षा का मामला नहीं है - यह देश की खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने के बारे में है।

कृषि क्षेत्र में लचीलापन का निर्माण हमारे विकास, वितरण और भोजन की खपत के तरीके का पुनः मूल्यांकन करने से शुरू होता है। जलवायु परिवर्तन का सामना करने वाली कृषि भविष्य की रणनीतियों का आधार होनी चाहिए। इसमें विभिन्न फसल प्रणालियां शामिल हैं, जिसमें प्रतिरोधी बीज प्रकारों को प्रोत्साहित किया जाता है, मिट्टी के स्वास्थ्य की वसूली में निवेश किया जाता है और एकीकृत जल प्रबंधन में सुधार किया जाता है। उदाहरण के लिए, पूर्वी भारत में सूखे प्रतिरोधी चावल और मिर्च का उपयोग करने से बारिश की उतार-चढ़ाव के कारण उपज में सुधार हुआ है। इसी तरह, सूक्ष्म सिंचाई और वर्षा जल संग्रह के तरीकों का उपयोग करके पानी की दक्षता में सुधार किया जा सकता है तथा सूखे की अवधि की संवेदनशीलता कम हो सकती है। इन प्रथाओं को सरकार के निरंतर समर्थन, किसान जागरूकता बढ़ाने और वित्तीय पुरस्कारों से बढ़ाया जाना चाहिए। इस परिवर्तन में प्रौद्योगिकी और नवाचार अपरिहार्य उपकरण हैं। रिमोट सेन्सिंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) में प्रगति अब किसानों को सूचित निर्णय लेने में मदद करने के लिए मौसम, मिट्टी की नमी और फसल स्वास्थ्य का वास्तविक समय ट्रैकिंग प्रदान करती है। स्थानीय शासन और विस्तार सेवाओं के साथ एकीकृत होने पर बाढ़ और सूखे की प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली नुकसान को काफी कम कर सकती है। भारत में डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म वर्तमान में किसानों को पूर्वानुमानात्मक जलवायु डेटा, फसल सिफारिशें और बीमा विकल्पों से जोड़ रहे हैं। हालांकि, इन नवाचारों को समावेशी और सुलभ होने की आवश्यकता है - जो भारत के कृषि कार्यबल का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं सहित छोटे तथा सीमांत किसानों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

भारत में डिजिटल कृषि प्लेटफॉर्म वर्तमान में किसानों को पूर्वानुमानात्मक जलवायु डेटा, फसल सिफारिशें और बीमा विकल्पों से जोड़ रहे हैं। हालांकि, इन नवाचारों को समावेशी और सुलभ होने की आवश्यकता है - जो भारत के कृषि कार्यबल का लगभग आधा हिस्सा महिलाओं सहित छोटे तथा सीमांत किसानों की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

इस वर्ष विश्व खाद्य दिवस का एक केंद्रीय विषय ₹हैंड इन हैंड₹ टीम वर्क के महत्व को उजागर करता है। खाद्य प्रणालियों की लचीलापन को एकांत में प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसमें किसानों, वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, वित्तीय संस्थाओं, निजी व्यवसायों और वैश्विक संगठनों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है। एफएओ की हाथ-हात पहल, जो कृषि परिवर्तन को तेज करने के लिए डेटा-सूचित और राष्ट्रीय नेतृत्व वाली साझेदारी को प्रोत्साहित करती है, एक लाभदायक ढांचा प्रदान करती है। भारत में यह रणनीति प्रधानमंत्री कृषि सिंचई योजना, परमपरागत कृषी विकास योजना और सतत कृषि पर राष्ट्रीय मिशन जैसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुरूप है जो सभी पारंपरिक कृषि विकास में स्थिरता और लचीलापन को शामिल करने पर केंद्रित हैं। नीतिगत स्तर पर, सरकारों को जोखिम-सूचित कृषि योजना को प्राथमिकता देनी चाहिए। कृषि और खाद्य सुरक्षा नीतियों, ग्रामीण बुनियादी ढांचे में निवेश और बाजार तक पहुंच पहल में जलवायु प्रतिरोध शामिल होना चाहिए। जलवायु और आपदा से संबंधित जोखिमों को संबोधित करने के लिए सामाजिक संरक्षण पहल - जैसे फसल बीमा, इनपुट सब्सिडी और खाद्य सुरक्षा नेटवर्क का विस्तार किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री फैसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) इस संबंध में एक महत्वपूर्ण पहल है, फिर भी इसमें शीघ्र क्षतिपूर्ति, स्पष्टता और छोटे तथा किरायेदार किसानों को शामिल करने की गारंटी के लिए निरंतर सुधार की आवश्यकता होती है।

नीति और प्रौद्योगिकी के अलावा, लचीलापन को मूल स्तर से विकसित किया जाना चाहिए - सशक्त समुदायों के माध्यम से। किसानों के स्व-सहायता समूह और सहकारी जोखिम प्रबंधन तथा अनुकूल कृषि विधियों में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। आपदाओं के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में, सामुदायिक और तैयारी योजनाएं शामिल प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली नुकसान को काफी कम कर सकती हैं। पंचायत और जिला स्तर पर कृषि सलाहकार सेवाओं में सुधार, साथ ही जलवायु-स्मार्ट कृषि प्रथाओं के प्रशिक्षण से स्थानीय क्षमताएं बढ़ सकती हैं। विशेष रूप से महिला किसानों को परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में मान्यता और समर्थन दिया जाना चाहिए। निर्णय लेने, संसाधन प्रबंधन और जलवायु अनुकूलन पहल में उनकी भागीदारी न केवल घरेलू खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देती है बल्कि कृषि प्रणालियों की स्थिरता को भी मजबूत करती है।

आगे का कार्य महान है, लेकिन यह असंभव नहीं है। भारत की कृषि क्रांति आशा का कारण देती है। जलवायु प्रतिरोधी फसलों के रूप में मिलेट का सरकार द्वारा समर्थन, प्राकृतिक कृषि के लिए बढ़ते उत्साह और डिजिटल कृषि पहलुओं की वृद्धि स्थिरता की ओर बड़ी प्रगति को दर्शाती है। इसी तरह ग्रामीण बुनियादी ढांचे, शीत भंडारण और मूल्य श्रृंखलाओं के लिए वित्तपोषण किसानों को अधिक लाभ प्राप्त करने और फसल के बाद नुकसान कम करने में सक्षम बना सकता है - लचीले खाद्य प्रणालियों का आवश्यक घटक।

वैश्विक स्तर पर, दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया को साझा खतरों से निपटने के लिए अनुसंधान, डेटा विनिमय और क्षमता विकास में सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। सहयोगात्मक क्षेत्रीय प्रयास अनुकूलन प्रौद्योगिकियों को तेज कर सकते हैं और प्रभावी प्रथाओं के साझाकरण को बढ़ावा दे सकते हैं। भारत अपनी वैज्ञानिक ज्ञान और संस्थागत शक्ति के माध्यम से एक बेंचमार्क स्थापित कर सकता है - राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा तथा क्षेत्र और विश्व दोनों के लिए जलवायु प्रतिरोधी कृषि को बढ़ावा देना। जैसा कि हम विश्व खाद्य दिवस 2025 का जश्न मना रहे हैं, यह रेखांकित करना महत्वपूर्ण है कि जलवायु परिवर्तन के बीच खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना केवल कृषि मुद्दा नहीं है; यह एक मानवीय, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकता है। इस कार्य के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण, सामंजस्यपूर्ण प्रयास और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एकजुटता। जब हम निर्णय निर्माताओं के साथ मिलकर काम करते हैं - किसान, विरासत के साथ विज्ञान, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ स्थानीय समुदाय - तो हम खाद्य प्रणालियां बना सकते हैं जो कुशल और मजबूत हों। भूख से मुक्त, जलवायु प्रतिरोधी भविष्य संभव है। यह इस बात से शुरू होता है कि हमारी मिट्टी, फसलों और किसानों की भलाई हमारे पृथ्वी के स्वास्थ्य से जुड़ी हुई है। इस विश्व खाद्य दिवस पर, आइए हम अपने भोजन और भविष्य दोनों को सुरक्षित रखने के लिए अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करें - एक साथ मिलकर।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार

बीमार भविष्य की नींव

विजय गर्ग

यह आंकड़ा हमारे शिक्षा तंत्र की विफलता को दर्शाता है कि एक लाख से अधिक स्कूलों की पढ़ाई सिर्फ एक शिक्षक के भरोसे चल रही है। एक स्कूल की सारी कक्षाओं को एक शिक्षक कैसे पढ़ाता होगा? छात्र-छात्राएं कैसी और कितनी शिक्षा ग्रहण कर पाते होंगे, अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। शिक्षा मंत्रालय के हालिया आंकड़े बताते हैं कि शैक्षणिक वर्ष 2024-25 में एक लाख चार हजार स्कूल ऐसे थे, जो केवल एक शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। इन स्कूलों में करीब पौने चौंतीस लाख विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। बताया जाता है कि आंध्र प्रदेश में ऐसे स्कूलों की संख्या सबसे ज्यादा थी, जबकि उसके बाद उत्तर प्रदेश, झारखंड, महाराष्ट्र, कर्नाटक और लक्षद्वीप का स्थान है। एक तो हमारे देश में शिक्षा का बजट पहले ही बहुत कम है, फिर उस धन का सही उपयोग नहीं हो पाता। इसमें दो राय नहीं कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के गिरते स्तर के मूल में हमारे नीति-नियंताओं की अनदेखी ही प्रमुख कारक है। आखिर हम अपने नौनिहालों को कैसी शिक्षा दे रहे हैं? आखिर उनके बेहतर भविष्य की हम कैसे उम्मीद करें? जाहिर बात है कि एक शिक्षक सामाजिक विषय, भाषा, विज्ञान, अंग्रेजी और गणित में माहिर नहीं हो सकता। एक शिक्षक छात्रों की हाजिरी दर्ज करेगा या पढ़ाई कराएगा? शिक्षा का मतलब छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। उन्हें पढ़ाई के साथ पाठ्यसहगामी क्रियाओं का भी ज्ञान दिया जाना जरूरी होता है। लेकिन जब स्कूलों में पर्याप्त शिक्षक ही नहीं होंगे तो किताबी पढ़ाई कैसी होगी, अंदाजा लगाना कठिन नहीं है। स्कूल में सिर्फ पढ़ाई ही महत्वपूर्ण नहीं होती। बच्चों का शारीरिक विकास पूरी तरह हो, उसके लिए खेल, पीटी और योग जैसी कक्षाओं की सख्त

जरूरत होती है। लेकिन जब शिक्षक ही पर्याप्त नहीं होंगे तो शिक्षा के साथ चलने वाली गतिविधियों की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती है। निस्संदेह, हम छात्रों के बीमार भविष्य की बुनियाद ही रख रहे हैं।

सही मायनों में स्कूलों का शिक्षकों की कमी से जूझना शिक्षा विभाग की नाकामी को ही दर्शाता है। यह हमारे सत्ताधीशों की संवेदनहीनता का भी पर्याय है। शिक्षकों की नियुक्ति में जिस बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार के मामले विभिन्न राज्यों में सामने आए हैं, उससे शिक्षा विभाग की प्रदूषित कार्य संस्कृति का बोध होता है। आखिर क्या वजह है कि देश में प्रशिक्षित शिक्षकों की पर्याप्त संख्या होने के बावजूद स्कूलों में शिक्षकों की कमी बनी हुई है। यह स्थिति हमारे तंत्र की विफलता को ही उजागर करती है। एक समस्या यह भी है कि शिक्षक जटिल भौगोलिक स्थितियों वाले स्कूलों में काम करने से कतराते हैं। यदि इन स्कूलों में शिक्षकों की नियुक्ति हो भी जाती है तो वे दुर्गम से सुगम स्कूलों में अपना तबादला ज्वाइन करने के तुरंत बाद करवा लेते हैं। जिसमें राजनीतिक हस्तक्षेप से लेकर विभागीय लेन-देन की भी शिकायत होती रहती है। यही वजह है कि शहरों व आसपास के इलाकों में स्थित स्कूलों में शिक्षकों की तैनाती जरूरत से ज्यादा भी देखी जाती है। कैसी दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि सड़कों पर बेरोजगारों की लाइन लगी हैं और स्कूलों में शिक्षकों के लाखों पद खाली हैं। बताया जाता है कि माध्यमिक व प्राथमिक विद्यालयों में करीब साढ़े आठ लाख शिक्षकों के पद खाली हैं। इसके बावजूद कि हमारे यहां प्रशिक्षित शिक्षकों की कोई कमी नहीं है। कहने को तो हमारे गाल बजाते नेता भारत को दुनिया में सबसे ज्यादा युवाओं का देश कहते इतराते हैं, लेकिन इन नेताओं से पूछा जाना चाहिए कि कुंठित होती युवा पीढ़ी के लिये उन्होंने क्या खास किया है? नौकरियों की भर्ती निकलती नहीं है। निकलती है तो पेपर आउट होने की खबरें आती हैं। सालों-साल उनके परिणाम नहीं निकलते। यदि परिणाम निकले भी तो फिर धांधली के आरोप लगने लग जाते हैं। फिर मामला वर्षों तक अदालतों में डोलता रहता है। विडंबना यह भी है कि आज सरकारी स्कूलों में गरीब व कमजोर वर्गों के बच्चे ज्यादा भर्ती होते हैं, इसलिए इन स्कूलों की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। यदि सरकारी अधिकारियों व कर्मचारियों के बच्चों के लिये इन स्कूलों में पढ़ना अनिवार्य कर दिया जाए तो स्थिति बदल जाएगी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

दीपावली के हर्षोल्लास संग रखें खानपान पर नियंत्रण और प्रदूषण से अपना बचाव करें

विजय गर्ग

दिवाली के पावन उत्सव को उल्लास के साथ मना लें और बाद में सेहत को लेकर कोई परेशानी भी न हो- इसके लिए कुछ एहतियात रखने व उपाय करने जरूरी हैं। खासकर खानपान पर नियंत्रण रखा जाए व प्रदूषण से अपना बचाव करें। वहीं पार्टी आदि में ओवरइटिंग न करें। साथ ही व्यायाम व खुराक का भी ध्यान रखें। इस बारे में दिल्ली स्थित मणिपाल अस्पताल में जनरल फिजीशियन डॉ. चारू गोयल से रजनी अरोड़ा की बातचीत।

रोशनी, आतिशबाजी और मिठाइयों का प्रतीक दिवाली का त्योहार अमूमन सभी के जीवन में हर्षोल्लास लेकर आता है। वहीं लापरवाही बरतने की वजह से कई लोगों के लिए स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सबब भी बन सकता है। भले ही इसके पीछे कई वजह रहती हैं जैसे- बदलता मौसम, वातावरण में बढ़ता प्रदूषण, अव्यवस्थित जीवनशैली, खानपान में बदलाव, मिठाइयों का सेवन व बेइंतहा आतिशबाजी। इन सब पर ध्यान दिया जाए, तो परेशानियों से बचा जा सकता है -

सेलिब्रेट करें ग्रीन दिवाली

दिवाली पर छोटे-बड़े सभी बड़े उत्साह से पटाखे चलाते हैं। जलाने पर इनकी 60 डेसिबल से ज्यादा की कानफोड़ आवाज, इनसे निकले धुएं में प्रदूषक तत्वों के छोटे-छोटे कण और जहरीली गैसें मौजूद रहती हैं जो सेहत के लिए नुकसानदायक होती हैं। इसलिए कोशिश करें कि ग्रीन दिवाली सेलिब्रेट करें। ग्रीन पटाखों से धुआं और शोर दोनों ही कम होता है जिससे आप खुद का और पर्यावरण का बेहतर तरीके से ख्याल रख सकते हैं।

माइंडफुल इटिंग करें

माइंडफुल इटिंग हमें ओवरइटिंग से बचाती है। खाना कितना भी स्वादिष्ट क्यों न हो, उतना ही खाएं जितनी भूख हो। स्वाद के चक्कर में ओवरइटिंग बिल्कुल भी न करें। ओवर इटिंग की वजह से पेट से संबंधित कोई भी समस्या हो सकती है। जो भी खाएं उसे अच्छी तरह से चबाकर और भरपूर स्वाद लेकर खाएं। जैसे ही आपका माइंड पेट भरने का संकेत दे आप खाना बंद कर दें।

डाइट प्लान करें

त्योहारों में हेल्दी रहने के लिए जरूरी है खाने-पीने की थोड़ी प्लानिंग करके चलना। एक-साथ भरपेट न खाएं। थोड़े-थोड़े अंतराल पर खाते रहें। नाश्ता करना बिल्कुल न भूलें। अगर आप सुबह के समय पौष्टिक नाश्ता करेंगे तो इससे आपको दिन भर काम करने के लिए भरपूर एनर्जी भी मिलेगी और पेट भरा होने के चलते लंच से पहले कुछ खाने का मन भी नहीं करेगा।

डाइट का रखें ख्याल

त्योहार पर एंजॉय करने और फिट रहने के लिए संतुलित आहार लें। लो-फैट, लो-शुगर और लो-सोडियम वाली चीजों का सेवन करें। यथासंभव फाइबर, प्रोटीन युक्त पदार्थ अधिक शामिल करें। खाने में सलाद व फल जरूर लें। ये आपको एनर्जी देंगे और भूख को कंट्रोल रखेंगे। ऑयली फूड खाने से परहेज करें। ताकि कोलेस्ट्रॉल, बीपी या दूसरी समस्याएं होने के रिस्क से बचे रहें। जरूरी नहीं है कि हर त्योहार पर तले हुए व्यंजन ही बनाएं। अपनी और अपने परिवार की सेहत को ध्यान में रखते हुए लो-कैलोरी रेसिपीज भी आप अपने मेन्यू में शामिल कर सकते हैं जैसे तली चाट की बजाय फ्रूट चाट बनाएं, अंकुरित दालों के कबाब और अन्य व्यंजन बनाए जा सकते हैं। जो खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी फायदेमंद होते हैं। बेक या ग्रिल फूड आइटम खाना बेहतर ऑप्शन हैं।

मिठाइयों का सेवन जरा संभल कर

त्योहार अधूरा लगने के बावजूद सेहतमंद रहने के लिए मिठाइयों का सेवन सीमित मात्रा में करना बेहतर है। ज्यादा मिठाई खाने से आपका वजन बढ़ सकता है। संभव हो तो दिवाली के मौके पर बाजार से लाने के बजाय घर पर खुद मिठाई बनाएं। होममेड मिठाइयां गुणवत्ता के लिहाज से तो खरी होंगी ही, उनमें मिलावट का अंदेशा भी नहीं होगा।

वॉटर इंटेक का ध्यान

दिवाली की भाग दौड़ में कामकाज इतना ज्यादा रहता है, इतने सेलिब्रेशंस होते रहते हैं कि लोग खुद को हाइड्रेटेड नहीं रख पाते और पानी कम पीते हैं। कोशिश करें कि पानी पर्याप्त पीएं क्योंकि जितना आप पानी पीएंगे उतनी ही आपके शरीर से गंदगी बाहर निकलेगी। दिन में 8-10 गिलास पानी जरूर पीएं। कोल्ड ड्रिंक्स, जूस पीने के बजाय नींबू पानी, नारियल पानी या लस्सी पीना बेहतर है। इससे फेस्टिव सीजन में होने वाली भागदौड़ की वजह से लो-एनर्जी या थकान दूर होगी, डिहाइड्रेशन से बचाव होगा और शरीर डिटॉक्स भी होगा।

हैंडवॉश करें जरूर

कई बार जल्दबाजी में पटाखे जलाने के बाद हम लोग कुछ खा लेते हैं, जो पाचन-तंत्र को नुकसान पहुंचाने के साथ शरीर को भी हानि पहुंचा सकते हैं। बचाव के लिए जरूरी है कि अपने हाथों को अच्छी तरह धोने के बाद ही कुछ खाएं।

न कहना सीखें

यदि आप त्योहार के समय अपने किसी दोस्त या रिश्तेदार के यहां खाने पर गए हैं तो जरूरी नहीं कि आप उनके जबर्दस्ती करने पर पेट भरा होने पर भी खाएं। आप अपनी सेहत को ध्यान में रखते हुए शिष्टाचारपूर्ण तरीके से ज्यादा खाने से मना करें। इससे उन्हें बुरा भी नहीं लगेगा।

धनतेरस: समृद्धि का नहीं, संवेदना का उत्सव

(आभूषणों से ज़्यादा मन का सौंदर्य जरूरी, मन की गरीबी है सबसे बड़ी दरिद्रता।)

धनतेरस का अर्थ केवल 'धन' नहीं बल्कि 'ध्यान' भी है — ध्यान उस पर जो हमारे जीवन को सार्थक बनाता है। यह त्योहार हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि समृद्धि का असली अर्थ क्या है। अगर घर में प्रेम है, परिवार में एकता है, मन में शांति है, और समाज में करुणा है—तो यही सबसे बड़ा धन है। इसलिए इस धनतेरस पर केवल चाँदी की चमक नहीं, अपने मन की उजास बढ़ाइए। अपने भीतर के अंधकार को पहचानिए और प्रेम, संयम और सेवा का दीप जलाइए। यही होगी असली पूजा—जहाँ लक्ष्मी केवल तिजोरी में नहीं, व्यवहार में भी बसती है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

धनतेरस का नाम लेते ही आंखों के सामने दीपों की उजास, सोने-चांदी की झिलमिलाहट, बाज़ारों का रौनकभरा शोर और पूजा की तैयारियों में जुटे घर-घर के दृश्य उभर आते हैं। यह दिन न केवल खरीदारी का त्योहार है, बल्कि भारतीय संस्कृति के गहरे दर्शन का प्रतीक भी है। यह वह दिन है जब लोग मानते हैं कि लक्ष्मी माता घर आएंगी, समृद्धि का आशीर्वाद देंगी, और दुर्भाग्य के अंधकार को मिटा देंगी। परंतु अगर हम इस पर्व के पीछे के दर्शन को गहराई से देखें, तो पाएंगे कि धनतेरस का अर्थ केवल सोना-चांदी खरीदना नहीं, बल्कि 'धन' की सही परिभाषा को समझना है।

'धन' शब्द संस्कृत के 'धना' से बना है, जिसका अर्थ केवल संपत्ति या पैसा नहीं बल्कि समृद्धि, सुख और संतोष का संगम है। प्राचीन ग्रंथों में धनतेरस को 'धनत्रयोदशी' कहा गया है — अर्थात धन और स्वास्थ्य दोनों की कामना का दिन। इसी दिन समुद्र मंथन से धनवंतरि देवता अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे, जिन्होंने मानवता को स्वास्थ्य का वरदान दिया। यही कारण है कि इस दिन को आयुर्वेद दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। जब दुनिया धन को केवल भौतिक संपत्ति के रूप में देखती है, तब भारतीय दर्शन इसे शरीर, मन और आत्मा की समृद्धि के रूप में देखता है।

आज के समय में धनतेरस का रूप काफी बदल गया है। पहले जहां यह दिन दीप जलाने, घर साफ़ करने और देवी-देवताओं की पूजा का होता था, अब यह दिन शॉपिंग मॉल और ऑनलाइन सेल का प्रतीक बन गया है। धनतेरस आते ही लोग सोना, चांदी, कार, बाइक, फ्रिज, टीवी, मोबाइल—सब कुछ खरीदने की होड़ में लग जाते हैं। लेकिन क्या यही असली 'धन' है? क्या केवल महंगी वस्तुएं खरीदकर हम सच में समृद्ध हो जाते हैं? शायद नहीं। असली समृद्धि तो उस मन में है जो संतोष जानता है, उस घर में है जहाँ प्रेम की दीवारें मजबूत हैं, और उस समाज में है जहाँ सभी के पास रोटी, कपड़ा और सम्मान हो।

धनतेरस हमें यह भी सिखाता है कि धन का उपयोग कैसा हो। जब धन भगवान धनवंतरि से जुड़ा हुआ है, तो इसका अर्थ यह भी है कि धन स्वास्थ्य और जीवन की रक्षा के लिए होना चाहिए, न कि दिखावे और व्यर्थ विलासिता के लिए। लेकिन आज की हकीकत यह है कि लोग धनतेरस पर नई चीज़ें खरीदने के लिए कर्ज़ तक ले लेते हैं। त्योहार खुशियों का होना चाहिए, पर वह तनाव और तुलना का माध्यम बन जाता है। सोशल मीडिया पर कौन कितना खरीद रहा है, किसने कौन-सी गाड़ी ली—यह तुलना हमें भीतर से खोखला कर देती है। असली पूजा तो तब है जब हम अपने जीवन में संतुलन और संयम को जगह दें।

एक समय था जब धनतेरस के अवसर पर लोग मिट्टी के दीप, तांबे या पीतल के बर्तन खरीदते थे। यह परंपरा केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी। मिट्टी के दीप अंधकार मिटाने का प्रतीक हैं, और धातु के बर्तन स्वास्थ्य व सकारात्मक ऊर्जा का। लेकिन अब इन बर्तनों की जगह चमकदार चाइनीज़ लाइट्स और प्लास्टिक के सजावटी सामान ने ले ली है। पहले जहां घरों में 'शुभ-लाभ' लिखकर दीवारें सजी होती थीं, अब 'डिस्काउंट' और 'कैशबैक' के बोर्ड झिलमिला रहे हैं। यह बदलाव केवल बाहरी नहीं, बल्कि हमारे भीतर के मूल्यबोध में भी आया है।

धनतेरस का एक और गहरा संदेश है—'धन' और 'धर्म' के संतुलन का। यदि धन अधर्म के मार्ग से अर्जित किया गया है, तो वह कभी सुख नहीं दे सकता। महाभारत में कहा गया है—"धनं धर्मेण सञ्चयेत्" यानी धन को धर्म के मार्ग से अर्जित करो। आज जब समाज में भ्रष्टाचार, लालच और अनैतिक कमाई बढ़ रही है, तब धनतेरस हमें याद दिलाता है कि असली पूजा वह नहीं जो सोने के दीपक से हो, बल्कि वह है जो ईमानदारी और परिश्रम से कमाए धन से की जाए। इस दिन जब हम दीप जलाते हैं, तो वह केवल बाहर का अंधकार नहीं मिटाता, बल्कि भीतर के लालच, ईर्ष्या और मोह के अंधकार को भी दूर करने का संदेश देता है।

इस पर्व का एक आयुर्वेदिक और वैज्ञानिक पक्ष भी

है। कार्तिक मास की त्रयोदशी के दिन मौसम बदलता है, सर्दी की शुरुआत होती है, और शरीर में रोगों की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे समय में भगवान धनवंतरि की पूजा करना इस बात का प्रतीक है कि हमें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। धनतेरस का अर्थ केवल धन प्राप्ति नहीं, बल्कि दीर्घायु, स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन की प्राप्ति भी है। जब शरीर स्वस्थ होगा, तभी जीवन में वास्तविक सुख और समृद्धि होगी।

अगर हम अपने पुरखों की जीवनशैली देखें, तो वे त्योहारों को केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं मानते थे, बल्कि सामाजिक समरसता और पर्यावरण संतुलन का अवसर भी समझते थे। धनतेरस के दिन घरों की सफाई का चलन केवल देवी लक्ष्मी के स्वागत के लिए नहीं, बल्कि स्वच्छता के प्रतीक के रूप में भी था। दीप जलाना केवल अंधकार हटाने के लिए नहीं, बल्कि प्रदूषण कम करने और वातावरण को पवित्र करने का एक उपाय भी था। लेकिन आज सफाई की जगह सजावट ने ले ली है, और पवित्रता की जगह दिखावे ने।

धनतेरस समाज में समानता का भी प्रतीक रहा है। पुराने समय में अमीर-गरीब सभी इस दिन अपने घरों में दीप जलाते थे। किसी के पास सोना-चांदी न हो तो वह मिट्टी का दीपक जलाकर भी अपनी श्रद्धा प्रकट करता था। आज यह भाव कम होता जा रहा है। त्योहार जो कभी सबको जोड़ता था, अब वर्गों में बँट रहा है। मॉलों की चकाचौंध में झुग्गियों की अंधेरी रातें दब जाती हैं। यह सोचने की बात है कि अगर लक्ष्मी सच्चे मन से हर घर में आती हैं, तो इतने लोग भूखे क्यों हैं? इतने किसान कर्ज़ में क्यों मर रहे हैं? क्या हमने लक्ष्मी को केवल अमीरों की देवी बना दिया है?

धनतेरस का वास्तविक संदेश यही है कि हमें धन का सही उपयोग करना सीखना चाहिए। यह दिन हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हमारा धन कितने लोगों के जीवन में रोशनी लाता है। अगर हम अपने धन से किसी गरीब की मदद करें, किसी बीमार के इलाज में सहयोग दें, किसी जरूरतमंद बच्चे की पढ़ाई में योगदान दें—तो वही असली धनतेरस होगी। लक्ष्मी तभी स्थायी होती हैं जब उनका उपयोग दूसरों की भलाई में होता है। वरना वह केवल कुछ समय की झिलमिलाहट बनकर रह जाती हैं।

आज के युग में जब हम डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शॉपिंग और कृत्रिम रोशनी के बीच धनतेरस मना रहे हैं, तब यह और भी ज़रूरी है कि हम इस पर्व की आत्मा को पहचानें। यह पर्व हमें अपने घर के साथ-साथ अपने मन का भी 'क्लीनिंग डे' बनाने का अवसर देता है। अपने भीतर के लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ और दिखावे की धूल झाड़कर अगर हम मन में करुणा, ईमानदारी और प्रेम के दीप जला सकें, तो वही सच्चा धनतेरस होगा।

धनतेरस केवल एक दिन नहीं, एक दृष्टिकोण है—जीवन को संतुलित, स्वास्थ्यपूर्ण और अर्थपूर्ण बनाने का दृष्टिकोण। यह हमें सिखाता है कि धन का मूल्य उसकी मात्रा में नहीं, बल्कि उसके प्रयोग में है। अगर हम धन को साधन बनाएँ, साध्य नहीं, तो वह जीवन में सौंदर्य और संतोष दोनों लाता है। लेकिन अगर वही धन हमें दूसरों से श्रेष्ठ दिखने की दौड़ में ले जाए, तो वह वरदान नहीं, अभिशाप बन जाता है।

आज के समय में शायद सबसे बड़ा 'धन' यह है कि हम अपनी मानसिक शांति को बचा पाएँ। परिवार के साथ बैठकर मुस्कुरा सकें, कुछ समय अपनों को दे सकें, बुजुर्गों के चरण छूकर आशीर्वाद ले सकें—यह भी धनतेरस का ही भाव है। क्योंकि जो घर प्रेम और सम्मान से भरा हो, वहाँ लक्ष्मी अपने आप आ जाती हैं।

त्योहारों की असली चमक सोने या चांदी की नहीं होती, वह मन की निर्मलता में होती है। दीपों की रोशनी बाहर तभी फैलेगी जब भीतर के दीप प्रज्वलित हों। इसलिए इस धनतेरस पर अगर आप कुछ खरीदना ही चाहें, तो अपने लिए संयम, करुणा और संतोष खरीदिए। यह वे अमूल्य वस्तुएं हैं जो कभी पुरानी नहीं पड़तीं, कभी चोरी नहीं होतीं, और जीवनभर समृद्धि देती हैं।

धनतेरस का यह पर्व हमें हर वर्ष यह याद दिलाता है कि समृद्धि केवल धनवान बनने में नहीं, बल्कि मनवान बनने में है। जब हम अपने कर्मों से दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाते हैं, जब हम अपनी कमाई से किसी का अंधकार मिटाते हैं—तभी सच्चे अर्थों में 'धनतेरस' होती है। इसलिए दीप जलाइए, पर साथ ही किसी और के जीवन में भी उम्मीद का दीप जलाइए। यही इस पर्व का सबसे सुंदर संदेश है।

मिलावटखोरों के खिलाफ दिवाली पर ही कार्यवाही क्यों

राजेश कुमार पासी

जब भी दीवाली आती है, अखबारों में खाद्य विभाग के छापों की खबर प्रकाशित होने लगती है। दीवाली से कुछ दिन पहले रोज ऐसी खबरें पढ़ने को मिलती हैं जिसमें से ज्यादातर दुग्ध उत्पादों के बारे में होती हैं। खाद्य विभाग जगह-जगह छापे मारकर नकली खोया, पनीर और मिठाइयों को जब्त करता है और ज्यादातर को वहीं फेंक दिया जाता है । सवाल यह है कि क्या सिर्फ दिवाली पर ही मिठाइयों या अन्य खाद्य पदार्थों में मिलावट की जाती है । सच तो यह है कि देश भर में रोज मिलावटी और नकली खाद्य पदार्थों की बिक्री होती है लेकिन खाद्य विभाग सोया रहता है । सवाल यह है कि ऐसा क्यों है कि सिर्फ त्योहारों के समय ही खाद्य विभाग सक्रिय नजर आता है ।

इसके लिए खाद्य विभाग स्टाफ की कमी को रोना रोता है कि उसके पास पर्याप्त संख्या में अधिकारी नहीं हैं जो मिलावटी सामानों की बिक्री पर नजर रख सकें । उनके इस बहाने से सवाल उठता है कि फिर दीवाली के समय उसके पास स्टाफ कहां से आ जाता है । खाद्य पदार्थों में मिलावट एक बड़ी स्वास्थ्य समस्या बन चुकी है लेकिन पूरी व्यवस्था इस तरफ से बेखबर है । इसकी वजह यह भी हो सकती है कि सम्पन्न वर्ग ब्रांडेड और अच्छी दुकानों से सामान खरीदता है जहां मिलावट होने की संभावना बहुत कम होती है । घटिया और मिलावटी सामान तो छोटे शहरों या बड़े शहरों में ऐसी जगहों पर बिकता है जहां गरीब और मध्यम वर्ग के लोग रहते हैं ।

घटिया और मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से कैंसर, लीवर रोग, दिल एवं गुर्दे की बीमारियां और तंत्रिका तंत्र से संबंधित कई प्रकार की बीमारियां पैदा हो जाती है । मिलावटी और घटिया खाद्य पदार्थों के सेवन से पेट दर्द, दस्त, मतली, एलर्जी जैसी समस्याएं तत्काल भी उत्पन्न हो जाती हैं । लंबे समय तक ऐसे खाद्य पदार्थों का सेवन शरीर के आंतरिक अंगों को खराब कर देता है । आज हमारे देश में बढ़ती बीमारियों के लिए जंक फूड को दोष दिया जाता है जो कि सही भी है लेकिन मिलावटी सामानों के बारे में बात कम की जाती है । गरीब और मध्यम वर्ग बीमारियों में जकड़ता जा रहा है, इसकी बड़ी वजह जंक फूड के अलावा मिलावटी और घटिया खाद्य पदार्थ भी हैं ।

सवाल यह है कि सरकार इन पर रोक क्यों नहीं लगा पा रही है । खाद्य विभाग कहता है कि त्योहारों के दौरान खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या बढ़ जाती है, इसलिए उसकी कार्यवाही सबको दिखाई देती है । विशेष तौर पर दिवाली के समय देश में मिठाइयों की उपलब्धता बढ़ जाती है । सवाल उठता है कि दूध उत्पादन तो एकदम से नहीं बढ़ सकता, फिर दूध से बने खोया और पनीर कहां से आ जाते हैं । दूध से बने पदार्थों की मियाद भी बहुत कम होती है. खोया तो सिर्फ एक सप्ताह तक ही ठीक रहता है । अचानक दुकानों में दूध से बनी मिठाइयों का ढेर कैसे लग जाता है । वास्तव में सच्चाई तो यह है कि इसके लिए नकली और मिलावटी दूध का इस्तेमाल किया जाता है । खाद्य विभाग जो पकड़ता है, वो नाममात्र का ही होता है, बाकी सारा लोगों के पेट में चला जाता है ।

दीवाली के दौरान जनता को दिखाने के लिए ऐसे कुछ सामानों को जब्त करके खानापूर्ति की जाती है । खाद्य विभाग को उसकी लापरवाही के लिए कोसा जाता है, जबकि सच्चाई यह है कि वो ऐसे मामलों की अनदेखी करता है । इसके लिए सरकारी विभागों में फैला हुआ भ्रष्टाचार जिम्मेदार है । कमजोर कानून को इसके लिए दोष दिया जाता है जबकि सच्चाई यह है कि जो कानून है, उसका भी इस्तेमाल नहीं हो रहा है । इसके लिए उपभोक्ता भी जिम्मेदार हैं क्योंकि उनमें खाद्य पदार्थों के मिलावट के संबंध में जागरूकता का अभाव है । विदेशों में इस संबंध में जनता बहुत जागरूक है, उसकी नजर में जब ऐसे मामले आते हैं तो वो सरकार को कार्यवाही करने के लिए मजबूर कर देती है । विकसित देशों में संबंधित विभाग ऐसे मामलों में बहुत सख्ती बरतते हैं, इसलिए वहां मिलावटी सामान की बिक्री संभव नहीं हो पाती है । हमारे देश में सस्ती चीजें लोगों का आकर्षित करती हैं लेकिन लोग समझ नहीं पाते हैं कि सस्ती चीजें नकली और मिलावटी भी हो सकती हैं ।

शहरों में दूध की कीमत को देखते हुए कहा जा सकता है कि पनीर 350 रुपये प्रति किलो से कम में नहीं बेचा जा सकता लेकिन कुछ दुकानदार पनीर 200-250 रुपये प्रति किलो की दर से बेचते मिल जाते हैं । इसके लिए दुकान पर बोर्ड भी लगाया जाता है लेकिन खाद्य विभाग की नजर उस पर नहीं जाती । जनता को भी समझ नहीं आता कि जब सरकारी और सहकारी कंपनियां 400 रुपये किलो बेच रही हैं तो इतना सस्ता छोटे दुकानदार कैसे बेच सकते हैं ।

इसके लिए सरकारी विभागों में फैला हुआ भ्रष्टाचार जिम्मेदार है । आज भी जहां इंस्पेक्टर राज चल रहा है, वो विभाग पूरी तरह से भ्रष्टाचार में डूबे हुए हैं । फूड इंस्पेक्टर का काम मिलावटी, खराब और घटिया खाद्य पदार्थों पर नजर रखना नहीं होता है बल्कि हर दुकान से मंथली इकठ्ठा करना होता है । सरकारी सेवा के दौरान एक बार मुझे सीबीआई ने एक फूड इंस्पेक्टर को पकड़ने के लिए लगाए गए ट्रैप के लिए बुलाया था । ज्यादातर मामलों में सीबीआई जब किसी व्यक्ति को भ्रष्टाचार के मामले में पकड़ने जाती है तो गवाही के लिए साथ में एक सरकारी कर्मचारी को ले जाती है । मुझे दुकानदार से मिलाया गया तो उसने कहा कि मैं हर महीने मंथली दे रहा था लेकिन अचानक फूड इंस्पेक्टर ने मंथली बढ़ाकर डेढ़ गुना कर दी है । मैंने कम करने को कहा लेकिन माना नहीं, अब मुझे तंग करने की धमकी दे रहा है, इसलिए मजबूर होकर मैंने सीबीआई को शिकायत की है । दूसरी तरफ एक सीबीआई अधिकारी ने कहा कि हम भी सरकारी कर्मचारी हैं और दूसरे सरकारी कर्मचारी के खिलाफ कार्यवाही नहीं करना चाहते लेकिन जब पानी सिर से ऊपर चला जाता है तो कार्यवाही करनी पड़ती है ।

देखा जाए तो दुकानदार और सीबीआई दोनों ही मंथली को गलत नहीं मानते थे क्योंकि ये एक रिवायत है । फूड इंस्पेक्टर अपने इलाके की दुकानों से मंथली इकट्ठी करता है, इसके एवज में वो दुकानदारों की मनमानियों की अनदेखी करता है । वास्तव में यह एक ऐसा भ्रष्टाचार है, जिसमें लेने वाला भी खुश रहता है और देने वाला भी खुश रहता है । मंथली की राशि अचानक ज्यादा कर देने से दुकानदार नाराज था । इसका मतलब है कि वो मंथली को एक सरकारी व्यवस्था मानता था और उसको देकर खुश था । उसकी खुशी की वजह यह थी कि वो बेपरवाह होकर अपना काम कर सकता था । जब भी खाद्य विभाग की टीम उसकी दुकान पर सैंपल भरने आती, तो उसे पहले से ही इसकी सूचना मिल जाती । एक दिन हमारे स्थानीय बाजार में एक दुकानदार ने एक फूड इंस्पेक्टर को सीबीआई से पकड़वा दिया तो उसके साथी दुकानदार ही उससे नाराज हो गए । उनका कहना था कि अब खाद्य विभाग नाराज हो जाएगा और हमें परेशान करेगा । उन्हें मंथली देना सही लगा लेकिन रिश्वतखोर फूड इंस्पेक्टर को पकड़वाना गलत लगा । वास्तव में सच्चाई यही है कि दोनों मिली भगत करके जनता के स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं ।

मैंने पहले भी कई बार लिखा है कि किसी अपराध की सजा कम या ज्यादा होना समस्या नहीं है बल्कि समस्या यह है कि निरपराध को सजा होती है और अपराधी आजाद घूमते रहते हैं । जो दुकानदार खाद्य विभाग का हाथ गर्म करते रहते हैं, उनके ऊपर कभी छापा नहीं डलता लेकिन जो ऐसा नहीं करते हैं, वहीं खाद्य विभाग का निशाना बनते हैं । अपने पसंदीदा दुकानदार का सैंपल अगर इन्हें भरना भी हो तो वो ऐसी चीज का भरते हैं जिसके जांच में फेल होने की संभावना ही नहीं होती । सभी विभागों में स्टाफ की कमी है लेकिन इतनी कमी नहीं है कि सरेआम मिलावटी सामान बिकता रहे और कोई रोकने वाला भी न हो । रोकने वाले बहुत हैं लेकिन रोकना नहीं चाहते ।

वैसे भी भारत में गरीब आदमी की जिंदगी की कोई कीमत नहीं है । वो मिलावटी सामान खाने से मरे या जहरीली शराब पीने से व्यवस्था को कोई फर्क नहीं पड़ता । हर रोज सड़क दुर्घटनाओं में 500 गरीब और मध्यम वर्ग के लोग असमय मौत के मुंह में चले जाते हैं लेकिन इसकी रोकथाम के लिए कोई कुछ करने को तैयार नहीं है । मिलावटी, घटिया और सड़े हुए खाद्य पदार्थों के खाने से गरीब लोग धीरे-धीरे बीमारियों से अस्पतालों में पैर रगड़ते हुए मरते हैं तो किसी को क्या फर्क पड़ सकता है । अचानक ज्यादा लोग एकदम से मर जाएं तो व्यवस्था के लिए समस्या खड़ी हो जाती है । जनता का धीरे-धीरे मरना तो व्यवस्था के लिए अच्छी बात है, इसी बहाने सरकारी अस्पताल भरे रहते हैं । अगर सरकार को सचमुच जनता के स्वास्थ्य की फिक्र है तो जो काम दीवाली पर होता है, वो रोज होना चाहिए । फूड इंस्पेक्टर का कोई एरिया नहीं होना चाहिए । एसआईटी की तरह स्वास्थ्य विभाग को टीम बनाकर ऐसी जगहों पर जांच के लिए भेजना चाहिए जहां उन्हें कोई जानता न हो । फूड इंस्पेक्टर की संपत्ति पर नज़र रखने की जरूरत है और उसकी दिनचर्या की भी निगरानी होनी चाहिए । क्या कारण है कि ऐसे अफसरों के पास अचानक करोड़ों की संपत्ति आ जाती है । कानून की कमजोरी समस्या नहीं है. समस्या कानून को लागू करने वालों की नीयत में है । अपनी जेब गर्म करने वाले भला जनता के स्वास्थ्य की चिंता क्या करेंगे ।

जाग रहा है जन गण मन, निश्चित होगा परिवर्तन...

सुशील कुमार 'नवीन'

सन 2000 में अभिषेक बच्चन और करीना कपूर स्टारर रिफ्यूजी फिल्म आई थी।

फिल्म के एक गीत की पंक्तियां जब जब भी सुनाई पड़ती है तो एक अलग ही अनुभव होता है। गीत है - पंछी, नदिया, पवन के झोंके, सरहद न कोई इन्हें रोके। यह गीत केवल प्रकृति की आज़ादी की नहीं, बल्कि विचारों की स्वतंत्रता की भी बात करता है। गीत से इतर अब सीधे मुद्दे पर आते हैं।

गुरुवार को कर्नाटक मंत्रिमंडल ने सरकारी स्कूलों और कॉलेज परिसरों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की गतिविधियों पर रोके लगाने के उद्देश्य को लेकर नियम लाने का फैसला किया है। कैबिनेट द्वारा आरएसएस पर रोक लगाने की इस कार्रवाई ने देशभर में बहस छेड़ दी है। शाखा या संघ की अन्य गतिविधि संचलन आदि में ऐसा क्या होता है, जिसके लिए कर्नाटक सरकार को इतना बड़ा कदम उठाना पड़ा। इस पर भी विचार करना जरूरी है।

संघ स्वयंसेवकों की मानें तो आरएसएस की शाखा और संचलन अनुशासन और सेवा के विद्यालय हैं। आमतौर पर लगने वाली एक घंटे की नियमित शाखाओं के लिए किसी को निमंत्रण नहीं दिया जाता। न ही कोई दबाव डाला जाता है। राष्ट्र हित की सोच रखने वाले स्वयंसेवक शाखा में समय पर उपस्थित होते हैं और प्रार्थना, योग, खेल और राष्ट्रवंदना के साथ दिन की शुरुआत करते हैं। शाखा में जो प्रार्थना गाई जाती है कि उसकी प्रथम पंक्ति ही सार स्वरूप राष्ट्र के प्रति स्वंयसेवकों की भावना को प्रकट करने के लिए पर्याप्त है।

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे, त्वया हिन्दुभूमे सुखवं वर्धितोऽहम्,

महामङ्गले पुण्यभूमे त्वदर्थे, पतत्वेष कायो नमस्ते नमस्ते।

इसका अर्थ है कि हे प्यार करने वाली मातृभूमि ! मैं तुझे सदा (सदैव) नमस्कार करता हूँ। तूने मेरा सुख से पालन-पोषण किया है। हे महामंगलमयी पुण्यभूमि ! तेरे ही कार्य में मेरा यह शरीर अर्पण हो। मैं तुझे बारम्बार नमस्कार करता हूँ। विरोध का सुर रखने वाले इसमें कोई मीन मेंख निकालकर तो देखें।

शाखा का दूसरा नियमित कार्यक्रम सुभाषित तो राष्ट्र समभाव को और भी स्पष्ट कर देता है। यह सभी के अंदर एकत्व की भावना को मजबूती देने का कार्य करता है।

हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्,
मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्रः समानता।

इसका अर्थ है कि सभी हिंदू एक दूसरे के भाई-बहन (सहोदर) हैं, कोई भी हिंदू पतित नहीं हो सकता। हिन्दू धर्म की रक्षा मेरा धर्म है और समानता मेरा मंत्र है।

सामूहिक गीतों की बात हो तो सामाजिक सद्भाव, सामाजिक समरसता, सामाजिक एकता से ये ओतप्रोत होते हैं। सुनने मात्र से राष्ट्र के प्रति नतमस्तक होने को सब मजबूर हो जाते हैं।

हम करें राष्ट्र आराधना,तन से, मन से, धन से, तन-मन-धन जीवन से, हम करें राष्ट्र आराधना।

संघ की आम बैठकों या विशेष कार्यक्रम में गाते जाने वाले एकल गीत भी इससे इत्तर नहीं है।

श्रद्धामय विश्वास बढ़ाकर, सामाजिक सद्भाव जगायें। अपने प्रेम परिश्रम के बल, भारत में नव सूर्य उगायें।

बात खेलकूद व्यायाम की हो तो उसमें में भी कोई ऐसी बात दिखाई नहीं देती जिस पर उंगली उठाई जा सके। एक घंटे की शाखा में पांच मिनट सूक्ष्म व्यायाम जिसे हम वार्मअप भी कह सकते हैं। इसके बाद व्यायाम योग, सूर्य नमस्कार शरीर को बलिष्ठ ही बनाने का कार्य करते हैं। मनोरंजन के लिए करवाये जाने वाले बौद्धिक और शारीरिक खेल भी इसे और आगे बढ़ाते है। अंत में दिन विशेष के किसी महापुरुष या घटना पर चर्चा के बाद प्रार्थना के बाद शाखा का समापन। इसी तरह अन्य गतिविधियों में संचलन या अन्य कोई सभा आदि। स्वयंसेवकों के अनुसार कहीं पर भी ऐसी कोई गतिविधि होती ही नहीं, जिस पर आपत्ति हो सके। एक बार किसी कार्यक्रम में शामिल होकर देखें, अब स्पष्ट हो जायेगा। संघ के कार्यक्रम लोगों को जोड़ने का काम करते हैं तोड़ने का नहीं। राजनीति इसमें ठीक नहीं है।

आलोचकों के अनुसार इस एक घंटे के कार्यक्रम में शाखाओं के माध्यम से एक विशेष वैचारिक दिशा दी जाती है, जो हिंदू राष्ट्रवाद की अवधारणा से जुड़ी है। उन्हें इस बात की भी ज्यादा चिंता रहती है कि विद्यालयों या सार्वजनिक परिसरों में शाखा चलाने से धर्मनिरपेक्षता प्रभावित हो सकती है।

यहां यह भी गौर करना बहुत जरूरी है कि लोकतंत्र की खूबसूरती विविध विचारों के सह-अस्तित्व में है। विचार से असहमति, प्रतिबंध का औचित्य नहीं बन सकती। शाखाओं पर रोक लगाने से विचारों का प्रसार नहीं रुकता, बल्कि संवाद और संतुलन की संस्कृति कमजोर होती है। यदि शाखा कानून तोड़ती है तो कार्रवाई उचित है, पर यदि शाखा केवल विचार का प्रसार कर रही है, तो इस तरह की रोक की भावना लोकतंत्र की आत्मा पर आघात से कमतर नहीं है। कर्नाटक सरकार की ये कार्रवाई समझ से परे है। आरएसएस की शाखा कोई राजनीतिक मंच नहीं, बल्कि अनुशासन और चरित्र निर्माण का स्थान है,

समय तय करेगा कि कर्नाटक में आरएसएस की शाखाओं या अन्य गतिविधियों पर रोक लगाने की कारवाई क्या किसी सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन की गतिविधियों पर प्रशासनिक हस्तक्षेप लोकतंत्र के अनुरूप है। संघ गीत की ये पंक्तियां इसे और भी संबल प्रदान करने का कार्य करेंगी।

विश्व मंच पर भारत माँ के, यश की हो अनुगूंज सघन
निश्चित होगा परिवर्तन, जाग रहा है जन गण मन।

तीन अनाथ बच्चों की ज़िंदगी में लौटी मुस्कान

– संत रामपाल जी महाराज बने उम्मीद की किरण

संगरूर,17 अक्टूबर (जगसीर लोगोंवाल)-

पंजाब के मानसा ज़िले के गाँव भोपाल में रहने वाले तीन मासूम बच्चों की ज़िंदगी में उस वक्त नई रौशनी आई जब संत रामपाल जी महाराज की अन्नपूर्णा मुहिम के तहत सेवक उनके घर पहुँचे और उन्हें ज़रूरी जीवन-सामग्री मुहैया करवाई। ये तीनों बच्चे — दो बहनें और एक छोटा भाई — वर्षों से माँ-बाप के साये से वंचित हैं। माँ का निधन करीब 13 साल पहले और पिता का छह महीने पहले हो गया था। बच्चे एक जर्जर कच्चे मकान में रहते हैं, जहाँ न छत सही है, न रसोई। बाथरूम का दरवाज़ा और छत तक टूटी हुई है। घर में न खाना बनाने की व्यवस्था है, न ज़रूरी बर्तन। बड़ी दो बहनें कॉलेज में स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं जबकि छोटा भाई सरकारी स्कूल में बारहवीं कक्षा का छात्र है। आर्थिक स्थिति बेहद खराब होने के कारण बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ मज़दूरी भी करते हैं। ऐसे हालात में संत रामपाल जी महाराज की अन्नपूर्णा मुहिम इन बच्चों के लिए किसी वरदान से कम नहीं साबित हुई। इस मुहिम का उद्देश्य है — "रोटी, कपड़ा, शिक्षा, इलाज और मकान — हर गरीब को दे रहा कबीर भगवान।" संत जी के आदेश पर सेवादार जब इन बच्चों के घर पहुँचे तो उन्होंने परिवार की ज़रूरत के मुताबिक़ राहत सामग्री दी। इसमें आटा, दालें, चावल, आलू, प्याज़, चाय, चीनी, कपड़े धोने और नहाने का सामान, रसोई के बर्तन, पंखे, स्कूल-कॉलेज की कॉपियाँ, बैग, यूनिफॉर्म, जूते और दो-दो जोड़ी नए कपड़े शामिल थे।

राहत सामग्री पाकर बच्चों के चेहरों पर खुशी की झिलमिलाहट लौट आई। उन्होंने संत रामपाल जी महाराज के प्रति आभार जताया। सेवकों ने बताया कि यह मदद केवल एक बार की नहीं है, बल्कि जब तक बच्चे आत्मनिर्भर नहीं हो जाते, अन्नपूर्णा मुहिम के तहत उनकी सहायता जारी रहेगी। गाँव के सरपंच बलकोर सिंह और ग्रामीणों ने संत रामपाल जी महाराज के समाजसेवी प्रयासों की खुलकर सराहना की। उनका कहना था कि आज के समय में जहाँ लोग अपनी ज़िंदगी में ही उलझे रहते हैं, वहीं संत रामपाल जी महाराज जैसे संत ही वास्तव में मानवता की सेवा कर रहे हैं। सेवादारों ने बताया कि अन्नपूर्णा मुहिम न केवल पंजाब, बल्कि पूरे भारत और नेपाल में भी चलाई जा रही है। इसके अलावा संत रामपाल जी महाराज नशा मुक्त भारत, दहेज मुक्त विवाह, रक्तदान शिविर, नेत्र चिकित्सा शिविर और आपदा राहत कार्यों जैसे अनेक सामाजिक अभियानों में भी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

सलाइट में एएफएसटी (आई) प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय खाद्य सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न

लोंगोवाल, 17 अक्टूबर (जगसीर सिंह)-

संत लोंगोवाल इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, लोंगोवाल में आज एएफएसटी (आई) द्वारा प्रायोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय खाद्य सम्मेलन 2025 का समापन समारोह सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह कार्यक्रम खाद्य इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी विभाग, सलाइट द्वारा एसोसिएशन ऑफ फूड साइंटिस्ट्स एंड टेक्नोलॉजिस्ट्स (इंडिया) लोंगोवाल चैप्टर के सहयोग से ₹बेहतर खाद्य पदार्थों और बेहतर भविष्य के लिए हाथ से हाथ मिलाना₹ विषय पर आयोजित किया गया था। प्रो. सुखचरण सिंह ने समापन समारोह में अतिथियों और प्रतिनिधियों का स्वागत किया। पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के डीन एवं विस्तार शिक्षा निदेशक (सेवानिवृत्त) प्रो. अशोक कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर की शोभा बढ़ाई। अपने समापन भाषण में, उन्होंने भावी पीढ़ियों के लिए खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु सतत खाद्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों और सहयोगात्मक अनुसंधान की महती आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने खाद्य क्षेत्र में नवीन अनुसंधान को बढ़ावा देने और कुशल पेशेवरों को विकसित करने में सलाइट जैसे शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका की सराहना की। मुख्य अतिथि, डॉ. संजीव शर्मा, उप महाप्रबंधक (आर एंड डी खाद्य और तेल), पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार ने खाद्य विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने में उद्योग-अकादमिक साझेदारी के महत्व पर प्रकाश डाला। सलाइट लोंगोवाल के निदेशक डॉ. मणिकांत पासवान ने सत्र की अध्यक्षता की और वैज्ञानिकों, उद्योग विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और छात्रों के बीच उपयोगी विचार-विमर्श को सुगम बनाने वाले राष्ट्रीय स्तर के मंच के सफल आयोजन के लिए आयोजक टीम के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने खाद्य प्रौद्योगिकी में कौशल विकास, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता दोहराई। सम्मेलन के संयोजक प्रोफेसर डी.सी. सक्सेना ने बताया कि पिछले दो दिनों में सम्मेलन में चार तकनीकी सत्र, आठ विशेषज्ञ व्याख्यान, चौबीस मौखिक और लगभग पचास पोस्टर प्रस्तुतियां आयोजित की गईं, जिनमें टिकाऊ प्रसंस्करण, खाद्य सुरक्षा, कार्यात्मक खाद्य पदार्थ, उभरती जैव प्रौद्योगिकी और वृत्तीय अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण जैसे अग्रणी क्षेत्रों को शामिल किया गया। समापन समारोह के दौरान उत्कृष्ट प्रस्तुतकर्ताओं और योगदानकर्ताओं को प्रमाण पत्र, पुरस्कार और स्मृति चिन्ह वितरित किए गए। खाद्य अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभागाध्यक्ष, प्रो. सी. एस. रियार ने समापन भाषण देते हुए आयोजन टीम और प्रतिभागियों के समर्पण की सराहना की, जिन्होंने इस आयोजन को उल्लेखनीय रूप से सफल बनाया।

आयोजन सचिव प्रो. नवदीप जिंदल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया और सम्मेलन की सफलता में उनके पूर्ण सहयोग और योगदान के लिए सभी गणमान्य व्यक्तियों, वक्ताओं, प्रायोजकों, स्वयंसेवकों और प्रतिभागियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। समारोह का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

निर्धारित स्थान के अतिरिक्त न बिकें पटाखे — सीओ संदीप वर्मा

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

त्योहारों के मद्देनज़र कोतवाली में हुई व्यापारियों और गणमान्यों की बैठक

अनिल राठौर।

गंजडुंडवारा/ आगामी दीपावली और त्यौहारों के दृष्टिगत कोतवाली परिसर में क्षेत्राधिकारी पटियाली की अध्यक्षता में व्यापारियों व गणमान्य नागरिकों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बाजारों की सुरक्षा, यातायात व्यवस्था और आतिशबाजी की बिक्री से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई। बैठक में अधिशासी अधिकारी कोतवाली प्रभारी सहित सभी उपनिरीक्षक मौजूद रहे।

पंच दिवसीय दीपोत्सव को लेकर कोतवाली पुलिस ने व्यापरियों व गणमान्यों के साथ कोतवाली परिसर में एक बैठक आयोजित की। बैठक की अध्यक्षता कर रहे क्षेत्राधिकारी पटियाली संदीप वर्मा ने व्यापारियों से समस्याएं जानी और उनके समाधान का भरोसा जताया। सीओ संदीप वर्मा ने स्पष्ट निर्देश दिए कि निर्धारित स्थल हरिनारायण इंटर कॉलेज परिसर के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर पटाखों की बिक्री नहीं की जाएगी। उन्होंने बताया कि कॉलेज परिसर में कुल 24 लाइसेंसधारी दुकानदारों को ही पटाखे बेचने की अनुमति दी गई है। केवल वैध लाइसेंस प्राप्त व्यापारी ही स्टॉल लगाएंगे, किसी भी अवैध विक्रेता को अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने दुकानदारों को सुरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए। सीओ ने कहा कि पटाखा दुकानों के आसपास अग्निशमन बाल्टी, रेत और पानी की पर्याप्त व्यवस्था रखें, ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल कार्रवाई की जा सके। प्रशासन द्वारा फायर ब्रिगेड की विशेष तैनाती भी सुनिश्चित की जाएगी। इसके साथ ही किसी भी अफवाह पर ध्यान ना देने की बात पर जोर दिया गया। बैठक में बाजारों में भारी वाहनों के प्रवेश पर रोक लगाने का निर्णय लिया गया, जिससे दीपोत्सव के दौरान भीड़ और जाम की स्थिति से बचा जा सके। अधिशासी अधिकारी सुनील कुमार ने नगर में सफाई, पेयजल और प्रकाश व्यवस्था को बेहतर बनाए रखने का आश्वासन दिया।

इस मौके पर कोतवाली प्रभारी भोजराज अवस्थी, इंस्पेक्टर क्राइम, उपनिरीक्षकगण, पुलिस कर्मी, व्यापारी संघ पदाधिकारी और समाजसेवी मौजूद रहे। सीओ ने सभी से त्योहारों को शांति, आपसी सौहार्द और सुरक्षा के साथ मनाने की अपील की।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज : आगामी त्योहारों को लेकर पुलिस अलर्ट, पुलिस अधीक्षक अंकिता शर्मा ने पुलिस बल के साथ किया फैलेगमार्च, बाजार में लगे सीसीटीवी कैमरा को भी चैक किया गया, ड्रोन कैमरा से भी निगरानी रहेगी।

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक की जयंती पर हुई गोष्ठी।

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज, अनिल राठौर (ब्यूरो चीफ)

गंजडुण्डवारा, नगर के गनेशपुर स्थित हाजी रशीदन बेगम एन्ड साहब जहाँ एजुकेशनल इंस्टिट्यूट मै सर सय्यद अहमद की जयंती पर गोष्ठी का आयोजन हुआ। गोष्ठी मै डायरेक्टर हसरत ख़ान नें सर सय्यद के बारे मै छात्राओं को जानकारी देते हुए बताया कि सर सैयद अहमद ख़ान मुस्लिम नेता थे जिन्होंने भारत में रह रहे मुसलमानों के लिए मज़हबी व दुनियावी शिक्षा की शुरुआत की। इन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की स्थापना की । उनके प्रयासों से अलीगढ़ विश्विद्यालय की शुरुआत हुई, जिसमें शामिल नेताओं ने मुसलमानों को मज़हबी शिक्षा व आधुनिक युग व दुनियावी शिक्षा से शिक्षित करने का काम किया। सय्यद अहमद 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में यह सच है कि उन्होंने ग़ैर फ़ौजी अंग्रेज़ों को अपने घर में पनाह दी, बाद में जब सर सैयद अहमद को लगा कि भारत स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों को एक नेता की आवश्यकता है तो वे उनके नेता बने और अंग्रेजो के साथ उन्होंने अपने मुस्लिम समुदाय के लिए हिन्दुओ से अलग प्रवधान और विशेष अधिकार मांगने शुरू किए और अंग्रेजो से इस बात पर अधिकार मांगने शुरू किए की मुस्लिम आर्थिक रुप से कमज़ोर है और तादात में भी कम है बाद में अपने उग्र भाषणों से वे ब्रिटिश सरकार की निगाह में आए और भारत के विभाजन की नींव रखी गई बाद में इस संग्राम के विषय में उन्होने एक किताब लिखी: असबाब-ए-बग़ावत-ए-हिन्द, उर्दू को भारतीय मुसलमानों की सामूहिक भाषा बनाने पर ज़ोर दिया। गोष्ठी मै मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ रिजवान ख़ान प्रीति अग्रवाल निशा अनुराधा सुमन साजिद लवलेंद्र गौरव गिरी डॉ विमल किशोर डा राशिद आलम सहित समस्त स्टॉफ मौजूद रहा।

रिबावा जडेजा ने ली मंत्री पद की शपथ

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

गुजरात में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की नई कैबिनेट ने सभी प्रमुख समुदायों और क्षेत्रों का संतुलित प्रतिनिधित्व किया है। हालिया शपथ ग्रहण में पाटीदार समुदाय से 6 मंत्री शामिल हुए: कौशिक वेकरिया, प्रफुल पानसेरीया, कांति अमृतिया, ऋषिकेश पटेल, जीतूभाई वाघाणी और कमलेश पटेल। अनुसूचित जाति से तीन मंत्री: मनीषा वकील, प्रद्युम्न वाजा और दर्शना वाघेला को जिम्मेदारी दी गई है। आदिवासी समुदाय को 4 मंत्रियों: रमेश कटारा, पीसी बरंडा, जयराम गामित और नरेश पटेल के माध्यम से प्रतिनिधित्व मिला। ओबीसी समुदाय से 8 नेताओं: कुंवरजी बावलिया, अर्जुन मोढवाडिया, परसोत्तम सोलंकी, त्रिकम छांगा, प्रवीण माली, स्वरूपजी ठाकोर, ईश्वरसिंह पटेल और रमन सोलंकी को मंत्रिपद दिया गया।

विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भ्रमण कर शिक्षकों से भेंट की गई

रिपोर्ट अंकित गुप्ता कासगंज

राहुल गुप्त एडवोकेट द्वारा आगरा खंड शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में भ्रमण कर शिक्षकों से भेंट की गई। इस अवसर पर उन्होंने आगामी शिक्षक एम.एल.सी. (MLC) चुनाव के संदर्भ में शिक्षकों से संवाद किया तथा उन्हें मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने और मतदान के माध्यम से लोकतंत्र के महापर्व में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि "शिक्षक समाज की जागरूकता ही सशक्त लोकतंत्र की आधारशिला है।

बाहांनगा रेल हादसा: सोरो सेक्शन सिग्नल जेई आमिर खान सीबीआई हिरासत में

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : जानकारी के मुताबिक, बाहांनगा रेल हादसे का मास्टरमाइंड कौन है? इस बड़ी साजिश के लिए किसे फंसाया गया है? सीबीआई ने टायर सेक्शन के सिग्नलमैन आमिर खान को गिरफ्तार किया है। आमिर खान अपने गृहनगर पश्चिम बंगाल में सिग्नलमैन है और उसका किराए का मकान टायर है।बहांगा ट्रेन हादसे के बाद आमिर खान कहां गायब हो गए? सीबीआई को आमिर पर शक है।ट्रेन हादसे के लिए आमिर को किसने फंसाया है? सीबीआई मंगलवार सुबह 10 बजे टायर स्थित किराए के मकान पर पहुँच गई थी। सीलबंद किराए के मकान को तोड़कर मैराथन छापेमारी शुरू हुई।

सीबीआई ने आरोपियों से साढ़े छह घंटे पूछताछ की, लेकिन लोगों को शक है कि सीबीआई को कोई सुराग मिला भी या नहीं। क्योंकि उस दिन करमंडल ट्रेन सिग्नल में खराबी के कारण गलत ट्रैक पर चली गई थी और मालगाड़ी से टकरा गई थी, और यशवंतपुर ट्रेन, जिसे इसकी जानकारी नहीं थी, डाउन लेन से गुजरते हुए करमंडल से टकरा गई, जिसमें 300 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई और 900 लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

रेल दुर्घटना कोई साधारण दुर्घटना नहीं मानी जाती। इसमें इंसानी ज़िंदगी के साथ खिलवाड़ किया गया, लापरवाही की वजह से आज कुछ ज़िंदगियाँ बर्बाद हो गईं। अगर उस दिन सब कुछ सही होता, तो आज कुछ परिवार अपनों के साथ खुश होते। लेकिन इन तीन लोगों की गलतियों और उनकी लापरवाही की वजह से उस दिन हादसा हो गया और ज़िंदगी यूँ ही गुज़र गई।

हालांकि, इस हादसे के बाद सीबीआई ने जाँच शुरू कर दी है और हादसे के पीछे छिपे कई राज़ों से वाकिफ़ है, लेकिन अब वो इन्हें सबके सामने लाना नहीं चाहती। तीनों आरोपी, सीनियर इंजीनियर अरुण मोहंती, सिग्नल इंजीनियर आमिर खान और टेक्नीशियन पप्पू, पिछले पाँच दिनों से रिमांड पर हैं। इन पाँच दिनों में सीबीआई ने तीनों आरोपियों का इतिहास फिर से खंगाला है, उनके बैंक खातों की जाँच की है। हालाँकि, अदालत में पेश करने से पहले तीनों आरोपियों का शारीरिक उपचार किया गया है। इसके अलावा, सीबीआई ट्रेन हादसे वाले दिन मौजूद हर कर्मचारी से लगातार पूछताछ कर रही है। तीनों आरोपियों पर धारा 305 और 201 लगाई गई है और पूछताछ के बाद अन्य धाराएँ भी लगाई जा सकती हैं। हालाँकि, अगर देशद्रोह का मामला दर्ज होता है, तो तीनों आरोपियों को फांसी की सज़ा भी हो सकती है।

जनजातिय मंत्रालय की योजना पर राष्ट्रपति के हाथों डीसी सरायकेला नितिश कुमार हुए सम्मानित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

भूवनेश्वर, सरायकेला खरसावां जिले में आदिवासियों का उत्थान व विकास किस प्रकार हो रहा है इसका जीता जागता प्रमाण जब केंद्र का जनजातीय मंत्रालय इसे आकलन करे और सरायकेला जिला मुख्यालय से मात्र 50 किलोमीटर दुर मयूरभंज की इष्टदेवी किचिकेश्वरी माटी की बेटी महामहिम राष्ट्रपति के हाथों जिले का प्रशासनिक मुखिया सम्मान से नवाजे जाएं तो यह स्वत ही अंदाजा लगाया जा सकता ।

जन जातिय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित "आदि कर्मयोगी अभियान" एवं "धरती आबा जनभागीदारी अभियान" के अंतर्गत देश के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जिलों में सरायकेला-खरसावाँ जिले का चयन के बाद महामहिम राष्ट्रपति को द्रोपदी मूर्मू द्वारा उपायुक्त नितिश कुमार सिंह को दिल्ली में पुरस्कृत किया गया ।

इस अवसर शुक्रवार को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित "आदिकर्मयोगी अभियान नेशनल कॉन्क्लेव" में उपायुक्त नितिश कुमार सिंह को राष्ट्रपति द्वारा यह सम्मान देश के तमाम जिलों में हुए आदिवासी विकास में चुनिंदे जिले की कतार में खड़ा सरायकेला को प्रदान किया । यह सम्मान जिले में जनजातीय सशक्तिकरण, समावेशी विकास, नवाचार आधारित प्रशासनिक कार्यशैली और समुदाय की सक्रिय भागीदारी के उत्कृष्ट परिणामों के लिए दिया गया है।

इसकी प्रमुख उपलब्धियों मे सरायकेला खरसावां के जनजातीय ग्रामों में बुनियादी ढांचागत विकास – आवास, सड़क, शिक्षा, पोषण, पेयजल और आजीविका के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हुआ है ।जहां पिसा अंतर्गत पंचायतें – 132 हैं । वन अधिकार अधिनियम अंतर्गत पंचायतें – 67 (ग्रामों की संख्या – 311) ।शैक्षणिक संस्थान – प्राथमिक विद्यालय 818, मध्य विद्यालय 502, उच्च विद्यालय 101 (कुल 1421 विद्यालय) । आंगनबाड़ी केंद्र – 1373 । स्वास्थ्य केंद्र – पी एच सी की संख्या 14, सी एच सी : 08 है । संचालित छात्रावासों की संख्या – 28 ।कौशल प्रशिक्षण – डी डी यू ,जीकेवाय अंतर्गत 5793 लाभार्थी एवं राज्य कौशल मिशन के तहत 705 बैच को प्रशिक्षित की गयी है ।प्रशिक्षित शिक्षक – 4001 है तथा डिजिटल लर्निंग सेंटर – 199 हुआ है ।

इस अवसर पर झारखण्ड राज्य के सरायकेला-खरसावाँ समेत पाकुड़, जामताड़ा, सिमडेगा और लोहरदगा जिलों को भी सम्मानित किया गया है ।

इस सम्मान से न केवल जिले की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर और सशक्त हुई है ।

SI परीक्षा मामले में क्राइम ब्रांच के डीजी का बड़ा खुलासा, एक महिला है मास्टरमाइंड

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : पुलिस एसआई परीक्षा घोटाले को लेकर क्राइम ब्रांच के डीजी ने बड़ा खुलासा किया है। क्राइम ब्रांच के डीजी ने बताया कि इस मामले में मोस्ट वांटेड दलाल मुना मोहंती और एक महिला समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। सुकांत महाराणा, सौम्या पियादर्शिनी और अभिमन्यु डोरा को गिरफ्तार किया गया है। सौम्या पियादर्शिनी उम्मीदवारों की भर्ती कराती थी ।घटना के सिलसिले में मुन्ना के करीबी तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है, जिनमें एक महिला भी शामिल है। मुन्ना और सुकांत के बारे में सूचना मिलने के बाद क्राइम ब्रांच ने दासपल्ला स्थित एक फार्महाउस पर छापा मारा ।लेकिन मुन्ना मोहंती को वहीं से पकड़ लिया गया। बाद में, जाँच एजेंसी ने उसे ट्रैक कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों में सुकांत महाराणा, सौम्या प्रियदर्शिनी और अभिमन्यु डोरा शामिल हैं। इन तीनों आरोपियों में से सौम्या प्रियदर्शिनी उम्मीदवारों की भर्ती कर रही थी। पहले 117 लोगों को गिरफ्तार किया गया था, लेकिन अब इन चारों को मिलाकर कुल 121 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है, क्राइम ब्रांच के डीजी बिजयतोष मिश्रा ने जानकारी दी है। आज 3 लोगों को ब्रह्मपुर कोर्ट में पेश किया जाएगा। गिरफ्तारी के बाद, क्राइम ब्रांच आरोपियों को ब्रह्मपुर ले जा रही है। इस बीच, जाँच एजेंसी मास्टरमाइंड शंकर पर्ष्टि से पूछताछ कर रही है।

मास्टरमाइंड शंकर पर्ष्टि दिल्ली में रहकर सब कुछ मैनेज कर रहा था। सबसे पहले, मुना मोहंती को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी। क्राइम ब्रांच के डीजी ने अपील की है कि अगर किसी के पास कोई जानकारी हो तो वह सामने आए। क्राइम ब्रांच के डीजी विनयतोष मिश्रा ने बताया कि शंकर पर्ष्टि को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

डायन के संदेह में तीन युवकों ने झारखंड में महिला की कर दी हत्या

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

राउरकेला, पश्चिमी सिंहभूम के मझगांव थाना अन्तर्गत एक गांव में एक खौफनाक हत्या का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार जिले के उस थानाक्षेत्र के गांव की महिला चांदमनी पिंगुवा को 12 अक्टूबर को तीन युवकों ने अपहरण कर लिया और हत्या कर दी । यह हत्या अंध विश्वास का जड़ डायन के संदेह में की गयी है । मृतका के शव को ओड़िशा के नरसंडा नाले के पास स्थित स्नान घाट में पानी के अंदर पत्थरों से दबा दिया गया। महिला के पति दुबराज बिरुवा ने 12 अक्टूबर को ही मझगांव थाना में अपनी पत्नी के गुम होने की रिपोर्ट दर्ज कराई। मृतिका के नाबालिग पुत्र ने पुलिस को बताया कि बीमा सिंकु, रितेष पिंगुवा और नावरी बिरुवा उर्फ काज़ी घर आए और उनकी मां को घर से बाहर ले गए। पुलिस ने इन तीनों पर संदेह जताया और उनकी तलाश शुरू की। बुधवार को थाना प्रभारी उपेंद्र नायाराण सिंह ने आरोपितों को गांव से पकड़कर मझगांव थाने लाया गया। पूछताछ में आरोपितों ने हत्या और शव को नाले में फेंकने की पूरी घटना स्वीकार की। मौके पर अनुमंडल डीएसपी राफेल मुर्मू भी पहुंचे और घटना स्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने नाले में छलांग लगाकर पत्थरों से दबाए हुए शव को पानी से बाहर निकाला डीएसपी राफेल मुर्मू ने बताया कि आरोपितों ने महिला को अंधविश्वास के नाम पर डायन बताते हुए अपहरण और हत्या की। घटना से मृतिका के परिवार में गहरा शोक है। उनके पति ने बताया कि उनकी पत्नी खेतों और घर के काम में जुटी रहती थीं और परिवार का पालन-पोषण करती थीं, लेकिन आरोपितों ने मारकर उन्हें नाले में फेंक दिया और परिवार को टूटने के कगार पर ला खड़ा किया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए चाईबासा सदर अस्पताल भेजा। मृतिका के परिवार में दो बेटियां और दो बेटे हैं। पुलिस पूरे मामले की गहन जांच कर रही है और आरोपितों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाया जाएगा, ताकि इस डरावनी घटना की सजा सुनिश्चित हो।

छह महीने बाद कोल्हान कमिश्नरी को मिला आयुक्त

नेलसन एयोन बागे ने लिया पदभार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राउरकेला, क़रीब छह माह बाद कोल्हान को नया आयुक्त मिला है । नेलसम एयोन बागे ने आज सिंहभूम "कोल्हान" प्रमंडल, चाईबासा के 26वें प्रमंडलीय आयुक्त के रूप में पदभार ग्रहण किया। वे भारतीय प्रशासनिक सेवा 2011 बैच के अधिकारी हैं। पदभार ग्रहण करने के बाद एयोन बागे ने कहा कि उनकी पहली प्राथमिकता कोल्हान प्रमंडल के लोगों तक जनकल्याणकारी बुनियादी जरूरत व योजनाओं को पहुंचाना होगी। उन्होंने कहा कि सरकार की सभी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना प्रशासन की जिम्मेदारी है और इसी दिशा में वे कार्य करेंगे। एयोन बागे ने बताया कि स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। प्रमंडल के विकास के लिए विभिन्न विभागों के बीच बेहतर समन्वय और पारदर्शिता स्थापित करना उनका लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि वे जनता से सीधा संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करेंगे, ताकि शासन और जनता के बीच की दूरी कम हो सके।

घाटशिला चुनाव हेतु समेश संग मुख्यमंत्री तो बाबूलाल के साथ उनके पिता पूर्व मुख्यमंत्री

* बाबूलाल सोरेन हेतु नेता प्रतिपक्ष एवं सुदेश भी रहे साथ- साथ तो दूसरी तरफ स्वर्गीय शिबू व रामदास पर अपार जन सहानुभूति *

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राउरकेला, घाटशिला विधानसभा उपचुनाव के लिए इंडिया गठबंधन के झारखंड मुक्ति मोर्चा प्रत्याशी सोमेश चंद्र सोरेन ने आज मंगलवार को अनुमंडल कार्यालय पहुंचकर नामांकन पत्र दाखिल किया , उनके साथ स्वंय मुख्यमंत्री झारखंड हेमंत सोरेन रहे । वहीं बाबूलाल सोरेन ने भी पर्चा भरा जहां उनके साथ पूर्व मुख्यमंत्री सह उनके पिता चंपाई सोरेन, नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी के अलावे विधायक सुदेश महतो उपस्थित थे ।

दिवंगत शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन के पुत्र समेश के नामांकन के दौरान स्वयं मुख्यमंत्री झारखंड हेमंत सोरेन की मौजूदगी उनके साथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश का साथ तो नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी का यहां चंपाई पुत्र के साथ होना समिकरण को किस दिशा में मजबूती रेखांकित करता है यह जगजाहिर है ।

चंपाई सोरेन के गांव सरायकेला -जमशेदपुर के सीमावर्ती इलाके में बसा जिलिगंगोडा के नजदीक घाटशिला विधानसभा क्षेत्र आता है । जहां कभी उनका जेएमएम राजनीति आन्दोलन कार्यकाल में केई दिग्गजों का कर्मभूमि रही वह इलाका आज राजनीतिक रणक्षेत्र भाजपा जेएमएम के बीच बना हुआ है । पूर्व मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष की उपस्थिति में नामांकन कार्यक्रम पूरी तरह से राजनीतिक कसरत का रिहर्सल अब साफ दिख रहा है, लोग यहां चुस्की भी ले रहे हैं । उधर दिवंगत गुरूजी पुत्र संप्रति मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जेएमएम उम्मीदवार समेश को चुनाव नामांकन कराते वक्त डटे रहना आदिवासी वोट बैंक पर आज जोरदार विश्वास भरा है । उन्हें देखने आये लोगों के चेहरे पर दिवंगत शिबू सोरेन एवं रामदास सोरेन के प्रति संयुक्त हमदर्दी यहां स्पष्ट परिलक्षित हो रही था ।

इधर दोनों पार्टियों में राजनीतिक वयानवाजी का दौर आरंभ हो चुकी है । पार्टी के प्रदेश महासचिव और मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने भारतीय जनता पार्टी पर हमला बोलते हुए कहा है कि जो पार्टी दो-दो मुख्यमंत्री सहित 40 स्टार प्रचारकों को इस चुनाव मैदान में उतारा है उसी से प्रमाणित हो गया है कि भाजपा किस तरह से विचलित है। उधर पार्टी प्रवक्ता प्रदीप सिन्हा ने सत्तारूढ़ जेएमएम-कांग्रेस पर पलटवार करते हुए कहा है कि राज्य में जिस तरह से गिरती कानून व्यवस्था है और सरकार के कामकाज से जनता त्रस्त है। जाहिर तौर पर इसे ध्यान में रखते हुए घाटशिला की जनता के मन में भी इस सरकार के प्रति आक्रोश है और यह आक्रोश वोट के रूप में दिखेगा।

उन्होंने चंपई सोरेन पर की गई टिप्पणी पर नाराजगी जताते हुए कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा में कोई रहे तो वह टाइगर हो और भाजपा में रहे तो बिल्ली यह बेहद ही हास्यास्पद बात है ।इस तरह से किसी का चरित्र हनन करना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि चंपई सोरेन में अभी भी वही तेज है और पूरे जोश खरोश के साथ वह अपने पुत्र के लिए चुनाव मैदान में उतरे हैं।

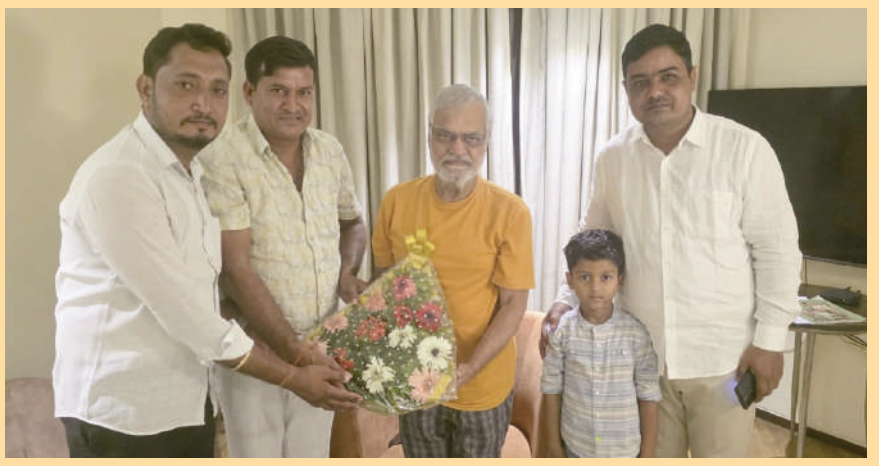

नगरागमन पर होटल गोलकुंडा में राजस्थान के पूर्व विधानसभा स्पीकर अध्यक्ष डॉ सी पी जोशी का भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर उपस्थित विकास शर्मा, आनंद कुमार, सुरेन्द्र सैनी,एवं अन्य। डा ०सीपी जोशी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के संगठन सृजन अभियान के तेलंगाना पर्यवेक्षक के तौर पर पधारे हैं।

फायर सेफ्टी को लेकर दीपावली से पहले जनता को किया जागरूक

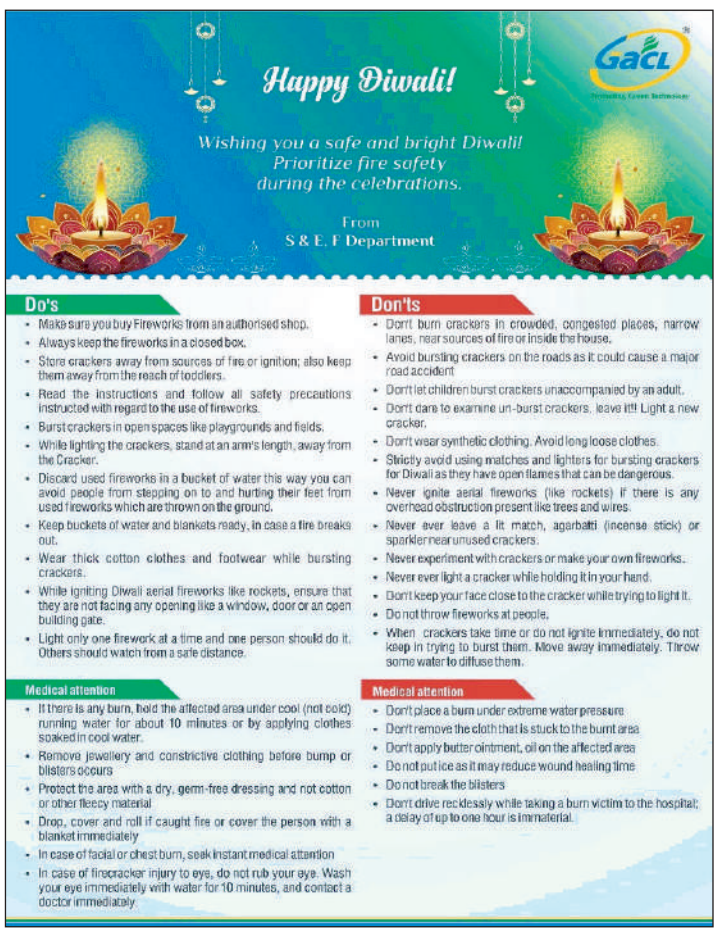

नवदीप सिंह

नई दिल्ली। 16/10/25 डीएलएफ टावर मोती नगर में फायर सेफ्टी को लेकर दीपावली से पहले जनता को जागरूक करने के लिए कार्यक्रम चलाया गया। FSAI टीम के लोगों ने दीपावली के लिए सुरक्षित सुझाव के पोस्टर देकर और उन्हें जागरूक करते हुए, किसी भी आपदा के दुरान किन नंबरों पर कॉल करना है पुलिस का नंबर 112 फायर 101 एंबुलेंस 102 डिजास्टर मैनेजमेंट का नंबर 1077 यह भी बताएं कार्यक्रम में आपदा मित्र स्वयंसेवक और नागरिक सुरक्षा के स्वयंसेवक ने भाग लिया।

एफएसएआई सदस्य-

1) श्री गौरव सिंह
2) श्री साहिल कपूर
3) सुश्री रीना साहू
4) श्री अमित सहरावत

सुश्री भावना सैन (दिल्ली चैप्टर एक्जीक्यूटिव, एफएसएआई)।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023